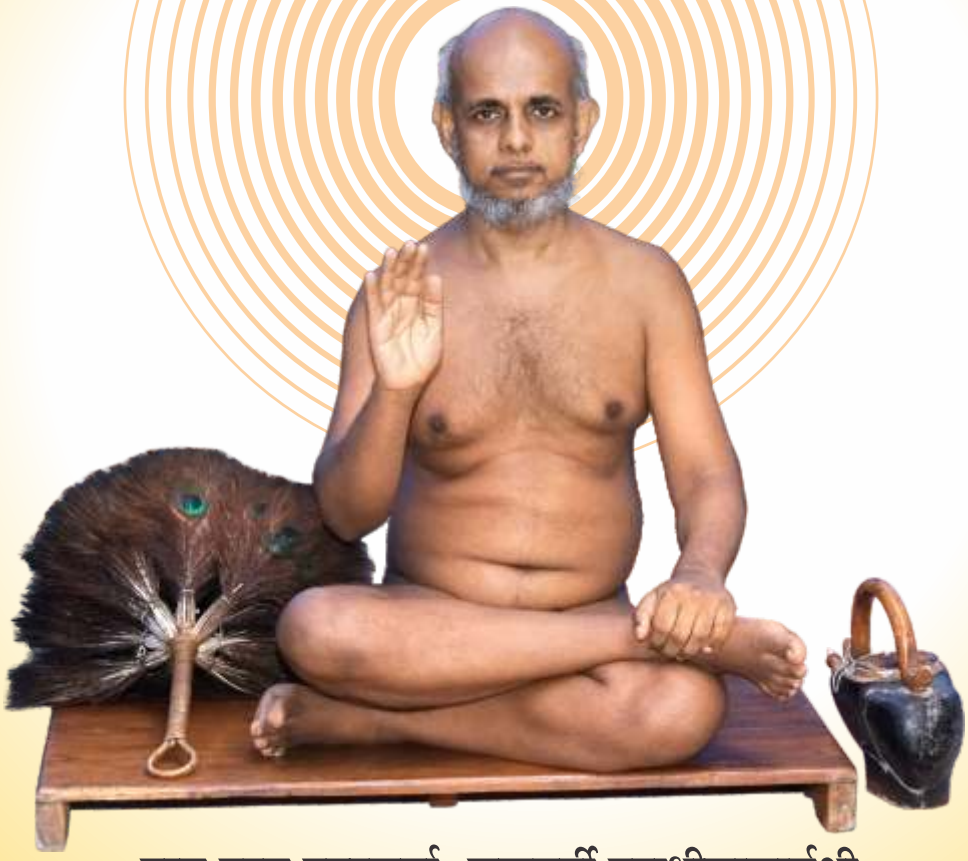

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

प्राकृत रचना सौरभ

लेखक
डॉक्टर कमलचन्द जी सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी, श्री महावीर जी (राजस्थान)

(परम्परानायक)

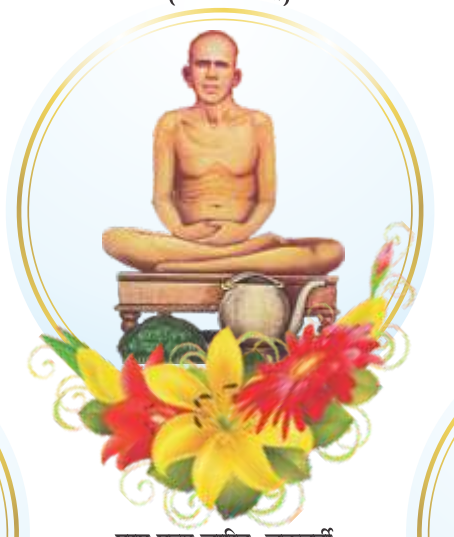

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

प्राकृत रचना सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

राजस्थान

प्राकृत रचना सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
(सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र)
सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

☐ प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
जैनविद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी,
श्रीमहावीरजी–322220 (राजस्थान)

☐ प्राप्ति स्थान

1. **जैनविद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी**
2. **अपभ्रंश साहित्य अकादमी**
   दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी,
   सवाई रामसिंह रोड, जयपुर–302004

☐ प्रथम बार, 1994, 1100

☐ मूल्य

पुस्तकालय संस्करण 75.00
विद्यार्थी संस्करण 50.00

☐ मुद्रक

मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस
6–7, गीता भवन, आदर्श नगर,
जयपुर–302004

स्वर्गीय डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये,

स्वर्गीय डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

एवं

स्वर्गीय पण्डित बेचरदास दोशी

को

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
	आरंभिक		
	प्रकाशकीय		
	प्रारंभिक		
पाठ 1	सर्वनाम		1
	उत्तम पुरुष एकवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 2	सर्वनाम		2
	मध्यम पुरुष एकवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 3	सर्वनाम		3
	अन्य पुरुष एकवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 4	सर्वनाम–एकवचन		5
	आकारान्त आदि क्रियाएं	वर्तमानकाल	
पाठ 5	सर्वनाम		7
	उत्तम पुरुष बहुवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 6	सर्वनाम		9
	मध्यम पुरुष बहुवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 7	सर्वनाम		11
	अन्य पुरुष बहुवचन	वर्तमानकाल	
पाठ 8	सर्वनाम–बहुवचन		13
	आकारान्त आदि क्रियाएं	वर्तमानकाल	
पाठ 9	सर्वनाम		16
	उत्तम पुरुष एकवचन	विधि एवं आज्ञा	
पाठ 10	सर्वनाम		18
	मध्यम पुरुष एकवचन	विधि एवं आज्ञा	
पाठ 11	सर्वनाम		20
	अन्य पुरुष एकवचन	विधि एवं आज्ञा	
पाठ 12	सर्वनाम–एकवचन		22
	आकारान्त आदि क्रियाएं	विधि एवं आज्ञा	

पाठ सं.	विषय		पृ. सं.
पाठ 13	सर्वनाम		24
	उत्तम पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 14	सर्वनाम		25
	मध्यम पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 15	सर्वनाम		27
	अन्य पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 16	सर्वनाम–बहुवचन		29
	आकारान्त आदि क्रियाएं	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 17	सर्वनाम–एकवचन व बहुवचन		32
	उत्तम पुरुष **मध्यम पुरुष** **अन्य पुरुष**	**भूतकाल**	
पाठ 18	सर्वनाम–एकवचन व बहुवचन		34
	आकारान्त आदि क्रियाएं	**भूतकाल**	
पाठ 19	सर्वनाम		36
	उत्तम पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 20	सर्वनाम		38
	मध्यम पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 21	सर्वनाम		40
	अन्य पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 22	सर्वनाम–एकवचन		42
	आकारान्त आदि क्रियाएं	**भविष्यत्काल**	
पाठ 23	सर्वनाम		44
	उत्तम पुरुष बहुवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 24	सर्वनाम		46
	मध्यम पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 25	सर्वनाम		48
	अन्य पुरुष बहुवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 26	सर्वनाम–बहुवचन		50
	आकारान्त आदि क्रियाएं	**भविष्यत्काल**	

पाठ सं.	विषय		पृ. सं.
पाठ 27	अभ्यास अकर्मक क्रियाएं		53
पाठ 28	सम्बन्धक भूत कृदन्त		56
पाठ 29	हेत्वर्थक कृदन्त		59
पाठ 30	अकारान्त संज्ञा शब्द अकर्मक क्रियाएं	पुल्लिग	61
पाठ 31	अकारान्त संज्ञा प्रथमा एकवचन	पुल्लिग	63
पाठ 32	अकारान्त संज्ञा प्रथमा बहुवचन	पुल्लिग	65
पाठ 33	अभ्यास		67
पाठ 34	अकारान्त संज्ञा शब्द अकर्मक क्रियाएं	नपुंसकलिंग	69
पाठ 35	अकारान्त संज्ञा प्रथमा एकवचन	नपुंसकलिंग	71
पाठ 36	अकारान्त संज्ञा प्रथमा बहुवचन	नपुंसकलिंग	73
पाठ 37	अभ्यास		76
पाठ 38	आकारान्त संज्ञा शब्द अकर्मक क्रियाएं	स्त्रीलिंग	77
पाठ 39	आकारान्त संज्ञा प्रथमा एकवचन	स्त्रीलिंग	79
पाठ 40	आकारान्त संज्ञा प्रथमा बहुवचन	स्त्रीलिंग	81
पाठ 41	अभ्यास		84
पाठ 42	भूतकालिक कृदन्त	कर्तृवाच्य	85
पाठ 43	वर्तमान कृदन्त		89
पाठ 44	अभ्यास		95

पाठ सं.	विषय		पृ सं.
पाठ 45	भूतकालिक कृदन्त	भाववाच्य	96
पाठ 46	अभ्यास		99
पाठ 47	अकर्मक क्रियाएं	भाववाच्य	100
पाठ 48	अभ्यास		107
पाठ 49	विधि कृदन्त	भाववाच्य	108
पाठ 50	अभ्यास		112
पाठ 51	संज्ञा द्वितीया एकवचन सर्वनाम द्वितीया एकवचन	पुं., नपुं., स्त्री.	113
पाठ 52	संज्ञा द्वितीया बहुवचन सर्वनाम द्वितीया बहुवचन	पुं., नपुं., स्त्री.	116
पाठ 53	सकर्मक क्रियाएं अभ्यास		119
पाठ 54	सकर्मक क्रियाएं	कर्तृवाच्य कर्मवाच्य	121
पाठ 55	इकारान्त संज्ञा शब्द उकारान्त संज्ञा शब्द सकर्मक क्रियाएं	पुल्लिग पुल्लिग	127
पाठ 56	अभ्यास		129
पाठ 57	भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाच्य	130
पाठ 58	अभ्यास		133
पाठ 59	इकारान्त संज्ञा शब्द उकारान्त संज्ञा शब्द	पुं., नपुं., स्त्री. पुं., नपुं., स्त्री	134
पाठ 60	सकर्मक क्रियाएं		136
पाठ 61	विविध संज्ञाएं प्रथमा, तृतीया एकवचन, बहुवचन		137

पाठ सं.	विषय		पृ. सं.
पाठ 62	विधि कृदन्त	कर्मवाच्य	140
पाठ 63	अभ्यास		144
पाठ 64	विविध कृदन्त द्वितीया सहित		145
पाठ 65	अभ्यास		149
पाठ 66	संज्ञा, सर्वनाम चतुर्थी-षष्ठी एकवचन		150
पाठ 67	संज्ञा चतुर्थी-षष्ठी एकवचन		153
पाठ 68	संज्ञा-सर्वनाम चतुर्थी-षष्ठी बहुवचन		155
पाठ 69	संज्ञा चतुर्थी-षष्ठी बहुवचन		158
पाठ 70	अभ्यास		159
पाठ 71	संज्ञा-सर्वनाम पंचमी एकवचन	पुं., नपुं., स्त्री.	160
पाठ 72	संज्ञा पंचमी एकवचन	पुं., नपुं., स्त्री.	163
पाठ 73	संज्ञा पंचमी बहुवचन	पुं., नपुं.	164
पाठ 74	संज्ञा पंचमी बहुवचन सर्वनाम पंचमी बहुवचन	स्त्रीलिंग	166
पाठ 75	संज्ञा सप्तमी एकवचन सर्वनाम सप्तमी एकवचन	पुं., नपुं., स्त्री.	168

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
पाठ 76	संज्ञा	पुं., नपुं., स्त्री.	170
	सप्तमी बहुवचन		
	सर्वनाम		
	सप्तमी बहुवचन		
पाठ 77	संज्ञा	पुं., नपुं., स्त्री.	171
	सम्बोधन एक-बहुवचन		
	अभ्यास		
पाठ 78	प्रेरणार्थक प्रत्यय		173
पाठ 79	स्वार्थिक प्रत्यय		178
पाठ 80	विविध सर्वनाम		179
	अभ्यास		
पाठ 81	अव्यय		180
पाठ 82	क्रिया-रूप व उनके प्रत्यय		181
पाठ 83	क्रिया-रूप व उनके प्रत्यय		183
पाठ 84	विविध संज्ञा-रूप	पुं., नपुं., स्त्री.	184
	विविध सर्वनाम-रूप	पुं., नपुं, स्त्री.	191
	संख्यावाची रूप	पुं., नपुं, स्त्री.	205
पाठ 85	संज्ञा-रूपों के प्रत्यय	पुं., नपुं., स्त्री.	209
परिशिष्ट-1	संज्ञा-कोश		224
परिशिष्ट-2	क्रिया-कोश		240
शुद्धि पत्र			

आरम्भिक

'प्राकृत रचना सौरभ' पाठकों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह सर्वविदित है कि तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा प्राकृत में उपदेश देकर सामान्यजनों के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। भाषा संप्रेषण का सबल माध्यम होती है। उसका जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जीवन के उच्चतम मूल्यों को जनभाषा में प्रस्तुत करना प्रजातान्त्रिक दृष्टि है।

जनभाषा प्रवाहशील होती है। प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश भाषा के रूप में विकसित होती हुई प्रादेशिक भाषाओं एवं हिन्दी का स्रोत बनी। यह निर्विवाद है कि अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन को सशक्त करने के लिए प्राकृत का अध्ययन-अध्यापन अत्यन्त आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर डॉ. सोगाणी ने 'प्राकृत रचना सौरभ' अपभ्रंश रचना सौरभ के पैटर्न पर लिखी है। उनकी 'अपभ्रंश रचना सौरभ' का सर्वत्र स्वागत हुआ है। आशा है 'प्राकृत रचना सौरभ' के प्रकाशन से प्राकृत भाषा के ज्ञान के साथ-साथ प्राकृत-अपभ्रंश भाषा का तुलनात्मक ज्ञान भी हो सकेगा।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना सन् 1988 में की गई। हमें यह लिखते हुए गर्व है कि प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी के सतत सहयोग से डॉ. सोगाणी ने नियमित कक्षाओं एवं पत्राचार की स्वनिर्मित योजना के माध्यम से अपभ्रंश व प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन के द्वार खोलने का एक अनूठा कार्य किया है। अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम में 'अपभ्रंश' का अध्यापन किया जाता है और अपभ्रंश डिप्लोमा में अपभ्रंश की आधारभूत भाषा 'प्राकृत' का। 'प्राकृत रचना सौरभ' जहां अपभ्रंश के अध्ययनार्थियों के लिए उपयोगी है वहाँ प्राकृत को स्वतन्त्ररूप से सीखने के लिए भी प्रयोग की जा सकती है।

किसी भी भाषा को सीखने, जानने, समझने के लिए उसकी व्याकरण व रचना-प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक है। 'प्राकृत रचना सौरभ' इसी क्रम का एक प्रकाशन है। इसकी शैली प्रणाली एवं प्रस्तुतिकरण अत्यन्त सरल एवं आधुनिक है, जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। शिक्षक के अभाव में स्वयं पढ़कर भी विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो

सकते हैं। इस अर्थ में यह (प्राकृत रचना सौरभ) प्राकृत-शिक्षक सिद्ध होगी। इसके लिए हम डॉ. सोगाणी के अत्यन्त आभारी हैं। पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के कार्यकर्त्ता एवं मदरलैंड प्रिन्टिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

कपूरचन्द पाटनी
मंत्री

नरेशकुमार सेठी
अध्यक्ष

प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा भारतीय आर्य भाषा परिवार की एक सुसमृद्ध लोक भाषा रही है। वैदिक काल से ही यह लोक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। इसका प्रकाशित अप्रकाशित एवं लुप्त साहित्य इसकी गौरवमयी गाथा कहने में समर्थ है। भारतीय लोक-जीवन के बहुआयामी पक्ष, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परम्पराएँ प्राकृत साहित्य में निहित हैं। महावीर-युग और उसके बाद विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ, जिनमें से तीन प्रकार की प्राकृतों के नाम साहित्य-क्षेत्र में गौरव के साथ लिये जाते हैं। वे हैं—अर्धमागधी, शौरसेनी और महाराष्ट्री। जैन आगमसाहित्य एवं काव्य-साहित्य इन्हीं तीन प्राकृतों में गुम्फित है। महावीर की दार्शनिक-आध्यात्मिक परम्परा अर्धमागधी एवं शौरसेनी प्राकृत में रचित है और काव्यों की भाषा सामान्यतः महाराष्ट्री कही गई है। इन्हीं तीनों प्राकृतों का भारत के सांस्कृतिक इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। अतः इनका सीखना-सिखाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर 'प्राकृत रचना सौरभ' पुस्तक की रचना की गई है।

इस पुस्तक में तीनों प्रकार की प्राकृतों के प्रत्ययों को सिखाने का प्रयास किया गया है। हेमचन्द्राचार्य की व्याकरण के अनुसार महाराष्ट्री और शौरसेनी के प्रत्ययों का पाठों के लिखने में प्रयोग किया गया है। अर्धमागधी के प्रत्ययों का यदि कहीं भेद है तो उसे पाद-टिप्पण में स्पष्ट कर दिया गया है। इस तरह से पाठक तीनों प्राकृतों के प्रत्ययों को समझ सकेगा।

पुस्तक के पाठों को एक ऐसे क्रम में रखा गया है जिससे पाठक सहज-सुचारु रूप से प्राकृत भाषा के व्याकरण को सीख सकेंगे और प्राकृत में रचना करने का अभ्यास भी कर सकेंगे। प्राकृत में वाक्य-रचना करने से ही प्राकृत व्याकरण सिखाने का प्रयास किया गया है। पाठ लिखने की जो पद्धति अपभ्रंश रचना सौरभ (प्रकाशित) में अपनाई गई है वही प्राकृत रचना सौरभ में प्रयोग की गई है।

शौरसेनी और महाराष्ट्री प्राकृत के लिए हेमचन्द्राचार्य के प्राकृत-व्याकरण के सूत्रों का आधार प्रस्तुत पुस्तक के पाठों में लिया गया है। अर्धमागधी प्राकृत के लिए घाटगे की 'Introduction to Ardha-Magadhi' एवं पिशल की 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' पुस्तकों का आधार लिया गया है। इनके सन्दर्भों को पाद-टिप्पण में दे दिया गया है। इन सभी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए जैनविद्या संस्थान समिति का आभारी हूँ अकादमी के कार्यकर्ताओं, जिनका इस पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग रहा, के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी सोगाणी ने इस पुस्तक को लिखने में जो सहयोग दिया उसके लिए मैं आभारी हूँ।

मुद्रण हेतु 'मदरलैण्ड प्रिन्टिंग प्रेस' भी धन्यवादार्ह है।

दीपावली
वीर निर्वाण दिवस
वीर निर्वाण संवत् 2521

कमलचन्द सोगाणी
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति

प्रारम्भिक

प्राकृत भाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सामान्य जानकारी आवश्यक है—

प्राकृत की वर्णमाला

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ ।

व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ ।
च, छ, ज, झ, ञ ।
ट, ठ, ड, ढ, ण ।
त, थ, द, ध, न ।
प, फ, ब, भ, म ।
य, र, ल, व ।
स, ह ।
ं, ँ ।

यहां ध्यान देने योग्य है कि असंयुक्त अवस्था में ङ और ञ का प्रयोग प्राकृत में नहीं पाया जाता है। हेमचन्द्र कृत अपभ्रंश व्याकरण में ङ और ञ का संयुक्त प्रयोग उपलब्ध है। न का भी असंयुक्त और संयुक्त अवस्था में प्रयोग देखा जाता है। ङ, ञ, न के स्थान पर संयुक्त अवस्था में अनुस्वार भी विकल्प से होता है। शब्द के अन्त में स्वररहित व्यंजन नहीं होते हैं।

वचन

प्राकृत भाषा में दो ही वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।

लिंग

प्राकृत भाषा में तीन लिंग होते हैं—पुल्लिग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग।

पुरुष

प्राकृत भाषा में तीन पुरुष होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।

कारक

प्राकृत भाषा में आठ कारक होते हैं—

विभक्ति	कारक	कारक चिह्न (हिन्दी के आधार से)
1. प्रथमा	कर्त्ता	ने
2. द्वितीया	कर्म	को
3. तृतीया	करण	से, द्वारा आदि
4. चतुर्थी	संप्रदान	के लिए
5. पंचमी	अपादान	से
6. षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की
7. सप्तमी	अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, भो

प्राकृत में चतुर्थी और षष्ठी विभक्ति के लिए समान प्रत्यय हैं।

क्रिया

प्राकृत भाषा में दो प्रकार की क्रियाएँ होती हैं—अकर्मक और सकर्मक।

काल

प्राकृत भाषा में सामान्यतः चार प्रकार के काल वर्णित हैं—

1. वर्तमानकाल
2. भूतकाल
3. भविष्यत्काल
4. विधि एवं आज्ञा

प्राकृत भाषा में भूतकाल को व्यक्त करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग बहुलता से किया गया है।

शब्द

प्राकृत में चार प्रकार के शब्द पाए जाते हैं—

1. अकारान्त
2. आकारान्त
3. इकारान्त (इ, ई)
4. उकारान्त (उ, ऊ)

———

पाठ 1

अहं/हं/अम्मि=मैं

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

वर्तमानकाल

अहं **हं** **अम्मि**	हसमि/हसामि/हसेमि	= मैं हँसता हूँ/हँसती हूँ।
अहं **हं** **अम्मि**	णच्चमि/णच्चामि/णच्चेमि	= मैं नाचता हूँ/नाचती हूँ।
अहं **हं** **अम्मि**	लुक्कमि/लुक्कामि/लुक्केमि	= मैं छिपता हूँ/छिपती हूँ।

---

1. **अहं/हं/अम्मि**=मैं, उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन में **'मि'** प्रत्यय क्रिया में लगता है। **'मि'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ'** और **'ए'** भी हो जाता है।
3. कभी-कभी हसमि, हसामि आदि के स्थान पर **हसं, णच्चं** आदि रूप भी बनते हैं, (हे. प्रा. व्या. 3-141)।
4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं। अकर्मक क्रिया वह होती है जिसका कोई कर्म नहीं होता और जिसका प्रभाव कर्ता पर ही पड़ता है। 'मैं हँसता हूँ'—इसमें हँसने का प्रभाव मैं' पर ही पड़ता है, अतः हँसने की क्रिया का कोई कर्म नहीं है।
5. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता **अहं/हं/अम्मि** के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ **अहं/हं/अम्मि** उत्तम पुरुष एकवचन है तो क्रियाएँ भी उत्तम पुरुष एकवचन में हैं।

पाठ 2

तुमं/तुं/तुह=तुम

क्रियाएँ

हस=हँसना, **सय**=सोना, **णच्च**=नाचना
रूस=रूसना, **लुक्क**=छिपना, **जग्ग**=जागना
जीव=जीना

वर्तमानकाल

तुमं / तुं / तुह	हससि/हससे/हसेसि	= तुम हँसते हो/हँसती हो।
तुमं / तुं / तुह	णच्चसि/णच्चसे/णच्चेसि	= तुम नाचते हो/नाचती हो।
तुमं / तुं / तुह	लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि	= तुम छिपते हो/छिपती हो।

---

1. (i) **तुमं/तुं/तुह**=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
   (ii) **अर्द्धमागधी** में **तुमं, तुं, तुमे** का प्रयोग होता है, (पिशल प्रा.भा.व्या. पृष्ठ 617)।
2. (i) वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन में **'सि'**, **'से'** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। **'सि'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है।
   (ii) यदि क्रिया के अन्त में **'अ'** नहीं हो तो **'से'** प्रत्यय नहीं लगता है, (देखें पाठ 4)।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता **तुमं/तुं/तुह** के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ **तुमं/तुं/तुह** मध्यम पुरुष एकवचन है तो क्रियाएं भी मध्यम पुरुष ——— ·

पाठ 3

सो=वह (पुरुष), **सा**=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

वर्तमानकाल

सो	हसइ/हसए/हसदि/हसदे/हसेइ/हसेदि	=वह हँसता है ।
सा	हसइ/हसए/हसदि/हसदे/हसेइ/हसेदि	=वह हँसती है ।
सो	णच्चइ/णच्चए/णच्चदि/णच्चदे/णच्चेइ/णच्चेदि	=वह नाचता है ।
सा	णच्चइ/णच्चए/णच्चदि/णच्चदे/णच्चेइ/णच्चेदि	=वह नाचती है ।
सो	लुक्कइ/लुक्कए/लुक्कदि/लुक्कदे/लुक्केइ/लुक्केदि	=वह छिपता है ।
सा	लुक्कइ/लुक्कए/लुक्कदि/लुक्कदे/लुक्केइ/लुक्केदि	=वह छिपती है ।

---

1. (i) **सो**=वह (पुरुष), **सा**=वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

   (ii) **स**=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है ।

   (iii) **अर्द्धमागधी** में '**से**'=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है, (पिशल, पृष्ठ 622)।

2. (i) वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन में **इ, ए, दि** और **दे** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं । '**इ**' और '**दि**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है ।

   (ii) '**ए**' और '**दे**' प्रत्यय वर्तमानकाल की **अकारान्त क्रियाओं** में ही लगते हैं । आकारान्त, ओकारान्त, उकारान्त आदि क्रियाओं में '**ए**' और '**दे**' प्रत्यय नहीं

लगते हैं। जैसे, **ठा**=ठहरना, **हो**=होना, हु=होना, आदि क्रियाओं में **ए** और **दे** प्रत्यय नहीं लगेंगे (देखें पाठ–4)।

(iii) वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन में **'ति'** प्रत्यय का प्रयोग भी पाया जाता है—हसति/हसेति/णच्चति/णच्चेति/लुक्कति/लुक्केति।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

पाठ 4

अहं/हं/अम्मि=मैं,
तुमं/तुं/तुह=तुम

सो=वह (पुरुष);
सा=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना, ण्हा=नहाना, हो=होना

वर्तमानकाल

अहं हं अम्मि	ठामि	=मैं ठहरता हूँ/ठहरती हूँ।
अहं हं अम्मि	होमि	=मैं होता हूँ/होती हूँ।
तुमं तुं तुह	ठासि	=तुम ठहरते हो/ठहरती हो।
तुमं तुं तुह	होसि	=तुम होते हो/होती हो।
सो	ठाइ/ठादि	=वह ठहरता है।
सा	ठाइ/ठादि	=वह ठहरती है।
सो	होइ/होदि	=वह होता है।
सा	होइ/होदि	=वह होती है।

1. **अहं/हं/अम्मि**=मैं, उत्तम पुरुष एकवचन
   तुमं/तुं/तुह=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन
   सो=वह (पुरुष)
   सा=वह (स्त्री) } अन्य पुरुष एकवचन
   } पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन।

2. (i) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन में केवल **'सि'** प्रत्यय ही लगता है, **'से'** नहीं।

   (ii) इसी प्रकार अन्य पुरुष एकवचन में केवल **'इ'** व **'दि'** प्रत्यय ही लगते हैं, **'ए'** और **'दे'** प्रत्यय नहीं।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

पाठ 5

अम्हे/वयं= हम दोनों/हम सब

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

वर्तमानकाल

अम्हे	हसमो/हसामो/हसिमो/हसेमो	=	हम दोनों हँसते हैं/हँसती हैं ।
वयं	हसमु/हसामु/हसिमु/हसेमु		हम सब हँसते हैं/हँसती हैं ।
	हसम/हसाम/हसिम/हसेम		
अम्हे	णच्चमो/णच्चामो/णच्चिमो/णच्चेमो	=	हम दोनों नाचते हैं/नाचती हैं ।
वयं	णच्चमु/णच्चामु/णच्चिमु/णच्चेमु		हम सब नाचते हैं/नाचती हैं ।
	णच्चम/णच्चाम/णच्चिम/णच्चेम		
अम्हे	लुक्कमो/लुक्कामो/लुक्किमो/लुक्केमो	=	हम दोनों छिपते हैं/छिपती हैं ।
वयं	लुक्कमु/लुक्कामु/लुक्किमु/लुक्केमु		हम सब छिपते हैं/छिपती हैं ।
	लुक्कम/लुक्काम/लुक्किम/लुक्केम		

---

1. **अम्हे/वयं** = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

2. वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मो, मु, म' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। 'मो, मु, म' प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'आ', 'इ' और 'ए' भी हो जाता है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्त्ता उत्तम पुरुष बहुवचन में है। अत क्रिया भी उत्तम पुरुष बहुवचन की ही लगी है।

———

पाठ 6

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे=तुम दोनों/तुम सब

क्रियाएँ

हस=हँसना,	सय=सोना,	णच्च=नाचना
रूस=रूसना,	लुक्क=छिपना,	जग्ग=जागना
जीव=जीना		

वर्तमानकाल

तुब्भे तुम्हे तुज्झे	हसह/हसित्था/हसध हसेह/हसेइत्था/हसेध	=	तुम दोनों हँसते हो/हँसती हो । तुम सब हँसते हो/हँसती हो ।
तुब्भे तुम्हे तुज्झे	णच्चह/णच्चित्था/णच्चध णच्चेह/णच्चेइत्था/णच्चेध	=	तुम दोनों नाचते हो/नाचती हो । तुम सब नाचते हो/नाचती हो ।
तुब्भे तुम्हे तुज्झे	लुक्कह/लुक्कित्था/लुक्कध लुक्केह/लुक्केइत्था/लुक्केध	=	तुम दोनों छिपते हो/छिपती हो । तुम सब छिपते हो/छिपती हो ।

---

1. तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुष वाचक सर्वनाम) ।

2. वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन में **ह, इत्था** और **ध** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं और इनके लगने पर अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं । यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष बहुवचन में है अतः क्रिया भी मध्यम पुरुष बहुवचन की लगी है ।

———

पाठ 7

ते=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीव		

वर्तमानकाल

ते	हसन्ति/हसन्ते/हसिरे/हसेन्ति	=	वे दोनों हँसते हैं/ वे सब हँसते हैं ।
ता/ताओ/ताउ	हसन्ति/हसन्ते/हसिरे/हसेन्ति	=	वे दोनों हँसती हैं/ वे सब हँसती हैं ।
ते	णच्चन्ति/णच्चन्ते/णच्चिरे/णच्चेन्ति	=	वे दोनों नाचते हैं/ वे सब नाचते हैं ।
ता/ताओ/ताउ	णच्चन्ति/णच्चन्ते/णच्चिरे/णच्चेन्ति	=	वे दोनों नाचती हैं/ वे सब नाचती हैं ।
ते	लुक्कन्ति/लुक्कन्ते/लुक्किरे/लुक्केन्ति	=	वे दोनों छिपते हैं/ वे सब छिपते हैं ।
ता/ताओ/ताउ	लुक्कन्ति/लुक्कन्ते/लुक्किरे/लुक्केन्ति	=	वे दोनों छिपती हैं/ वे सब छिपती हैं ।

---

1. **ते**=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन (पुरुष वाचक सर्वनाम) ।

2. वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन में **'न्ति'**, **'न्ते'**, **'इरे'** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। **'न्ति'** प्रत्यय लगने पर अन्त्य **'अ'** का 'ए' भी हो जाता है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्ता अन्य पुरुष बहुवचन में है अतः क्रिया भी अन्य पुरुष बहुवचन की ही लगी है।

पाठ 8

अम्हे/वयं=हम दोनों/हम सब　　ते=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे=तुम दोनों/तुम सब　　**ता/ताओ/ताउ**=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएं

ठा=ठहरना,　　**ण्हा**=नहाना,　　**हो**=होना

वर्तमानकाल

अम्हे, **वयं** } ठामो/ठामु/ठाम = हम दोनों ठहरते हैं/ठहरती हैं । हम सब ठहरते हैं/ठहरती हैं ।

अम्हे, **वयं** } होमो/होमु/होम = हम दोनों होते हैं/होती हैं । हम सब होते हैं/होती हैं ।

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } ठाह/ठाइत्था/ठाध = तुम दोनों ठहरते हो/ठहरती हो । तुम सब ठहरते हो/ठहरती हो ।

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } होह/होइत्था/होध = तुम दोनों होते हो/होती हो । तुम सब होते हो/होती हो ।

ते　　ठान्ति→ठन्ति/ठान्ते→ठन्ते/ठाइरे=वे दोनों ठहरते हैं/वे सब ठहरते हैं ।
(नियम चार देखें)

ता/ताओ/ताउ ठान्ति→ठन्ति/ठान्ते→ठन्ते/ठाइरे=वे दोनों ठहरती हैं/वे सब ठहरती हैं ।

ते	होन्ति/होन्ते/होइरे	=वे दोनों होते हैं/वे सब होते हैं ।
ता/ताश्रो/ताउ	होन्ति/होन्ते/होइरे	=वे दोनों होती हैं/वे सब होती हैं ।

---

1. **अम्हे**, **वयं** } =हम दोनों/हम सब — उत्तम पुरुष बहुवचन

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } =तुम दोनों/तुम सब — मध्यम पुरुष बहुवचन

ते =वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता/ताश्रो/ताउ =वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन

} पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं । इनमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं ।

4. संयुक्ताक्षर के पहले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है, जैसे—ठान्ति→ठन्ति ।

प्राकृत में **अ, इ, उ,** ए और **ओ** स्वर ह्रस्व होते हैं और **आ, ई, ऊ** दीर्घ ।

5. **वर्तमानकाल के प्रत्यय** (पाठ 1 से 8 तक)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मि	मो, मु म
मध्यम पुरुष	सि, से	ह, इत्था, ध
अन्य पुरुष	इ, ए, दि, दे	न्ति, न्ते, इरे

6. (i) वर्तमानकाल में अकारान्त क्रियाओं में तीनों पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) के दोनों वचनों (एकवचन व बहुवचन) में **'ज्ज'**, **'ज्जा'** प्रत्यय भी लगाये जाते हैं । **'ज्ज'**, **'ज्जा'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है जैसे—
हस+ज्ज=हसेज्ज, हस+ज्जा=हसेज्जा ।

अहं/हं/अम्मि	हसेज्ज/हसेज्जा	=मैं हँसता हूँ/हँसती हूँ ।
अम्हे/वयं		=हम हँसते हैं/हँसती हैं ।
तुमं/तुं/तुह		=तुम हँसते हो/हँसती हो ।
तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे		=तुम सब हँसते हो/हँसती हो ।
सो		=वह हँसता है ।
सा		=वह हँसती है ।
ते		=वे (सब) हँसते हैं ।
ता/ताओ/ताउ		=वे (सब) हँसती हैं ।

(ii) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में भी वर्तमानकाल के तीनों पुरुषों के दोनों वचनों में **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय लगाये जाते हैं—

हो+ज्ज, ज्जा=होज्ज/होज्जा
ण्हा+ज्ज,ज्जा =ण्हाज्ज/ण्हाज्जा
ठा+ज्ज, ज्जा=ठाज्ज/ठाज्जा

(iii) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में '**अ**' विकरण जोड़कर भी **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय जोड़े जाते हैं । इनके जोड़ने पर वर्तमानकाल में अन्त्य '**अ**' का 'ए' हो जाता है—

ठा+अ=ठाअ→ठाएज्ज/ठाएज्जा
हो+अ=होअ→होएज्ज/होएज्जा
ण्हा+अ=ण्हाअ→ण्हाएज्ज/ण्हाएज्जा

पाठ 9

अहं/हं/अम्मि = मैं

क्रियाएँ

हस = हँसना,	सय = सोना,	णच्च = नाचना
रूस = रूसना,	लुक्क = छिपना,	जग्ग = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

अहं / हं / अम्मि	हसमु/हसामु/हसिमु/हसेमु	= मैं हँसूं।
अहं / हं / अम्मि	णच्चमु/णच्चामु/णच्चिमु/णच्चेमु	= मैं नाचूं।
अहं / हं / अम्मि	लुक्कमु/लुक्कामु/लुक्किमु/लुक्केमु	= मैं छिपूं।

---

1. अहं/हं/अम्मि = मैं   उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

2. जब किसी कार्य के लिए प्रार्थना की जाती है अथवा आज्ञा एवं उपदेश दिया जाता है तो इन भावों को प्रकट करने के लिए विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय क्रिया में लगाये जाते हैं।

3. (i) विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष एकवचन में **'मु'** प्रत्यय क्रिया में लगता है। **'मु'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ'**, **'इ'** और 'ए' भी हो जाता है।

(ii) **अर्द्धमागधी** में **विधि** के उत्तम पुरुष एकवचन के लिए **'एज्जा'** और **'एज्जामि'** प्रत्यय लगाकर 'हस' के रूप बनेंगे **'हसेज्जा'** **'हसेज्जामि'** (पिशल, पृष्ठ 680)।

पाठ 10

तुमं/तुं/तुह=तुम

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

विधि एवं आज्ञा

तुमं **तुं** **तुह**	हसहि/हससु/हसधि/हस हसेहि/हसेसु/हसेधि हसेज्जसु/हसेज्जहि/हसेज्जे	= तुम हँसो ।
तुमं **तुं** **तुह**	णच्चहि/णच्चसु/णच्चधि/णच्च णच्चेहि/णच्चेसु/णच्चेधि णच्चेज्जसु/णच्चेज्जहि/णच्चेज्जे	= तुम नाचो ।
तुमं **तुं** **तुह**	लुक्कहि/लुक्कसु/लुक्कधि/लुक्क लुक्केहि/लुक्केसु/लुक्केधि लुक्केज्जसु/लुक्केज्जहि/लुक्केज्जे	= तुम छिपो ।

---

1. (i) **तुमं/तुं/तुह**=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

   (ii) **अर्द्धमागधी** में **तुमं**, तं, **तुमे** का प्रयोग होता है, (पिशल, प्रा.भा.व्या. पृष्ठ 617)।

2. (i) विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष एकवचन में **हि, सु, ०, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे** तथा **धि** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं **और हि, सु, और धि** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है । इज्जसु, इज्जहि तथा इज्जे प्रत्यय लगने पर **अ + इ = ए** हो जाता है ।

   (ii) शून्य प्रत्यय (०) तथा इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय अकारान्त क्रियाओं में ही लगते हैं । आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में उपर्युक्त प्रत्यय नहीं लगते ।

(iii) **अर्द्धमागधी में विधि** के मध्यम पुरुष एकवचन के लिए एज्जा, एज्जासि, एज्जाहि प्रत्यय लगकर 'हस' के रूप बनेंगे—हसेज्जा, हसेज्जासि, हसेज्जाहि (पिशल, पृष्ठ 681, 682)।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

———

पाठ 11

सो=वह (पुरुष), सा=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	सय=सोना,	णच्च=नाचना
रूस=रूसना,	लुक्क=छिपना,	जग्ग=जागना
जीव=जीना		

विधि एवं आज्ञा

सो	हसउ/हसेउ/हसदु/हसेदु	=वह हँसे ।
सा	हसउ/हसेउ/हसदु/हसेदु	=वह हँसे ।
सो	णच्चउ/णच्चेउ/णच्चदु/णच्चेदु	=वह नाचे ।
सा	णच्चउ/णच्चेउ/णच्चदु/णच्चेदु	=वह नाचे ।
सो	लुक्कउ/लुक्केउ/लुक्कदु/लुक्केदु	=वह छिपे ।
सा	लुक्कउ/लुक्केउ/लुक्कदु/लुक्केदु	=वह छिपे ।

---

1. (i) सो=वह (पुरुष), सा=वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

   (ii) स=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है ।

   (iii) अर्द्धमागधी में 'से'=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है, (पिशल, पृष्ठ 622) ।

2. (i) विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष एकवचन में 'उ' और 'दु' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं ।

(ii) **अर्द्धमागधी में विधि** के अन्य पुरुष एकवचन के लिए **'ए', 'एज्जा'** प्रत्यय लगाकर **'हस'** के रूप में बनेंगे—हसे, हसेज्जा (पिशल, पृष्ठ 683-684) ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

पाठ 12

अहं/हं/अम्मि=मैं,
तुमं/तुं/तुह=तुम

सो=वह (पुरुष),
सा=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना, ण्हा=नहाना, हो=होना

विधि एवं आज्ञा

अहं, हं, अम्मि	ठामु	=मैं ठहरूँ ।
अहं, हं, अम्मि	होमु	=मैं होऊँ ।
तुमं, तुं, तुह	ठाहि/ठासु/ठाधि	=तुम ठहरो ।
तुमं, तुं, तुह	होहि/होसु/होधि	=तुम होवो ।
सो	ठाउ/ठादु	=वह ठहरे (पुरुष) ।
सा	ठाउ/ठादु	=वह ठहरे (स्त्री) ।
सो	होउ/होदु	=वह होवे ।
सा	होउ/होदु	=वह होवे ।

1. अहं/हं/अम्मि=मैं, उत्तम पुरुष एकवचन
तुमं/तुं/तुह=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन
सो=वह (पुरुष)
सा=वह (स्त्री) } अन्य पुरुष एकवचन
} पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन।

2. (i) **अर्द्धमागधी** में विधि के रूप होंगे—

उत्तम पुरुष एकवचन	ठाएज्जा, ठाएज्जामि, होज्जा, होज्जामि
मध्यम पुरुष एकवचन	ठाएज्जा, ठाएज्जासि, ठाएज्जाहि, होज्जा, होज्जासि, होज्जा
अन्य पुरुष एकवचन	ठाएज्जा, होज्जा

(ii) **अर्द्धमागधी** में आकारान्त क्रिया में एज्जा आदि प्रत्यय लगते हैं, परन्तु ओकारान्त, एकारान्त क्रियाओं में **एज्जा** का '**ए**' हटा दिया जाता है (घाटे, पृष्ठ 129)।

(iii) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के मध्यम पुरुष एकवचन में केवल '**हि, सु, धि**' प्रत्यय ही लगते हैं, **इज्जसु**, **इज्जहि**, **इज्जे** नहीं।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

पाठ 13

अम्हे/वयं= हम दोनों/हम सब

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

विधि एवं आज्ञा

अम्हे, **वयं**	हसमो/हसामो/हसेमो	=	हम दोनों हँसें। / हम सब हँसें।
अम्हे, **वयं**	णच्चमो/णच्चामो/णच्चेमो	=	हम दोनों नाचें। / हम सब नाचें।
अम्हे, **वयं**	लुक्कमो/लुक्कामो/लुक्केमो	=	हम दोनों छिपें। / हम सब छिपें।

---

1. **अम्हे/वयं** आदि= हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

2. (i) विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष बहुवचन में **'मो'** प्रत्यय क्रिया में लगता है। **'मो'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ'** और **'ए'** भी हो जाता है।

   (ii) **अर्द्धमागधी में विधि** के उत्तम पुरुष बहुवचन में 'इज्जाम' प्रत्यय लगाकर 'हस' का रूप बनेगा 'हसेज्जाम' (घाटे, पृष्ठ 129)।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

पाठ 14

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे = तुम दोनों/तुम सब

क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

तुब्भे **तुम्हे** **तुज्झे**	हसह/हसध/हसेह/हसेध	=	तुम दोनों हँसो । तुम सब हँसो ।
तुब्भे **तुम्हे** **तुज्झे**	णच्चह/णच्चध/णच्चेह/णच्चेध	=	तुम दोनों नाचो । तुम सब नाचो ।
तुब्भे **तुम्हे** **तुज्झे**	लुक्कह/लुक्कध/लुक्केह/लुक्केध	=	तुम दोनों छिपो । तुम सब छिपो ।

---

1. **तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे** = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

2. (i) विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष बहुवचन में 'ह' और 'ध' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। 'ह' और 'ध' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है।

(ii) **अर्द्धमागधी में विधि** के मध्यम पुरुष बहुवचन में 'एज्जाह' प्रत्यय लगाकर 'हस' का रूप बनेगा—'हसेज्जाह' (घाटे, पृष्ठ 129)।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

———

पाठ 15

ते=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीव		

विधि एवं आज्ञा

ते	हसन्तु/हसेन्तु	=	वे दोनों हँसें/ वे सब हँसें।
ता/ताओ/ताउ	हसन्तु/हसेन्तु	=	वे दोनों हँसें/ वे सब हँसें।
ते	णच्चन्तु/णच्चेन्तु	=	वे दोनों नाचें/ वे सब नाचें।
ता/ताओ/ताउ	णच्चन्तु/णच्चेन्तु	=	वे दोनों नाचें/ वे सब नाचें।
ते	लुक्कन्तु/लुक्केन्तु	=	वे दोनों छिपें/ वे सब छिपें।
ता/ताओ/ताउ	लुक्कन्तु/लुक्केन्तु	=	वे दोनों छिपें/ वे सब छिपें।

---

1. **ते**=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

2. (i) विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष बहुवचन में 'न्तु' प्रत्यय क्रिया में लगता है। 'न्तु' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' भी हो जाता है।

(ii) **अर्द्धमागधी में विधि** के अन्य पुरुष बहुवचन में **एज्जा** प्रत्यय लगाकर **हस** का रूप बनेगा—**हसेज्जा** (घाटे, पृष्ठ 129)।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

पाठ 16

अम्हे/वयं=हम दोनों/हम सब　　ते=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे=तुम दोनों/तुम सब　　**ता/ताओ/ताउ**=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना,　　**ण्हा**=नहाना,　　**हो**=होना

विधि एवं आज्ञा

अम्हे, **वयं** } ठामो = हम दोनों ठहरें । / हम सब ठहरें ।

अम्हे, **वयं** } होमो = हम दोनों होवें । / हम सब होवें ।

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } ठाह/ठाध = तुम दोनों ठहरो । / तुम सब ठहरो ।

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } होह/होध = तुम दोनों होवो । / तुम सब होवो ।

ते　ठान्तु→ठन्तु = वे दोनों ठहरें/वे सब ठहरें ।

ता/ताओ/ताउ　ठान्तु→ठन्तु = वे दोनों ठहरें/वे सब ठहरें ।

ते　होन्तु = वे दोनों होवें/वे सब होवें ।

ता/ताओ/ताउ होन्तु =वे दोनों होवें/वे सब होवें ।

---

1. **अम्हे**, **वयं** } =हम दोनों/हम सब — उत्तम पुरुष बहुवचन

तुब्भे, **तुम्हे**, **तुज्झे** } =तुम दोनों/तुम सब — मध्यम पुरुष बहुवचन

ते =वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता/ताओ/ताउ =वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन

} पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

4. संयुक्ताक्षर के पहले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है, जैसे—ठान्तु→ठन्तु । प्राकृत में **आ, ई** और ऊ दीर्घ स्वर होते हैं और **अ, इ, उ, ए, ओ** ह्रस्व स्वर होते हैं ।

5. **विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय** (पाठ 9 से 16 तक)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	हि, सु, धि, ० इज्जसु, इज्जहि, इज्जे	ह, ध
अन्य पुरुष	उ, दु	न्तु

6. (i) **अर्द्धमागधी विधि के प्रत्यय**

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	एज्जा, एज्जामि	एज्जाम
मध्यम पुरुष	एज्जा, एज्जासि, एज्जाहि	एज्जाह
अन्य पुरुष	ए, एज्जा	एज्जा

(घाटे, पृष्ठ 129)
(पिशल, पृष्ठ 675)

6. (*ii*) **अर्द्धमागधी में** (विधि में)

उत्तम पुरुष बहुवचन	**ठाएज्जाम, होज्जाम**
मध्यम पुरुष बहुवचन	**ठाएज्जाह, होज्जाह**
अन्य पुरुष बहुवचन	**ठाएज्जा, होज्जा**

आकारान्त क्रिया में 'एज्जाम' आदि लगते हैं किन्तु ओकारान्त, एकारान्त क्रियाओं में 'ए' हटा दिया जाता है (घाटे, पृष्ठ 129) ।

पाठ 17

एकवचन	बहुवचन
अहं/हं/अम्मि = मैं,	अम्हे/वयं = हम दोनों/हम सब
तुमं/तुं/तुह = तुम,	तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे = तुम दोनों/तुम सब
सो = वह (पुरुष),	ते = वे दोनों/वे सब (पुरुष)
सा = वह (स्त्री),	ते/ताओ/ताउ = वे दोनों/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

हस = हँसना,	सय = सोना,	णच्च = नाचना
रूस = रूसना,	लुक्क = छिपना,	जग्ग = जागना
जीव = जीना		

भूतकाल

अहं / हं / अम्मि	हसीअ	= मैं हँसा।
तुमं / तुं / तुह	हसीअ	= तुम हँसे।
सो	हसीअ	= वह हँसा।
सा	हसीअ	= वह हँसी।
अम्हे / वयं	हसीअ	= हम दोनों/हम सब हँसे।
तुब्भे / तुम्हे / तुज्झे	हसीअ	= तुम दोनों/तुम सब हँसे।

ते	हसीअ	=वे दोनों हँसे/वे सब हँसे ।
ता **ताओ** **ताउ**	हसीअ	=वे दोनों हँसीं/वे सब हँसीं ।

---

1. भूतकाल के उत्तम पुरुष एकवचन व बहुवचन, मध्यम पुरुष एकवचन व बहुवचन, अन्य पुरुष एकवचन व बहुवचन में **'ईअ'** प्रत्यय **अकारान्त** क्रिया में लगता है ।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

4. **अर्द्धमागधी में** अकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में सभी पुरुषों और सभी वचनों में **'इत्था'** और **'इंसु'** प्रत्यय जोड़कर भूतकाल बनाया जाता है । जैसे—हसित्था/हसिंसु, णच्चित्था/णच्चिंसु, (पिशल, पृष्ठ 752-53), (घाटे, पृष्ठ 112) ।

———

पाठ 18

एकवचन	बहुवचन
अहं/हं/अम्मि=मैं,	**अम्हे/वयं**= हम दोनों/हम सब
तुमं/तुं/तुह=तुम,	**तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे**=तुम दोनों/तुम सब
सो=वह (पुरुष),	**ते**=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
सा=वह (स्त्री),	**ता/ताओ/ताउ**=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना, **ण्हा**=नहाना, **हो**=होना

भूतकाल

अहं, हं, अम्मि	ठासी/ठाही/ठाहीअ	= मैं ठहरा ।
	होसी/होही/होहीअ	= मैं हुआ ।
तुमं, तुं, तुह	ठासी/ठाही/ठाहीअ	= तुम ठहरे ।
	होसी/होही/होहीअ	= तुम हुए ।
सो	ठासी/ठाही/ठाहीअ	=वह ठहरा ।
सा	ठासी/ठाही/ठाहीअ	= वह ठहरी ।
सो	होसी/होही/होहीअ	= वह हुआ ।
सा	होसी/होही/होहीअ	=वह हुई ।
अम्हे, वयं	ठासी/ठाही/ठाहीअ	= हम दोनों ठहरे/हम सब ठहरे ।
	होसी/होही/होहीअ	= हम दोनों हुए/हम सब हुए ।

तुम्भे तुम्हे तुज्झे	ठासी/ठाही/ठाहीअ	=तुम दोनों ठहरे/तुम सब ठहरे ।
	होसी/होही/होहीअ	=तुम दोनों हुए/तुम सब हुए ।
ते	ठासी/ठाही/ठाहीअ	=वे दोनों ठहरे/वे सब ठहरे ।
ते	होसी/होही/होहीअ	=वे दोनों हुए/वे सब हुए ।
ता ताओ ताउ	ठासी/ठाही/ठाहीअ	=वे दोनों ठहरीं/वे सब ठहरीं ।
	होसी/होही/होहीअ	=वे दोनों हुईं/वे सब हुईं ।

---

1. भूतकाल के उत्तम पुरुष एकवचन व बहुवचन, मध्यम पुरुष एकवचन व बहुवचन तथा अन्य पुरुष एकवचन व बहुवचन में **आकारान्त, ओकारान्त** आदि क्रियाओं में **सी, ही, होअ** प्रत्यय लगते हैं ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

4. (i) **अर्द्धमागधी** में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त क्रियाओं में सभी पुरुषों और सभी वचनों में **इत्था** और **इंसु** प्रत्यय जोड़कर भूतकाल बनाया जाता है, जैसे—ठाइत्था/ठाइंसु, होइत्था/होइंसु, (पिशल, पृष्ठ 752–753; घाटे, पृष्ठ 112) ।

   (ii) इनके अतिरिक्त **होत्था**=हुआ, **आहंसु**=कहा, का प्रयोग भी मिलता है, (पिशल, पृष्ठ 755) ।

   कुछ अन्य रूप—
   उत्तम पुरुष एकवचन **अकरिस्सं**=किया
   अन्य पुरुष एकवचन **अकासी**=किया
   (अन्य रूपों के लिए देखें पिशल, पृष्ठ 751-753) ।

———

पाठ 19

अहं/हं/अम्मि=मैं

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

अहं	हसिहिमि/हसिस्सामि/हसिहामि/हसिस्सिमि	
हं	हसेहिमि/हसेस्सामि/हसेहामि	=मैं हँसूँगा/हँसूँगी।
अम्मि	हसिस्सं/हसेस्सं	

अहं	णच्चिहिमि/णच्चिस्सामि/णच्चिहामि/णच्चिस्सिमि	
हं	णच्चेहिमि/णच्चेस्सामि/णच्चेहामि	=मैं नाचूँगा/नाचूँगी।
अम्मि	णच्चिस्सं/णच्चेस्सं	

अहं	लुक्किहिमि/लुक्किस्सामि/लुक्किहामि/लुक्किस्सिमि	
हं	लुक्केहिमि/लुक्केस्सामि/लुक्केहामि	=मैं छिपूँगा/छिपूँगी।
अम्मि	लुक्किस्सं/लुक्केस्सं	

---

1. **अहं/हं/अम्मि**=मैं उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

2. (i) भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष एकवचन में **हि, स्सा, हा, स्सि, स्सं** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं। **हि, स्सा, स्सि, हा** प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन का प्रत्यय '**मि**' भी जोड़ दिया जाता है। '**स्सं**' प्रत्यय के साथ '**मि**' नहीं जोड़ा जाता।

(ii) **हि, स्सा, स्सं और हा** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' और '**ए**' हो जाता है ।

(iii) '**सि**' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' ही होता है (हे. प्रा. व्या., 4-275) ।

3. (i) **सोच्छ**=सुनना, **रोच्छ**=रोना, **गच्छ**=जाना
मोच्छ=छोड़ना, **वोच्छ**=कहना, **छेच्छ**=छेदना
वेच्छ=जानना, **दच्छ**=देखना, **भेच्छ**=भेदना
भोच्छ=खाना

उपर्युक्त क्रियाओं में उत्तम पुरुष एकवचन के रूप बनते हैं—

सोच्छं=(मैं) सुनूँगा, **मोच्छं**=(मैं) छोड़ूँगा, **वोच्छ**=(मैं) कहूँगा
गच्छं=(मैं) जाऊँगा, **वेच्छं**=(मैं) जानूँगा, **छेच्छं**=(मैं) छेदूँगा
भोच्छं=(मैं) खाऊँगा, **दच्छं**=(मैं) देखूँगा, **भेच्छं**=(मैं) भेदूँगा
रोच्छ=(मैं) रोऊँगा ।

(ii) सोच्छ, गच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के '**हि**' प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं, अन्त्य '**अ**' का '**इ**' या '**ए**' कर दिया जाता है। **सोच्छ**+**मि**=**सोच्छिमि/सोच्छेमि**=मैं सुनूँगा । कभी-कभी सोच्छिहिमि आदि रूप भी बनते हैं (हे. प्रा. व्या., 3-172) ।

(iii) **भविष्यत्काल** में उत्तम पुरुष एकवचन में **काहं**=(मैं) करूँगा, **दाहं**=(मैं) दूँगा, प्रयोग भी मिलते हैं । इसके अतिरिक्त '**का**' और '**दा**' के रूप उपर्युक्त प्रकार से भी बनते हैं – **काहिमि/दाहिमि** आदि ।

4. **अर्द्धमागधी** में सोच्छ, गच्छ रोच्छ आदि उपर्युक्त क्रियाओं में वर्तमानकाल का '**मि**' प्रत्यय जोड़ देने से भविष्यत्काल के रूप बनते हैं—**सोच्छामि**=सुनूँगा, **वोच्छामि**=कहूँगा, **रोच्छामि**=रोऊँगा आदि ।

इनके अतिरिक्त **भोक्खामि**=(मैं) खाऊँगा, **होक्खामि**=होऊँगा, **पेक्खामि**=देखूँगा आदि रूप भी अर्द्धमागधी में बनते हैं (घाटे, पृष्ठ 121) ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

———

पाठ 20

तुमं/तुं/तुह=तुम

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

तुमं **तुं** **तुह**	हसिहिसि/हसिहिसे हसिस्ससि/हसिस्ससे हसिस्सिसि/हसिस्सिसे	= तुम हँसोगे/हँसोगी ।
तुमं **तुं** **तुह**	णच्चिहिसि/णच्चिहिसे णच्चिस्ससि/णच्चिस्ससे णच्चिस्सिसि/णच्चिस्सिसे	= तुम नाचोगे/नाचोगी ।
तुमं **तुं** **तुह**	लुक्किहिसि/लुक्किहिसे लुक्किस्ससि/लुक्किस्ससे लुक्किस्सिसि/लुक्किस्सिसे	= तुम छिपोगे/छिपोगी ।

---

1. (i) **तुमं/तुं/तुह**=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

   (ii) **अर्द्धमागधी** में **तुमं**, तुं **तुमे** का प्रयोग होता है, (पिशल, प्रा.भा.व्या. पृष्ठ, 617)।

2. (i) भविष्यत्काल के मध्यम पुरुष एकवचन में **हि**', '**स्स**' और '**सि**' प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं । इनको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन के प्रत्यय '**सि**' और '**से**' भी जोड़े जाते हैं ।

   (ii) '**हि**' और '**स्स**' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' और '**ए**' हो जाता है । ऊपर केवल '**इ**' के उदाहरण ही दिये गए हैं, '**ए**' के उदाहरण इस प्रकार होंगे-- हसेहिसि/हसेहिसे, हसेस्ससि/हसेस्ससे ।

(iii) **'स्सि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** ही होता है।

(iv) बेचरदास जी ने 'प्राकृत मार्गोपदेशिका' में मध्यम पुरुष एकवचन आदि में **'स्स'** प्रत्यय भी माना है (पृष्ठ 249)। पिशल ने भी **'स्स'** प्रत्यय दिया है— गमिस्ससि (पृष्ठ 761)।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

5. (i) सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के **'हि'** प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं और अन्त्य **'अ'** का **'इ'** या 'ए' कर दिया जाता है। जैसे—**सोच्छिसि/सोच्छेसि** = (तुम) सुनोगे। सोच्छिहिसि आदि रूप भी बनते हैं (हे. प्रा. व्या., 3–172)।

(ii) **अर्द्धमागधी** में सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल का **'सि'** प्रत्यय जोड़ देने से भविष्यत्काल के रूप बन जाते हैं, जैसे—**सोच्छसि, रोच्छसि, वोच्छसि** आदि (घाटे, पृष्ठ 121)।

पाठ 21

सो=वह (पुरुष), सा=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

सो	हसिहिइ/हसिहिए/हसिहिदि/हसिहिदे हसिस्सइ/हसिस्सए/हसिस्सदि/हसिस्सदे हसिस्सिदि/हसिस्सिदे	=वह हँसेगा ।
सा	हसिहिइ/हसिहिए/हसिहिदि/हसिहिदे हसिस्सइ/हसिस्सए/हसिस्सदि/हसिस्सदे हसिस्सिदि/हसिस्सिदे	=वह हँसेगी ।
सो	णच्चिहिइ/णच्चिहिए/णच्चिहिदि/णच्चिहिदे णच्चिस्सइ/णच्चिस्सिए/णच्चिस्सदि/णच्चिस्सदे णच्चिस्सिदि/णच्चिस्सिदे	=वह नाचेगा ।
सा	णच्चिहिइ/णच्चिहिए/णच्चिहिदि/णच्चिहिदे णच्चिस्सइ/णच्चिस्सए/णच्चिस्सदि/णच्चिस्सदे णच्चिस्सिदि/णच्चिस्सिदे	=वह नाचेगी ।

---

1. (i) **सो**=वह (पुरुष), **सा**=वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

(ii) स=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है ।

(iii) **अर्द्धमागधी में से**=वह (पुरुष) का भी प्रयोग होता है, (पिशल, पृष्ठ 625) ।

2. (i) भविष्यत्काल में अन्य पुरुष एकवचन में **हि, स्स, स्सि** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं । इनको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन के प्रत्यय **इ, ए, दि दे** जोड़े जाते हैं ।

(ii) कभी-कभी भविष्यत्काल के प्रत्यय **हि, स्स, स्सि** जोड़ने के पश्चात् **'दि'** प्रत्यय भी जोड़ दिया जाता है ।

(iii) **हि, स्स** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है । ऊपर केवल **'इ'** के रूप ही दिए गए हैं ।

(vi) **'स्सि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर **'दि'** और **'दे'** प्रत्यय ही जोड़े जाते हैं और क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** ही होता है ।

(v) बेचरदास जी ने 'प्राकृत मार्गोपदेशिका' में अन्य पुरुष एकवचन में **'स्स'** प्रत्यय भी माना है (पृ. 245) । पिशल ने भी **'स्स'** प्रत्यय दिया है (भविस्सदि, पृष्ठ 755; मरिस्सइ पृष्ठ 760) ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

5. (i) सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के **'हि'** प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अन्त्य **'अ'** का **'इ'** या **'ए'** कर दिया जाता है । जैसे—**सोच्छिइ/सोच्छेइ** आदि=वह सुनेगा । सोच्छिहिइ आदि रूप भी बनते हैं (हे. प्रा. व्या. 3-172) ।

(ii) **अर्द्धमागधी** में सोच्छ, गच्छ, रोच्छ आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल का **'इ'** प्रत्यय जोड़ देने से भविष्यत्काल का रूप बन जाता है जैसे - **सोच्छइ/रोच्छइ** आदि ।

———

पाठ 22

अहं/हं/अम्मि=मैं
तुमं/तुं/तुह=तुम

सो=वह (पुरुष)
सा=वह (स्त्री)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना, ण्हा=नहाना, हो=होना

भविष्यत्काल

अहं, हं, अम्मि } ठाहिमि/ठास्सामि/ठाहामि/ठास्सिमि/ठास्सं =मैं ठहरूँगा/ठहरूँगी।

अहं, हं, अम्मि } होहिमि/होस्सामि/होहामि/होस्सिमि/होस्सं =मैं होऊँगा/होऊँगी।

तुमं, तुं, तुह } ठाहिसि/ठास्सिसि/ठास्ससि =तुम ठहरोगे/ठहरोगी।

तुमं, तुं, तुह } होहिसि/होस्सिसि/होस्ससि =तुम होओगे/होओगी।

सो ठाहिइ/ठाहिदि/ठास्सइ/ठास्सदि/ठास्सिदि =वह ठहरेगा।

सा ठाहिइ/ठाहिदि/ठास्सइ/ठास्सदि/ठास्सिदि =वह ठहरेगी।

सो होहिइ/होहिदि/होस्सइ/होस्सदि/होस्सिदि =वह होवेगा।

सा होहिइ/होहिदि/होस्सइ/होस्सदि/होस्सिदि =वह होवेगी।

1. **अहं/हं/अम्मि**=मैं, उत्तम पुरुष एकवचन
   तुमं/तुं/तुह=तुम, मध्यम पुरुष एकवचन
   सो=वह (पुरुष)
   सा=वह (स्त्री) } अन्य पुरुष एकवचन
   } पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन ।

2. (i) अकारान्त क्रियाओं को छोड़कर आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के मध्यम पुरुष एकवचन में '**से**' प्रत्यय नहीं लगता है ।

   (ii) इसी प्रकार अन्य पुरुष एकवचन में '**ए**' और '**दे**' प्रत्यय नहीं लगते । ये प्रत्यय (**से, ए, दे**) केवल भविष्यत्काल की आकारान्त क्रियाओं में ही लगते हैं ।

   (iii) भविष्यत्काल के अन्य पुरुष एकवचन में '**स्सि**' प्रत्यय के साथ केवल '**दि**' प्रत्यय ही लगेगा ।

   (iv) मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष में '**स्स**' प्रत्यय पिशल (प्रा. भा. व्या., पृष्ठ 760) और पं. बेचरदास जी ने (प्राकृत मार्गोपदेशिका, पृष्ठ 249) स्वीकार किया है ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

पाठ 23

अम्हे/वयं=हम दोनों/हम सब

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

अम्हे	हसिहिमो/हसिहिमु/हसिहिम हसिस्सामो/हसिस्सामु/हसिस्साम	हम दोनों हँसेंगे/हँसेंगी ।
वयं	हसिस्सिमो/हसिस्सिमु/हसिस्सिम हसिहामो/हसिहामु/हसिहाम	हम सब हँसेंगे/हँसेंगी ।
अम्हे	णच्चिहिमो/णच्चिहिमु/णच्चिहिम णच्चिस्सामो/णच्चिस्सामु/णच्चिस्साम	हम दोनों नाचेंगे/नाचेंगी ।
वयं	णच्चिस्सिमो/णच्चिस्सिमु/णच्चिस्सिम णच्चिहामो/णच्चिहामु/णच्चिहाम	हम सब नाचेंगे/नाचेंगी ।
अम्हे	लुक्किहिमो/लुक्किहिमु/लुक्किहिम लुक्किस्सामो/लुक्किस्सामु/लुक्किस्साम	हम दोनों छिपेंगे/छिपेंगी ।
वयं	लुक्किस्सिमो/लुक्किस्सिमु/लुक्किस्सिम लुक्किहामो/लुक्किहामु/लुक्किहाम	हम सब छिपेंगे/छिपेंगीं ।

---

1. **अम्हे/वयं**=हम दोनों/हम सब उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

2. (i) भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष बहुवचन में **'हा'**, **'हि'**, **'स्सा'**, **'सि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं । इनको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय **मो, मु, म** भी जोड़ दिये जाते हैं ।

   (ii) **हा, हि, स्सा** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है । (ऊपर केवल **'इ'** के ही रूप दिए गए हैं) ।

(iii) **'स्सि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** ही होता है ।

(iv) **'हिस्सा'** और **'हित्था'** स्वतन्त्र रूप से जोड़े जाते हैं—हसिहिस्सा और हसिहित्था।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

5. सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के **'हि'** प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अन्त्य **'अ'** का **'इ'** या **'ए'** कर दिया जाता है— सोच्छिमो/सोच्छिमु/सोच्छिम, सोच्छेमो/सोच्छेमु/सोच्छेम ।
सोच्छिहिमो आदि रूप भी बनते हैं (हे. प्रा. व्या., 3–172) ।

6. **अर्द्धमागधी** में रोच्छ, सोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल का **मो** प्रत्यय जोड़ देने से भविष्यत्काल का रूप बन जाता है, जैसे—**वोच्छामो, सोच्छामो** आदि (घाटे, पृष्ठ 121) ।

पाठ 24

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झ=तुम दोनों/तुम सब

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

तुब्भे	हसिहिह/हसिहिध/हसिहित्था	=तुम दोनों हँसोगे/हँसोगी ।
तुम्हे	हसिस्सह/हसिस्सध/हसिस्सइत्था	=तुम सब हँसोगे हँसोगी ।
तुज्झे	हसिस्सिह/हसिस्सिध/हसिस्सिइत्था	
तुब्भे	णच्चिहिह/णच्चिहिध/णच्चिहित्था	=तुम दोनों नाचोगे/नाचोगी
तुम्हे	णच्चिस्सह/णच्चिस्सध/णच्चिस्सइत्था	=तुम सब नाचोगे/नाचोगी
तुज्झे	णच्चिस्सिह/णच्चिस्सिध/णच्चिस्सिइत्था	
तुब्भे	लुक्किहिह/लुक्किहिध/लुक्किहिइत्था	=तुम दोनों छिपोगे/छिपोगी।
तुम्हे	लुक्किस्सह/लुक्किस्सध/लुक्किस्सइत्था	=तुम सब छिपोगे/छिपोगी ।
तुज्झे	लुक्किस्सिह/लुक्किस्सिध/लुक्किस्सिइत्था	

---

1. **तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे**=तुम दोनों/तुम सब मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम) ।

2. (i) भविष्यत्काल के मध्यम पुरुष बहुवचन में **हि, स्स, स्सि** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं । इनको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय **ह, ध, इत्था** भी जोड़ दिये जाते हैं ।

   (ii) **हि, स्स** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का **इ** और **ए** हो जाता है (ऊपर केवल '**इ**' के रूप ही दिए गए हैं) ।

(iii) **'स्सि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** ही होता है ।

(iv) पिशल ने **'स्स'** प्रत्यय का विधान किया है—**भणिस्सह, भणिस्सध** (प्रा.भा.व्या., पृष्ठ 772) । बेचरदास जी ने प्राकृत मार्गोपदेशिका में मध्यम पुरुष बहुवचन में **'स्स'** प्रत्यय माना है (पृष्ठ 249) ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

5. सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के 'हि' प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं और अन्त्य **'अ'** का **'इ'** या **'ए'** कर दिया जाता है—**सोच्छिह/सोच्छिध/सोच्छेह/सोच्छेध** ।
सोच्छिहिह आदि रूप भी बनते हैं ।

6. **अर्द्धमागधी** में सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल का **'ह'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ देने से भविष्यत्काल का रूप बन जाता है, जैसे—**वोच्छह, सोच्छह** आदि (घाटे, पृष्ठ 121) ।

पाठ 25

ते=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

हस=हँसना,	**सय**=सोना,	**णच्च**=नाचना
रूस=रूसना,	**लुक्क**=छिपना,	**जग्ग**=जागना
जीव=जीना		

भविष्यत्काल

ते	हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे	=वे दोनों हँसेंगे ।
	हसिस्सन्ति/हसिस्सन्ते/हसिस्सइरे	=वे सब हँसेंगे ।
	हसिस्सिन्ति/हसिस्सिन्ते/हसिस्सिइरे	
ता	हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे	=वे दोनों हँसेंगी ।
ताओ	हसिस्सन्ति/हसिस्सन्ते/हसिस्सइरे	=वे सब हँसेंगी ।
ताउ	हसिस्सिन्ति/हसिस्सिन्ते/हसिस्सिइरे	
ते	णच्चिहिन्ति/णच्चिहिन्ते/णच्चिहिइरे	=वे दोनों नाचेंगी ।
	णच्चिस्सन्ति/णच्चिस्सन्ते/णच्चिस्सइरे	=वे सब नाचेंगी ।
	णच्चिस्सिन्ति/णच्चिस्सिन्ते/णच्चिस्सिइरे	
ता	णच्चिहिन्ति/णच्चिहिन्ते/णच्चिहिइरे	=वे दोनों नाचेंगी ।
ताओ	णच्चिस्सन्ति/णच्चिस्सन्ते/णच्चिसइरे	=वे सब नाचेंगी ।
ताउ	णच्चिस्सिन्ति/णच्चिस्सिन्ते/णच्चिस्सिइरे	

---

1. **ते**=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
   ता/ताओ/ताउ=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)
   ] अन्य पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)

2. (i) भविष्यत्काल के अन्य पुरुष बहुवचन में **हि, स्स, स्सि** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं इनको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन के प्रत्यय **न्ति, न्ते, इरे** भी जोड़ दिये जाते हैं ।

(ii) **हि, स्स** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' और '**ए**' हो जाता है (ऊपर केवल '**इ**' के रूप ही दिये गये हैं) ।

(iii) '**स्सि**' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' ही होता है ।

(iv) पिशल ने '**स्स**' प्रत्यय का विधान किया है—**करिस्सन्ति** (प्रा भा व्या., पृष्ठ 770) । बेचरदास जी ने प्राकृत मार्गोपदेशिका में अन्य पुरुष बहुवचन में '**स्स**' प्रत्यय माना है (पृष्ठ 249) ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

5. **सोच्छ**, वोच्छ, रोच्छ आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के '**हि**' प्रत्यय का लोप करके केवल वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अन्त्य '**अ**' का '**इ**' या '**ए**' हो जाता है — सोच्छिन्ति/सोच्छिन्ते/सोच्छिइरे, सोच्छेन्ति/सोच्छेन्ते/सोच्छेइरे । सोच्छिहिन्ति आदि रूप भी बनते हैं (हे. प्रा. व्या., 2–172) ।

6. **अर्द्धमागधी** में सोच्छ, रोच्छ, वोच्छ आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल का '**न्ति**' प्रत्यय जोड़ देने से भविष्यत्काल का रूप बन जाता है । जैसे **वोच्छन्ति, रोच्छन्ति, सोच्छन्ति** (घाटे, पृष्ठ 121) ।

पाठ 26

अम्हे/वयं=हम दोनों/हम सब **ते**=वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे=तुम दोनों/तुम सब **ता/ताओ/ताउ**=वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

क्रियाएँ

ठा=ठहरना, **ण्हा**=नहाना, **हो**=होना

भविष्यत्काल

अम्हे **वयं**	ठाहिमो/ठाहिमु/ठाहिम ठास्सामो/ठास्सामु/ठास्साम ठास्सिमो/ठास्सिमु/ठास्सिम ठाहामो/ठाहामु/ठाहाम	=	हम दोनों ठहरेंगे/ठहरेंगी । हम सब ठहरेंगे/ठहरेंगी ।
अम्हे **वयं**	होहिमो/होहिमु/होहिम होस्सामो/होस्सामु/होस्साम होस्सिमो/होस्सिमु/होस्सिम होहामो/होहामु/होहाम	=	हम दोनों होंगे/होंगी । हम सब होंगे/होंगी ।
तुब्भे **तुम्हे** **तुज्झे**	ठाहिह/ठाहिध/ठाहित्था ठास्सह/ठास्सध/ठास्सइत्था ठास्सिह/ठास्सिध/ठास्सिइत्था	=	तुम दोनों ठहरोगे/ठहरोगी । तुम सब ठहरोगे/ठहरोगी ।
तुब्भे **तुम्हे** **तुज्झे**	होहिह/होहिध/होहित्था होस्सह/होस्सध/होस्सइत्था होस्सिह/होस्सिध/होस्सिइत्था	=	तुम दोनों होवोगे/होवोगी । तुम सब होवोगे/होवोगी ।

ते	ठाहिन्ति/ठाहिन्ते/ठाहिरे या ठाहिइरे	=	वे दोनों (पुरुष) ठहरेंगे ।
			वे सब (पुरुष) ठहरेंगे ।
ता/ताओ/ताउ	ठास्सन्ति/ठास्सन्ते/ठास्सिइरे		वे दोनों (स्त्रियाँ) ठहरेंगी ।
	ठास्सिन्ति/ठास्सिन्ते/ठास्सिइरे		वे सब (स्त्रियाँ) ठहरेंगी ।

ते	होहिन्ति/होहिन्ते/होहिरे या होहिइरे	=	वे दोनों (पुरुष) होंगे ।
			वे सब (पुरुष) होंगे ।
ता/ताओ/ताउ	होस्सन्ति/होस्सन्ते/होस्सइरे		वे दोनों (स्त्रियाँ) होंगी ।
	होस्सिन्ति/होस्सिन्ते/होस्सिइरे		वे सब (स्त्रियाँ) होंगी ।

---

1. अम्हे, वयं = हम दोनों/हम सब — उत्तम पुरुष बहुवचन
   तुहभे, तुम्हे, तुज्झे = तुम दोनों/तुम सब — मध्यम पुरुष बहुवचन
   (पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन)
   ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
   ता/ताओ/ताउ = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)
   (अन्य पुरुष बहुवचन)

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

4. **भविष्यत्काल के प्रत्यय** (पाठ 19 से 26 तक)

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	हि, स्सा, स्सि, हा,	हि, स्सा, स्सि, हा
	स्सं (पूर्ण प्रत्यय)	हिस्सा, हित्था (पूर्ण प्रत्यय)
मध्यम पुरुष	हि, स्स, ह्सि	हि, स्स, स्सि
अन्य पुरुष	हि, स्स, स्सि	हि, स्स, स्सि

नोट—मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष में **'स्स'** प्रत्यय को पिशल ने माना है (पिशल, पृष्ठ 770) तथा पं बेचरदासजी ने भी इसे स्वीकार किया है (प्राकृत मार्गोपदेशिका, पृष्ठ 249), **'स्सि'** (हे. प्रा. व्या., 4–275) ।

5. (i) भविष्यत्काल में तीनों पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) के दोनों वचनों (एकवचन, बहुवचन) में **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय भी अकारान्त क्रियाओं में लगाये जाते हैं। **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का 'ए' या इ' हो जाता है (हे. प्रा. व्या, 3-157, 3-177)।

हसेज्ज/हसेज्जा	मैं हँसूँगा/हम हँसेंगे।
हसिज्ज/हसिज्जा	तुम हँसोगे/तुम सब हँसोगे।
	वह हँसेगा/हँसेगी, वे हँसेंगे/हँसेंगी।

(ii) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में भी **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय भविष्यत्काल के तीनों पुरुषों के दोनों वचनों में लगाये जाते हैं—

होज्ज/होज्जा

(iii) आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में **'अ'** विकरण जोड़कर भी **ज्ज, ज्जा** प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। इनके जोड़ने पर भविष्यत्काल में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** और **इ'** हो जाता है।

ठा + अ = ठाअ → ठाएज्ज/ठाएज्जा/ठाइज्ज/ठइज्जा

हो + अ = होअ → होएज्ज/होएज्जा/होइज्ज/होइज्जा

ण्हा + अ = ण्हाअ → ण्हाएज्ज/ण्हाएज्जा/ण्हाइज्ज/ण्हाइज्जा

———

पाठ 27

1. निम्नलिखित अकर्मक क्रियाओं को कर्तृवाच्य में प्रयोग कीजिए। यह प्रयोग वर्तमान-काल, विधि एवं आज्ञा, भूतकाल और भविष्यत्काल में करें। कर्ता के रूप में पुरुष-वाचक सर्वनाम को रखें—

लज्ज=शरमाना
रूव=रोना
डर=डरना
कलह=कलह/झगड़ा करना
थक्क=थकना
अच्छ=बैठना
पड=पड़ना/गिरना
उट्ठ=उठना
तडफड=छटपटाना
घुम=भटकना
उच्छल=उछलना
उज्जम=प्रयास करना
उल्लस=खुश होना
कंप=काँपना
मर=मरना
खेल=खेलना
कुल्ल=कूदना
जुज्झ=लड़ना
मुच्छ=मूर्च्छित होना

2. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(1) हम छिपते हैं/छिपेंगे। (2) वह डरा/डरता है। (3) तुम उठो/उठोगे। (4) वे सब उठेंगे/उठते हैं। (5) मैं खेला/खेलूँगा। (6) वह खुश होती है/होगी। (7) वे खुश हों। (8) वह जागा/जागेगा/जागता है। (9) तुम सब जीवो/जीवोगे। (10) मैं थकता हूँ। (11) वह ठहरा/ठहरेगा/ठहरता है। (12) तुम नहावो/नहावोगे। (13) हम मूर्च्छित होते हैं। (14) वह पड़े/पड़ा/पड़ेगा। (15) वे शरमायेंगी/शरमाती हैं। (16) तुम प्रयास करो। (17) वह मरेगी/मरती है। (18) वह रोता है/रोयेगा। (19) तुम बैठो। (20) वे लड़े/लड़ेंगे। (21) हम खेलेंगे/खेले। (22) मैं उठता हूँ/उठूँगा/उठा। (23) वह भटकता है/भटकेगा/भटके/भटका।

3. निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

(i) सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लिखिए—

(ii) क्रिया के अनुरूप सर्वनाम का शुद्ध रूप लिखिए—

(1) अहं लुक्कसि। (2) तुमं णच्चमि। (3) सो हसेसि। (4) अम्हे हसदि। (5) तुम्हे थक्कन्ति। (6) ते लज्जमो। (7) ता पडध। (8) तुब्भे घुमन्ति।

(9) वयं ठाइ । (10) ते मरइ । (11) सो खेलन्ति । (12) तुह पडित्था । (13) तुज्झे उच्छलदे । (14) हं कंपिता । (15) अम्मि कुल्लन्ति । (16) तुह मुच्छेइ । (17) तुम्हे ण्हामु । (18) अम्हे होसि । (19) ता उट्ठइ । (20) तुहु मरन्ते ।

4. निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

(i) सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए—

(ii) क्रिया के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लगाइए—

(1) हं पडउ । (2) तुह रुवमो । (3) सो धक्कधि । (4) अम्हे डरन्तु । (5) तुम्हे कंपमु । (6) तुं मुच्छदु । (7) सा कुल्लह । (8) अहं जुज्झेन्तु । (9) तुब्भे डरामो । (10) हं तडफड । (11) ते अच्छउ । (12) सो उट्ठह । (13) ता खेलध । (14) हं ण्हाधि । (15) तुमं कुल्लदु । (16) ते रुवउ । (17) अम्मि उल्लस । (18) सो कलहसु । (19) तुब्भे अच्छेज्जसु । (20) अम्मि लज्जेसे ।

5. निम्नलिखित भविष्यत्कालिक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए —

(i) सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए—

(ii) क्रिया के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लगाइये—

(1) तुहुं उट्ठिस्सं । (2) हं पडिहिसि । (3) सा कपिहिमि । (4) अहं लज्जिस्सिमो । (5) तुं हसिहिह । (6) तुम्हे डरिहिमु (7) अम्हे खेलिस्सध । (8) तुब्भे मुच्छिस्सदे । (9) ता ण्हाहिदि । (10) तुह मरिहिम । (11) तुं कुल्लिस्सिमो । (12) अम्मि जुज्झिस्सइत्था । (13) हं खेलिहिह । (14) ताओ ण्हाहिध । (15) ताउ उज्जमिहिध । (16) वयं जग्गिस्सिह । (17) सो रूसिस्सिइरे । (18) ते ण्हाहिमि । (19) तुज्झे मुच्छिहिन्ति । (20) हं घुमिस्सिमु ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए)—

(1) .....थक्कमि ।
(2) .....डरमो ।
(3) .....पडमु ।
(4) .....उट्ठ ।
(5) .....कलहसे ।
(6) .....घुमह ।
(7) .....अच्छध ।
(8) .....मुच्छहि ।
(9) .....पडमु ।
(10) .....कुल्लउ ।
(11) .....जुज्झदु ।
(12) .....उज्जमन्तु ।
(13) .....कंपसि ।
(14) .....उल्लसेइ ।

(15) .....उच्छलए । (16) .....ण्हादि ।
(17) .....लज्जीअ । (18) .....ण्हाही ।
(19) .....मरिहिमि । (20) .....खेलिस्सिसि ।
(21) .....जुज्झिस्सिदे । (22) .....उट्ठिहिमो ।
(23) .....जग्गिस्सध । (24) .....मुच्छिहिन्ति ।
(25) .....ठाहिध । (26) .....लज्जिस्सइत्था ।
(27) .....उल्लस । (28) .....उज्जमेज्जसु ।
(29) .....जग्गहि । (30) .....सयन्तु ।

7. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(1) हं ..... (कुल्ल—वर्तमानकाल में) ।
(2) अम्हे..... (खेल—भविष्यत्काल में) ।
(3) तुम्हे..... (उट्ठ—विधि एवं आज्ञा में) ।
(4) अहं..... (अच्छ—भूतकाल में) ।
(5) तुब्भे..... (रूव—विधि एवं आज्ञा में) ।
(6) तुज्झे.....(मुच्छ—भविष्यत्काल में) ।
(7) सा..... (लज्ज—भविष्यत्काल में) ।
(8) अम्मि..... (डर—भूतकाल में) ।
(9) अहं..... (उल्लस—वर्तमानकाल में) ।
(10) ते..... (जुज्झ—भविष्यत्काल में) ।

———

पाठ 28

सम्बन्धक भूत कृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया)

क्रियाएँ

हस=हँसना, **णच्च**=नाचना

सम्बन्धक भूत कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च
ऊण/ऊणं	हसिऊण/हसिऊणं=हँसकर	णच्चिऊण/णच्चिऊणं=नाचकर
दूण/दूणं	हसिदूण/हसिदूणं=हँसकर	णच्चिदूण/णच्चिदूणं=नाचकर
अ/य	हसिअ/हसिय =हँसकर	णच्चिअ/णच्चिय =नाचकर
उं	हसिउं =हँसकर	णच्चिउ =नाचकर
त्ता	हसित्ता =हँसकर	णच्चित्ता =नाचकर

वाक्यों में प्रयोग—

अहं / हं / अम्मि } हसिऊण/हसिदूण/हसिअ/हसिउं/हसित्ता } जीवमि/जीवामि/जीवेमि=मैं हँसकर जीता हूँ।

तुम / तुं / तुह } हसिऊणं/हसिदूणं/हसिय/हसिउं/हसित्ता } जीवहि/जीवसु आदि =तुम हँसकर जीवो।

सो / सा } हसिऊण/हसिदूण/हसिय/हसिउं/हसित्ता } जीविहिइ/जीविहिए =वह हँसकर जीयेगा/जीयेगी।

निम्नलिखित वाक्यों में सम्बन्धक भूत कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए—

(1) वह रोकर सोता है। (2) तुम सब थककर बैठो। (3) वे थककर बैठते हैं। (4) हम हँसकर जीयेंगे। (5) वे नाचकर छिपीं। (7) तुम सब गिरकर उठते हो। (7) वे डरकर कांपते हैं। (8) हम उठकर खुश होंगे। (9) मैं प्रयास करके खुश होता हूँ। (10) तुम लड़कर मरते हो।

---

1. क्रिया के अन्त में प्रत्यय लगने पर जो विशेषण या अव्यय बनता है वह **कृदन्त** कहलाता है।

2. हँसकर, सोकर, जागकर आदि भावों को प्रकट करने के लिए प्राकृत में उपर्युक्त प्रत्यय काम में लिये जाते हैं। उन प्रत्ययों के लगने के पश्चात् जो शब्द बनता है वह **सम्बन्धक भूत कृदन्त** कहलाता है। जब कर्त्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरा कार्य करता है तो पहिले किए गए कार्य के लिए **'सम्बन्धक भूत कृदन्त'** का प्रयोग किया किया जाता है। वे शब्द अव्यय होते हैं] इसलिए इनका वाक्य-प्रयोग में रूप-परिवर्तन नहीं होता है।

3. (i) क्रिया में उपर्युक्त प्रत्यय **ऊण/दूण** आदि जोड़ने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है।

   हसिऊण हसेऊण/हसिदूण/हसेदूण (यहाँ केवल 'इ' के रूप ही दिये गये हैं)।

   (ii) आकारान्त व ओकारान्त क्रियाओं जैसे **ठा** व **हो** में प्रत्यय जोड़ने पर उनके रूप निम्न प्रकार बनते हैं—

   ठाऊण/ठादूण, होऊण/होदूण

4. उपर्युक्त सभी प्रत्यय अकर्मक क्रियाओं में लगाए गए हैं।

5. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

6. **अर्द्धमागधी** में सम्बन्धक भूतकृदन्त के लिए (i) त्ताण/त्ताणं, (ii) आय, (iii) आए (iv) याण/याणं (v) त्तु प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं।

   (i) त्ताण/त्ताणं जोड़ने पर अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है।

(i) **त्ताण/ताणं**— हसित्ताण/हसित्ताणं, हसेत्ताण/हसेत्ताणं } =हँसकर

(ii) **आय**—हसाय=हँसकर

(iii) **आए**—हसाए=हँसकर

(iv) **याण/यांणं**—हसियाण/हसियाणं=हँसकर, अन्त्य **अ** का **इ**

(v) **त्तु**—हसित्तु/हसेत्तु=हँसकर, अन्त्य **अ** का **इ** और **ए** (घाटगे, पृष्ठ 131)।

पाठ 29

हेत्वर्थक कृदन्त

क्रियाएँ

हस=हँसना, **णच्च**=नाचना

हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च
उं	हसिउं=हँसने के लिए	णच्चिउं=नाचने के लिए
दुं	हसिदुं=हँसने के लिए	णच्चिदुं=नाचने के लिए

वाक्यों में प्रयोग

अहं, हं, अम्मि } हसिउं/हसिदुं जीवमि/जीवामि आदि=मैं हँसने के लिए जीता हूँ।

तुमं, तुं, तुह } हसिउं/हसिदुं जीवहि/जीवसु आदि =तुम हँसने के लिए जीवो।

सो, सा } हसिउं/हसिदुं जीविहिइ/जीविहिए =वह हँसने के लिए जीवेगा/जीवेगी।

निम्नलिखित वाक्यों में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए—

(1) वह थकने के लिए नाचता है।
(2) वह बैठने के लिए गिरती है।
(3) वे लड़ने के लिए छिपते हैं।
(4) तुम सब उठने के लिए प्रयास करो।
(5) वे सोने के लिए थकें।
(6) वह जागने के लिए प्रयास करे।
(7) वे नाचने के लिए उठेंगे।
(8) मैं कूदने के लिए उठा।
(9) तुम खुश होने के लिए खेलोगे।
(10) वह सोने के लिए रोया।

1. क्रिया के अन्त में प्रत्यय लगने पर जो विशेषण या अव्यय शब्द बनता है वह कृदन्त कहलाता है।

2. हँसने के लिए, नाचने के लिए, जीने के लिए, आदि भावों को प्रकट करने के लिए प्राकृत में उपर्युक्त प्रत्यय काम में लिये जाते हैं। इन प्रत्ययों के लगने के पश्चात् जो शब्द बनते हैं वे हेत्वर्थक कृदन्त कहलाते हैं, ये शब्द अव्यय होते हैं इसलिए वाक्य-प्रयोग में इनका रूप-परिवर्तन नहीं होता है। क्रिया में उपर्युक्त प्रत्यय **उं/दुं** आदि जोड़ने पर अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है – हसिउ/हसिदुं, हसेउं/हसेदुं।

   हो और **ठा** में प्रत्यय जोड़ने पर होउं/होदुं ठाउं/ठादुं रूप बनते हैं।

3. उपर्युक्त सभी प्रत्यय अकर्मक क्रियाओं में लगाए गए हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

5. **अर्द्धमागधी में 'त्तए'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ा जाता है। प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। आकारान्त, औकारान्त आदि क्रियाओं में यह परिवर्तन नहीं होता और केवल प्रत्यय जोड़ दिया जाता है—

   हस + त्तए = हसित्तए/हसेत्तए
   हो + त्तए = होत्तए

पाठ 30

1. अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

करह	=ऊँट,	रयण	=रत्न
कुक्कुर	=कुत्ता,	सायर	=समुद्र
गंथ	=पुस्तक,	राय	=नरेश, राजा
वायस	=कौआ,	नरिंद	=राजा
पुत्त	=पुत्र,	बालअ	=बालक
पोत्त	=पोता,	अवयस	=अपयश
घर	=मकान,	हणुवन्त	=हनुमान
माउल	=मामा,	गव्व	=गर्व
पिअामह	=दादा,	हुअवह	=अग्नि
ससुर	=ससुर,	मारुअ	=पवन
दिअर	=देवर,	पड	=वस्त्र
णर	=मनुष्य,	कयंत	=मृत्यु
परमेसर	=परमेश्वर,	दिवायर	=सूर्य
रहुणन्दण	=राम,	रक्खस	=राक्षस
वय	=व्रत,	सोह	=सिंह
आगम	=शास्त्र,	दुक्ख	=दुःख
सप्प	=सांप,	मित्त	=मित्र
भव	=संसार,	दुह	=दुःख
कूव	=कुँआ,	बप्प	=पिता
मेह	=मेघ,	सलिल	=पानी
कर	=हाथ,	गाम	=गांव

2 क्रियाएँ

गल	=गलना,	णिज्झर	=झरना
खय	=नष्ट होना	सोह	=शोभना
जल	=जलना,	सुक्ख	=सूखना
लुढ	=लुढकना,	पसर	=फैलना
हो	=होना,	डुल	=डोलना, हिलना
हु	=होना,	दुक्ख	=दुखना

उपज्ज	=पैदा होना,	पला	=भाग जाना
वल	=मुड़ना,	चिट्ठ	=बैठना
जर	=बूढ़ा होना,	बुक्क	=भोंकना
गज्ज	=गरजना,	तुट्ट	=टूटना
उग	=उगना, उदय होना,	कंद	=रोना
उड्ड	=उड़ना,	हरिस	=प्रसन्न होना
नस्स	=नष्ट होना,		

---

1. उपर्युक्त सभी संज्ञा शब्द अकारान्त पुल्लिग हैं।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

पाठ 31

संज्ञा शब्द अकारान्त पुल्लिंग

नरिंद=राजा, बालअ=बालक

क्रियाएँ

हस=हँसना, जग्ग=जागना

प्रथमा (एकवचन)	वर्तमानकाल एकवचन	
नरिंदो	हसइ/हसेइ/हसए हसदि/हसेदि/हसदे	= राजा हँसता है।
बालओ	जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए जग्गदि/जग्गेदि/जग्गदे	= बालक जागता है।

प्रथमा (एकवचन)	विधि एवं आज्ञा (एकवचन)	
नरिंदो	हसउ/हसेउ/हसदु/हसेदु	= राजा हँसे।
बालओ	जग्गउ/जग्गेउ/जग्गदु/जग्गेदु	= बालक जागे।

प्रथमा (एकवचन)	भूतकाल (एकवचन)	
नरिंदो	हसीअ	= राजा हँसा।
बालओ	जग्गीअ	= बालक जागा।

प्रथमा (एकवचन)	भविष्यत्काल (एकवचन)	
नरिंदो	हसिहिइ/हसिहिए/हसिहिदि/हसिहिदे हसिस्सइ/हसिस्सए/हसिस्सदि/हसिस्सदे हसिस्सिदि/हसिस्सिदे	= राजा हँसेगा।
बालओ	जग्गिहिइ/जग्गिहिए/जग्गिहिदि/जग्गिहिदे जग्गिस्सइ/जग्गिस्सए/जग्गिस्सदि/जग्गिस्सदे जग्गिस्सिदि/जग्गिस्सिदे	= बालक जागेगा।

1. **नरिंदो**=प्रथमा एकवचन (अकारान्त पुल्लिग)।

2. अकारान्त पुल्लिग शब्द **नरिंद** में **ओ** प्रत्यय प्रथमा के एकवचन में लगता है।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्त्ता- (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह '**अन्य पुरुष एकवचन**' का है।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **अन्य पुरुष सर्वनाम** की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा एकवचन में है, अत: क्रिया भी एकवचन की ही लगी है।

7. **अर्द्धमागधी** में अकारान्त पुल्लिग शब्दों में 'ए' प्रत्यय भी प्रथमा के एकवचन में लगता है— नरिंद→नरिंदे।

पाठ 32

संज्ञा शब्द अकारान्त पुल्लिग

नरिंद=राजा, **बालअ**=बालक

क्रियाएँ

हस=हँसना, **जग्ग**=जागना

प्रथमा (बहुवचन)	**वर्तमानकाल (बहुवचन)**	
नरिंदा	हसन्ति/हसेन्ति/हसन्ते/हसिरे	=राजा हँसते हैं।
बालआ	जग्गन्ति/जग्गेन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे	=बालक जागता है।

प्रथमा (बहुवचन)	**विधि एवं आज्ञा (बहुवचन)**	
नरिंदा	हसन्तु/हसेन्तु	=राजा हँसें।
बालआ	जग्गन्तु/जग्गेन्तु	=बालक जागें।

प्रथमा (बहुवचन)	**भूतकाल (बहुवचन)**	
नरिंदा	हसीअ	=राजा हँसे।
बालआ	जग्गीअ	=बालक जागे।

प्रथमा (बहुवचन)	**भविष्यत्काल (बहुवचन)**	
नरिंदा	हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे हसिस्सन्ति/हसिस्सन्ते/हसिस्सइरे हसिस्सिन्ति/हसिस्सिसन्ते/हसिस्सिइरे	=राजा हँसेंगे।
बालआ	जग्गिहिन्ति/जग्गिहिन्ते/जग्गिहिइरे जग्गिस्सन्ति/जग्गिस्सन्ते/जग्गिस्सइरे जग्गिस्सिन्ति/जग्गिस्सिन्ते/जग्गिस्सिइरे	=बालक जागेंगे।

1. **नरिंदा**=प्रथमा बहुवचन (अकारान्त पुल्लिग) ।

2. अकारान्त पुल्लिग शब्द '**नरिंद**' के प्रथमा बहुवचन में **0→आ** प्रत्यय लगा है ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं । कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु, आदि) में **प्रथमा** होती है ।

4. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह '**अन्य पुरुष बहुवचन**' का है ।

5. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ '**अन्य पुरुष सर्वनाम**' की क्रिया काम में आती है । यहाँ संज्ञा बहुवचन में है, अतः क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है ।

6. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

पाठ 33

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) मेघ गरजते हैं। (2) वस्त्र सूखता है। (3) रत्न शोभता है। (4) अपयश फैलता है। (5) अग्नि जलती है। (6) पिता उठता है। (7) पुस्तक नष्ट होती है। (8) मित्र प्रयास करता है। (9) रघुनन्दन प्रसन्न होता है। (10) कुत्ता भौंकता है। (11) पुत्र काँपता है। (12) घर गिरता है। (13) मनुष्य बूढ़े होते हैं। (14) गर्व गलता है। (15) दादा थकता है। (16) व्रत शोभते हैं। (17) ऊँट नाचते हैं। (18) सूर्य उगता है। (19) राक्षस डरते हैं। (20) सिंह बैठते हैं। (21) हाथ दुखता है। (22) कौआ उड़ता है।

(ख) (1) मामा उठे/उठा। (2) पोता उछले/उछला। (3) गर्व नष्ट हो। (4) बालक खेलें। (5) राक्षस मरें/मरे। (6) दुक्ख गलें। (7) शास्त्र शोभें। (8) मित्र खुश हो/खुश हुआ। (9) समुद्र फैले/फैला। (10) पुत्र जीवे। (11) पिता नहाया।

(ग) (1) अग्नि जलेगी। (2) शास्त्र नष्ट होंगे। (3) सर्प उड़ेंगे। (4) रघुनन्दन प्रसन्न होंगे। (5) संसार नष्ट होगा। (6) राक्षस मूर्छित होंगे। (7) बालक रूसेगा। (8) मनुष्य प्रयास करेंगे। (9) मकान गिरेंगे। (10) कुआ सूखेगा।

2. निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

(i) कर्ता के अनुसार क्रिया का शुद्ध रूप लगाइये—

(ii) क्रिया के अनुसार कर्ता का शुद्ध रूप लगाइये—

(1) कुक्करो बुक्कन्ति। (2) गंथो नस्सन्ते। (3) णरो कंदन्ति। (4) दुक्खो तुट्टन्ति। (5) करहो थक्कन्ति। (6) माउलो थक्किरे।

3. निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

(i) कर्ता के अनुसार क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए—

(ii) क्रिया के अनुसार कर्ता का शुद्ध रूप लगाइए—

(1) ससुरो उट्ठन्तु। (2) दिअरो णच्चन्तु। (3) परमेसरो हरिसेन्तु। (4) हणुवन्तो चिट्ठन्तु। (5) सीहो पलान्तु। (6) कयंतो होन्तु।

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की निर्देशानुसार पूर्ति कीजिए (कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइए)—

(1) मेहा.....(पसर—भविष्यत्काल में)।
(2) कूवा.....(सुक्क—भविष्यत्काल में)।
(3) दुहो.....(णस्स—विधि एवं आज्ञा में)।
(4) पुत्तो.....(जग्ग—वर्तमानकाल में)।
(5) घरो.....(पड—भूतकाल में)।
(6) हुअवओ.....(जल—भविष्यत्काल में)।
(7) आगमा.....(सोह—वर्तमानकाल में)।
(8) भवो.....(खय—भविष्यत्काल में)।
(9) बप्पो.....(उज्जम—विधि एवं आज्ञा में)।
(10) रक्खए.....(जुज्झ—भविष्यत्काल में)।

5. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) कुत्ता डरकर रोता है/रोया। (2) पिता हँसकर जीता है। (3) राजा प्रसन्न होकर उठते हैं/उठे। (4) सर्प डरकर भागते हैं। (5) ससुर रूसकर भिड़ता है। (6) रत्न पड़कर टूटता है/टूटा। (7) पिता जागकर बैठता है।

(ख) (1) पिता हँसने के लिए जीवे। (2) पोता नाचने के लिए उठे। (3) अग्नि नष्ट होने के लिए जले। (4) दादा घूमने के लिए उठे। (5) पानी सूखने के लिए झरे। (6) मित्र प्रसन्न होने के लिए खेले/खेला। (7) सूर्य शोभने के लिए उगे।

(ग) (1) पुत्र कलह करके शरमायेगा। (2) मित्र प्रसन्न होने के लिए जीवेगा। (3) ऊँट थकने के लिए नाचेगा। (4) घर गिरकर नष्ट होगा। (5) व्रत टूटकर गलेगा। (6) राक्षस मरने के लिए कूदेंगे। (7) पानी फैलकर सूखेगा।

———

पाठ 34

1. अकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)

विमाण	=विमान,	मज्ज	=मद्य
पत्त	=कागज,	पुप्फ	=फूल
सासण	=शासन,	वसण	=व्यसन
सोक्ख	=सुख,	जूअ	=जुआ
रज्ज	=राज्य,	असण	=भोजन
पोट्टल	=गठरी,	तिण	=घास
णह	=आकाश,	वण	=जंगल
सील	=सदाचार,	वत्थ	=वस्त्र
णायर	=नागरिक,	कट्ठ	=काठ
खीर	=दूध,	भोयण	=भोजन
छिक्क	=छींक,	घय	=घी
लक्कुड	=लकड़ी,	सिर	=मस्तक
उदग	=जल,	सुत्त	=धागा
गाण	=गीत,	सुह	=सुख
भय	=भय,	रिण	=कर्ज
वेरग्ग	=वैराग्य,	बीअ	=बीज
सच्च	=सत्य,	जीवण	=जीवन
रत्त	=रक्त,	रूव	=रूप
मरण	=मरण,	कम्म	=कर्म
खेत्त	=खेत,	जोव्वण	=यौवन
धन्न	=धान,	णाण	=ज्ञान
धण	=धन,	मण	=चित्त, मन

2. क्रियाएँ

वड्ढ	=बढ़ना,	चेट्ठ	=प्रयत्न करना
विअस	=खिलना,	गुंज	=गूँजना
लोट्ट	=सोना, लोटना,	सिज्झ	=सिद्ध होना
चुअ	=टपकना,	फुल्ल	=खिलना
कुद्द	=कूदना,	जम्म	=जन्म लेना

जागर	=जागना,	**विज्ज**	=उपस्थित होना
खिज्ज	=अफसोस करना,	**छुट्ट**	=छूटना
हव	=होना,	**रम**	=रमना
उच्छह	=उत्साहित होना,	**चुक्क**	=भूल करना
कील	=कीलना,	**चिराव**	=देर करना
तव	=तपना,	**वस**	=वसना
फुर	=प्रकट होना ।		

---

1. उपर्युक्त सभी संज्ञा शब्द अकारान्त नपुंसकलिंग हैं ।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं ।

———

पाठ 35

संज्ञा शब्द अकारान्त नपुंसकलिंग

कमल=कमल का फूल, **धण**=धन

क्रियाएँ

विअस=खिलना, **वड्ढ**=बढ़ना

प्रथमा (एकवचन) वर्तमानकाल (एकवचन)

कमलं — विअसइ/विअसेइ/विअसए, विअसदि/विअसेदि/विअसदे =कमल खिलता है।

धणं — वड्ढइ/वड्ढेइ/वड्ढए, वड्ढदि/वड्ढेदि/वड्ढदे =धन बढ़ता है।

प्रथमा (एकवचन) विधि एवं आज्ञा (एकवचन)

कमलं — विअसउ/विअसेउ, विअसदु/विअसेदु =कमल खिले।

धणं — वड्ढउ/वड्ढेउ, वड्ढदु/वड्ढेदु =धन बढ़े।

प्रथमा (एकवचन) भूतकाल (एकवचन)

कमलं विअसीअ =कमल खिला।

धणं वड्ढीअ =धन बढ़ा।

प्रथमा (एकवचन) भविष्यत्काल (एकवचन)

कमलं — विअसिहिइ/विअसिहिए/विअसिहिदि/विअसिहिदे, विअसिस्सइ/विअसिस्सए/विअसिस्सदि/विअसिस्सदे, विअसिस्सिदि/विअसिस्सिदे =कमल खिलेगा।

घणं	वड्ढहिइ/वड्ढहिए/वड्ढहिदि/वड्ढहिदे वड्ढस्सइ/वड्ढस्सए/वड्ढस्सदि/वड्ढस्सदे वड्ढिस्सिदि/वड्ढिस्सिदे	=घन बढ़ेगा ।

---

1. **कमलं**=प्रथमा एकवचन (अकारान्त नपुंसकलिंग) ।

2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द **कमल** के प्रथमा एकवचन में ∴ प्रत्यय लगता है ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं । कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा होती है ।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं ।

5. उपर्युक्त क्रियाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह **अन्य पुरुष एकवचन** का है ।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **अन्य पुरुष सर्वनाम** की क्रिया काम में आती है । यहाँ **संज्ञा** एकवचन में है, अतः क्रिया भी एकवचन की ही लगाई गई है ।

———

पाठ 36

संज्ञा शब्द अकारान्त नपुंसकलिंग

कमल=कमल का फूल, **धण**=धन

क्रियाएँ

विअस=खिलना, **वड्ढ**=बढ़ना

प्रथमा (बहुवचन)	**वर्तमानकाल (बहुवचन)**	
कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसन्ति/विअसेन्ति/विअसन्ते/विअसिरे	=कमल खिलते हैं।
धणाइं धणाइँ धणाणि	वड्ढन्ति/वड्ढेन्ति/वड्ढन्ते/वड्ढिरे	=धन बढ़ते हैं।

प्रथमा (बहुवचन)	**विधि एवं आज्ञा (बहुवचन)**	
कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसन्तु/विअसेन्तु	=कमल खिलें।
धणाइं धणाइँ धणाणि	वड्ढन्तु/वड्ढेन्तु	=धन बढ़ें।

प्रथमा (बहुवचन) **भूतकाल (बहुवचन)**

कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसीअ	=कमल खिले ।
धणाइं धणाइँ धणाणि	वड्ढीअ	=धन बढ़े ।

प्रथमा (बहुवचन) **भविष्यत्काल (बहुवचन)**

कमलाइं	विअसिहिन्ति/विअसिहिन्ते/विअसिहिइरे	
कमलाइँ	विअसिस्सन्ति/विअसिस्सन्ते/विअसिस्सइरे	=कमल खिलेंगे ।
कमलाणि	विअसिस्सिन्ति/विअसिस्सिन्ते/विअसिस्सिइरे	
धणाइं	वड्ढिहिन्ति/वड्ढिहिन्ते/वड्ढिहिइरे	
धणाइँ	वड्ढिस्सन्ति/वड्ढिस्सन्ते/वड्ढिस्सइरे	=धन बढ़ेंगे ।
धणाणि	वड्ढिस्सिन्ति/वड्ढिस्सिन्ते/वड्ढिस्सिइरे	

---

1. **कमलाइं/कमलाइँ/कमलाणि**=प्रथमा बहुवचन (अकारान्त नपुंसकलिंग)।

2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द **'कमल'** आदि में प्रथमा के बहुवचन में इं→**आइं**, इँ→**आइँ**, णि→**आणि** लगते हैं।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्त्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह **'अन्य पुरुष बहुवचन'** का है।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **अन्य पुरुष सर्वनाम** की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा बहुवचन में है अतः क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है।

पाठ 37

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) सुख बढ़ता है। (2) दूध टपकता है। (3) नागरिक प्रयत्न करते हैं। (4) गठरी लुढ़कती है। (5) यौवन खिलता है। (6) राज्य भूल करता है। (7) आकाश गूँजता है। (8) सदाचार प्रकट होता है। (9) घास जलता है।

(ख) (1) वैराग्य बढ़े। (2) राज्य प्रयत्न करे। (3) ज्ञान सिद्ध हो। (4) शासन डरे। (5) सदाचार शोभे। (6) धन बढ़े। (7) पोटली लुढ़के। (8) सत्य खिले। (9) पानी टपके।

(ग) (1) नागरिक सोयेंगे। (2) रूप खिलेगा। (3) शासन प्रयत्न करेगा। (4) बीज उगेंगे। (5) लकड़ी जलेगी। (6) राज्य उत्साहित होगा। (7) कर्म नष्ट होंगे। (8) दुःख फैलेगा। (9) विमान उड़ेंगे। (10) सत्य शोभेगा।

(घ) (1) सिर दुःखा। (2) नागरिक ठहरा। (3) धागा टूटा। (4) काठ नष्ट हुआ। (5) भय नष्ट हुआ। (6) सुख प्रकट हुआ। (7) ज्ञान सिद्ध हुआ। (8) विमान उड़ा। (9) वस्त्र जला।

2. निम्नलिखित वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

(i) कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइये—

(ii) क्रिया के अनुसार कर्ता लगाइए—

(1) सिरं दुखन्ति। (2) लक्कुड जलन्ते। (3) विमाणाइं उड्डदि। (4) उदगं चुइहिन्ति। (5) णायराणि पलाइ। (6) जीवणं तपन्तु। (7) मणाइँ उच्छहदु। (8) धन्नं उप्पज्जिस्सिन्ति। (9) सच्चं छुट्टिरे। (10) वेरग्गाणि सोहइ।

———

पाठ 38

1. आकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

परिक्खा	=परीक्षा,	सीया	=सीता
सुया	=पुत्री,	ससा	=बहिन
माया	=माता,	वाया	=वाणी
आणा	=आज्ञा,	कमला	=लक्ष्मी
करुणा	=दया,	गंगा	=गंगा
जरा	=बुढ़ापा,	तणया	=पुत्री
णम्मया	=नर्मदा,	कहा	=कथा
जउणा	=यमुना,	जाया	=स्त्री
सद्धा	=श्रद्धा,	मेहा	=बुद्धि
संझा	=सायंकाल,	भुक्खा	=भूख
तिसा	=प्यास,	तण्हा	=तृष्णा
निसा	=रात्रि,	कण्णा	=कन्या
कलसिया	=छोटा घड़ा,	गुहा	=गुफा
झुंपडा	=झोंपड़ी,	णिद्दा	=नींद
पइट्ठा	=प्रतिष्ठा,	पसंसा	=प्रशंसा
सिक्खा	=शिक्षा,	सोहा	=शोभा
मइरा	=मदिरा,	सरिआ	=नदी
इच्छा	=अभिलाषा,	गड्ढा	=खड्डा
धूआ	=बेटी,	णणन्दा	=ननद
महिला	=स्त्री,	पण्णा	=प्रज्ञा

2. क्रियाएँ

छज्ज	=शोभना,	छुब्भ	=क्षुब्ध होना/व्याकुल होना
उवरम	=विरत होना,	गडयड	=गिड़गिड़ाना

बिह्	=डरना,	उवसम	=शान्त होना
थंभ	=रुकना,	किलिस	=दुःखी होना
खर	=नष्ट होना,	जंभा	=जँभाइ लेना
जोह्	=लड़ना,	खास	=खाँसना
उस्सस	=साँस लेना,	उवविस	=बैठना
खंज	=लँगड़ाना,	गिज्झ	=आसक्त होना
खिस	=खिसकना,	खेड्ड	=क्रीड़ा करना

———

पाठ 39

संज्ञा शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग

ससा=बहिन, **माया**=माता

क्रियाएँ

हस=हँसना, जग्ग=जागना

प्रथमा (एकवचन)	**वर्तमानकाल (एकवचन)**	
ससा	हसइ/हसेइ/हसए हसदि/हसेदि/हसदे	=बहिन हँसती है।
माया	जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए जग्गदि/जग्गेदि/जग्गदे	=माता जागती है।

प्रथमा (एकवचन)	**विधि एवं आज्ञा (एकवचन)**	
ससा	हसउ/हसेउ/हसदु/हसेदु	=बहिन हँसे।
माया	जग्गउ/जग्गेउ/जग्गदु/जग्गेदु	=माता जागे।

प्रथमा (एकवचन)	**भूतकाल (एकवचन)**	
ससा	हसीअ	=बहिन हँसी।
माया	जग्गीअ	=माता जागी।

प्रथमा (एकवचन)	**भविष्यत्काल (एकवचन)**	
ससा	हसिहिइ/हसिहिए/हसिहिदि/हसिहिदे हसिस्सइ/हसिस्सए/हसिस्सदि/हसिस्सदे हसिस्सिदि/हसिस्सिदे	=बहिन हँसेगी।

माया } जग्गिहिइ/जग्गिहिए/जग्गिहिदि/जग्गिहिदे
जग्गिस्सइ/जग्गिस्सए/जग्गिस्सदि/जग्गिस्सदे = माता जागेगी।
जग्गिस्सिदि/जग्गिस्सिदे

---

1. **ससा**=प्रथमा एकवचन (आकारान्त स्त्रीलिंग)।

2. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **ससा** आदि में **'ो'** प्रत्यय प्रथमा के एकवचन में लगता है।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में प्रथमा होती है।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह **'अन्य पुरुष एकवचन'** का है।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **'अन्य पुरुष सर्वनाम'** की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा एकवचन में है, अतः क्रिया भी एकवचन की ही लगी है।

पाठ 40

संज्ञा शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग

ससा=बहिन, माया=माता

क्रियाएँ

हस=हँसना, जग्ग=जागना

प्रथमा (बहुवचन) वर्तमानकाल (बहुवचन)

ससा, ससाओ, ससाउ } हसन्ति/हसेन्ति/हसन्ते/हसिरे =बहिनें हँसती हैं।

माया, मायाओ, मायाउ } जग्गन्ति/जग्गेन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे =माताएँ जागती हैं।

प्रथमा (बहुवचन) विधि एवं आज्ञा (बहुवचन)

ससा, ससाओ, ससाउ } हसन्तु/हसेन्तु =बहिनें हँसें।

माया, मायाओ, मायाउ } जग्गन्तु/जग्गेन्तु =माताएँ जागें।

प्रथमा (बहुवचन) **भूतकाल (बहुवचन)**

ससा, ससाओ, ससाउ } हसीअ =बहिनें हँसीं ।

माया, मायाओ, मायाउ } जग्गीअ =माताएँ जागीं ।

प्रथमा (बहुवचन) **भविष्यत्काल (बहुवचन)**

ससा } हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे
ससाओ } हसिस्सन्ति/हसिस्सन्ते/हसिस्सइरे =बहिनें हँसेंगी ।
ससाउ } हसिस्सिन्ति/हसिस्सिन्ते/हसिस्सिइरे

माया } जग्गिहिन्ति/जग्गिहिन्ते/जग्गिहिइरे
मायाओ } जग्गिस्सन्ति/जग्गिस्सन्ते/जग्गिस्सइरे =माताएँ जागेंगी ।
मायाउ } जग्गिस्सिन्ति/जग्गिस्सिन्ते/जग्गिस्सिइरे

---

1. **ससा/ससाओ/ससाउ**=प्रथमा बहुवचन (आकारान्त स्त्रीलिंग) ।

2. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **ससा** आदि में '**ओ**', '**उ**', '**ओ**' प्रत्यय प्रथमा के बहुवचन में लगते हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं । कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में प्रथमा होती है ।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह **'अन्य पुरुष बहुवचन'** का है ।

4. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **'अन्य पुरुष सर्वनाम'** की क्रिया काम में आती है । यहाँ संज्ञा बहुवचन में है अतः क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है ।

पाठ 41

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) सीता शोभती है। (2) बहिन क्षुब्ध होती है। (3) माता प्रसन्न होती है। (4) वाणी थकती है। (5) आज्ञा प्रकट होती है। (6) लक्ष्मी बढ़ती है। (7) दया शोभती है। (8) गंगा फैलती है। (9) बुढ़ापा बढ़ता है। (10) सायंकाल होता है। (11) कन्यायें रुकती हैं। (12) झोंपड़ियाँ जलती हैं। (13) छोटे घड़े टूटते हैं। (14) पुत्रियाँ खाँसती हैं। (15) अभिलाषाएँ बढ़ती हैं। (16) परीक्षाएँ होती हैं। (17) सायंकाल शोभता है। (18) वाणियाँ सिद्ध होती हैं। (19) नदियाँ सूखती हैं। (20) महिलाएँ प्रयत्न करती हैं।

(ख) (1) श्रद्धा बढ़े। (2) भूख शान्त होवे। (3) मदिरा घटे (4) बेटी प्रसन्न हो। (5) स्त्रियाँ तप करें। (6) प्रज्ञा सिद्ध हो। (7) वाणियाँ प्रकट हों। (8) महिलाएँ उत्साहित हों।

(ग) (1) शिक्षा फैलेगी। (2) अभिलाषाएँ शान्त हों। (3) नदियाँ सूखेंगी। (4) प्यास बढ़ती है। (5) लक्ष्मी कम होगी। (6) परीक्षाएँ होंगी। (7) वाणी गूँजेगी। (8) गुफाएँ नष्ट होंगी। (9) कन्याएँ देर करेंगी। (10) बहिनें ठहरेंगी।

(घ) (1) पुत्री विरत हुई। (2) बहिन ने जंभाइ ली। (3) ननद लंगडाती है। (4) माता खाँसी।

———

पाठ 42

भूतकालिक कृदन्त (कर्तृवाच्य में प्रयोग)

प्राकृत में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त बनाये जाते हैं। भूतकालिक कृदन्त शब्द **विशेषण** का भी कार्य करते हैं। जब अकर्मक क्रियाओं में इस कृदन्त के प्रत्ययों को लगाया जाता है, तो भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग कर्तृवाच्य में किया जा सकता है। इन शब्दों के रूप कर्ता के अनुसार चलेंगे। कर्ता पुल्लिग, नपुंसकलिग, स्त्रीलिग में से जो भी होगा इनके रूप भी उसी के अनुसार बनेंगे। इन कृदन्तों के पुल्लिग में '**देव**' के समान, नपुंसकलिग में '**कमल**' के समान तथा स्त्रीलिग में '**कहा**' के अनुसार रूप चलेंगे। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिग बनाने के लिए कृदन्त में '**आ**' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

(क) क्रियाएँ

हस=हँसना, **णच्च**=नाचना, **जग्ग**=जागना, **हो**=होना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च	जग्ग	हो
अ/य	हसिअ/हसिय =हँसा	णच्चिअ/णच्चिय =नाचा	जग्गिअ/जग्गिय =जागा	होअ/होय =हुआ
त	हसित =हँसा	णच्चित=नाचा	जग्गित =जागा	होत =हुआ
द	हसिद =हँसा	णच्चिद=नाचा	जग्गिद =जागा	होद =हुआ

नोट – क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' हो जाता हैं।

(i) वाक्यों में प्रयोग—

(कर्ता पुल्लिग)	(एकवचन)	(कर्तृवाच्य)
नरिंदो	हसिओ/हसितो/हसिदो	=राजा हँसा।
नरिंदो	होओ/होतो/होदो	=राजा हुआ।

नोट—अर्द्धमागधी में नरिंद→नरिंदे भी होता है अतः वाक्य होगा—नरिंदे हसिए/हसिते ।

(ii) वाक्यों में प्रयोग

(कर्ता पुल्लिग)	(बहुवचन)	(कर्तृवाच्य)
नरिंदा	हसिआ/हसिया हसिता/हसिदा	=राजा हँसे ।
नरिंदा	होआ/होया होता/होदा	=राजा हुए ।

(ख) क्रियाएँ

वड्ढ=बढ़ना, **विअस**=खिलना, **हो**=होना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	वड्ढ	विअस	हो
अ/य	वड्ढिअ/वड्ढिय=बढ़ा	विअसिअ/विअसिय=खिला	होअ/होय=हुआ
त	वड्ढित =बढ़ा	विअसित =खिला	होत =हुआ
द	वड्ढिद =बढ़ा	विअसिद =खिला	होद =हुआ

नोट—क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है ।

(i) वाक्यों में प्रयोग

(कर्ता नपुंसकलिंग)	(एकवचन)	(कर्तृवाच्य)
कमलं	विअसिअं/विअसियं/वियसितं/विअसिदं	=कमल खिला ।
कमलं	होअं/होयं/होतं/होदं	=कमल हुआ ।

(ii) वाक्यों में प्रयोग

(कर्ता नपुंसकलिंग) (बहुवचन) (कर्तृवाच्य)

कमलाइं, कमलाइँ, कमलाणि } विअसिआइं/विअसिआइँ/विअसिआणि, विअसिताइं/विअसिताइँ/विअसिताणि, विअसिदाइं/विअसिदाइँ/विअसिदाणि =कमल खिले।

कमलाइं, कमलाइँ, कमलाणि } होआइं/होआइँ/होआणि, होताइं/होताइँ/होताणि, होदाइं/होदाइँ/होदाणि =कमल हुए।

(ग) क्रियाएँ

उट्ठ=उठना, सय=सोना, ठा=ठहरना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	उट्ठ	सय	ठा
अ/य	उट्ठिअ/उट्ठिय=उठा	सयिअ/सयिय=सोया	ठाअ/ठाय=ठहरा
त	उट्ठित =उठा	सयित =सोया	ठात =ठहरा
द	उट्ठिद =उठा	सयिद =सोया	ठाद =ठहरा

नोट—क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है।

(i) वाक्यों में प्रयोग

(कर्ता स्त्रीलिंग) (एकवचन) (कर्तृवाच्य)

ससा उट्ठिआ/उट्ठिया/उट्ठिता/उट्ठिदा =बहिन उठी।

ससा ठाआ/ठाया/ठाता/ठादा =बहिन ठहरी।

(ii) वाक्यों में प्रयोग

(कर्ता स्त्रीलिंग)	(बहुवचन)	(कर्तृवाच्य)
ससा	उट्ठिआ/उट्ठिया/उट्ठिता/उट्ठिदा	
ससाओ	उट्ठिआओ/उट्ठियाओ/उट्ठिताओ/उट्ठिदाओ	=बहिनें उठीं ।
ससाउ	उट्ठिआउ/उट्ठियाउ/उट्ठिताउ/उट्ठिदाउ	

ससा	ठाआ/ठाया/ठाता/ठादा	
ससाओ	ठाआओ/ठायाओ/ठाताओ/ठादाओ	=बहिनें ठहरीं ।
ससाउ	ठाआउ/ठायाउ/ठाताउ/ठादाउ	

नोट—स्त्रीलिंग में प्रयोग करने से पहिले भूतकालिक कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना जरूरी है । **'आ'** प्रत्यय जोड़ने से भूतकालिक कृदन्त शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं ।
जैसे—उट्ठिअ→उट्ठिआ, उट्ठिद→उट्ठिदा, उट्ठित→उट्ठिता । इनके रूप **'कहा'** की तरह चलेंगे ।

———

पाठ 43

वर्तमान कृदन्त

प्राकृत में 'हँसता हुआ', 'सोता हुआ', 'नाचता हुआ' आदि भावों को प्रकट करने के लिए वर्तमान-कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर वर्तमान कृदन्त बनाये जाते हैं। वर्तमान कृदन्त-शब्द **विशेषण** का कार्य करते हैं। अतः इनके **लिंग** (पुल्लिग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग), **वचन** (एक, बहु) और **कारक** (कर्ता, कर्म आदि) विशेष्य के अनुसार होंगे। इनके रूप पुल्लिग में '**देव**' के समान, नपुंसकलिंग में '**कमल**' के समान तथा स्त्रीलिंग में '**कहा**' के समान चलेंगे। वर्तमान कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए कृदन्त में '**आ**' प्रत्यय जोड़ा जाता है तो वह शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग बन जाता है।

(क) क्रियाएँ

हस=हँसना, **णच्च**=नाचना, **जग्ग**=जागना,

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च	जग्ग
न्त	हसन्त =हँसता हुआ	णच्चन्त =नाचता हुआ	जग्गन्त =जागता हुआ
माण	हसमाण=हँसता हुआ	णच्चमाण=नाचता हुआ	जग्गमाण=जागता हुआ

(i) वाक्यों में प्रयोग

विशेष्य : पुल्लिग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

	(वर्तमान कृदन्त)	(सभी कालों में)	
नरिंदो	हसन्तो/हसमाणो	उट्ठइ/आदि	=राजा हँसता हुआ उठता है। (वर्तमानकाल)
नरिंदो	हसन्तो/हसमाणो	उट्ठउ/आदि	=राजा हँसता हुआ उठे। (विधि एवं आज्ञा)

नरिंदो	हसन्तो/हसमाणो	(i) उट्ठीअ	=राजा हँसता हुआ उठा। (भूतकाल)
		(ii) उट्ठिओ/उट्ठिदो/आदि	=राजा हँसता हुआ उठा। (भूतकालिक कृदन्त)[3]
नरिंदो	हसन्तो/हसमाणो	उट्ठिहिइ/आदि	=राजा हँसता हुआ उठेगा। (भविष्यत्काल)

नोट–(1) यहां वर्तमान कृदन्त के रूप विशेष्य '**नरिंद**' की तरह चले हैं। यहां **नरिंद** प्रथमा विभक्ति में है तो कृदन्त भी प्रथमा विभक्ति में है। यदि '**नरिंद**' द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि विभक्तियों में हो, तो वर्तमान कृदन्त भी उन्हीं विभक्तियों में होगा। जैसे—हँसते हुए राजा को, हँसते हुए राजा के द्वारा, हँसते हुए राजा के लिए आदि। इन विभक्तियों को आगे समझाया जायेगा।

(2) **अर्द्धमागधी** में प्रथमा एकवचन में **नरिंद→नरिंदे** भी होता है, तो वर्तमान कृदन्त का रूप होगा—हसन्ते, हसमाणे। अतः वाक्य होगा—
नरिंदे हसन्ते/हसमाणे उट्ठइ/आदि (वर्तमानकाल)। अन्य कालों में भी इसी प्रकार बनाया जा सकता है।

(ii) वाक्यों में प्रयोग

विशेष्य : पुल्लिग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

	(वर्तमानकृदन्त)	(सभी कालों में)	
नरिंदा	हसन्ता/हसमाणा	उट्ठन्ति/आदि	=राजा हँसते हुए उठते हैं। (वर्तमानकाल)
नरिंदा	हसन्ता/हसमाणा	उट्ठन्तु/आदि	=राजा हँसते हुए उठें। (विधि एवं आज्ञा)
नरिंदा	हसन्ता/हसमाणा	(i) उट्ठीअ	=राजा हँसते हुए उठे। (भूतकाल)
		(ii) उट्ठिआ	=राजा हँसते हुए उठे। (भूतकालिक कृदन्त)[3]
नरिंदा	हसन्ता/हसमाणा	उट्ठिहिन्ति/आदि	=राजा हँसते हुए उठेंगे। (भविष्यत्काल)

(ख) क्रियाएँ

वड्ढ=बढ़ना, **विअस**=खिलना,

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	वड्ढ	विअस
न्त	वड्ढन्त =बढ़ता हुआ	विअसन्त =खिलता हुआ
माण	वड्ढमाण=बढ़ता हुआ	विअसमाण=खिलता हुआ

(i) वाक्यों में प्रयोग

विशेष्य : नपुंसकलिंग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

	(वर्तमानकृदन्त)	(सभी कालों में)	
कमलं	विअसन्तं/विअसमाणं	सोहइ/आदि	=कमल खिलता हुआ शोभता है। (वर्तमानकाल)
कमलं	विअसन्तं/विअसमाणं	सोहउ/आदि	=कमल खिलता हुआ शोभे। (विधि एवं आज्ञा)
कमलं	विअसन्तं/विअसमाणं	(i) सोहीअ	=कमल खिलता हुआ शोभा। (भूतकाल)
		(ii) सोहिअं/आदि	=कमल खिलता हुआ शोभा। (भूतकालिक कृदन्त)[3]
कमलं	विअसन्तं/विअसमाणं	सोहिहिइ/आदि	=कमल खिलता हुआ शोभेगा। (भविष्यत्काल)

(ii) वाक्यों में प्रयोग

विशेष्य : नपुंसकलिंग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

	(वर्तमानकृदन्त)	(सभी कालों में)	
कमलाइं **कमलाइँ** **कमलाणि**	विअसताइं/विअसंताइँ विअसंताणि	सोहन्ति/आदि	=कमल खिलते हुए शोभते हैं। (वर्तमानकाल)

कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसंताइं/विअसंताइँ विअसंताणि	सोहन्तु/आदि	=कमल खिलते हुए शोभें । (विधि एवं आज्ञा)
कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसंताइं/विअसंताइँ विअसंताणि	(i) सोहीअ (ii) सोहिआइं/सोहिआइँ/सोहिआणि	=कमल खिलते हुए शोभे । (भूतकाल) =कमल खिलते हुए शोभे । (भूतकालिक कृदन्त)[3]
कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	विअसंताइं/विअसंताइँ विअसंताणि	सोहिहिन्ति/आदि	=कमल खिलते हुए शोभेंगे । (भविष्यत्काल)

(ग) क्रियाएँ

णच्च=नाचना **सय**=सोना,

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	णच्च	सय
न्त	णच्चन्त =नाचता हुआ	सयन्त =सोता हुआ
माण	णच्चमाण=नाचता हुआ	सयमाण=सोता हुआ

(i) वाक्यों में प्रयोग

नोट—सर्वप्रथम कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना चाहिए । **'आ'** प्रत्यय जोड़ें—णच्चन्ता, सयन्ता, णच्चमाणा, सयमाणा, अब इनके रूप **'कहा'** की तरह चलेंगे । (स्त्रीलिंग बनाने के लिए **'ई'** प्रत्यय भी जोड़ा जा सकता है—णच्चन्ती, सयन्ती, णच्चमाणी, सयमाणी, तब इसके रूप **'लच्छी'** की तरह चलेंगे ।)

विशेष्य : स्त्रीलिंग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

(वर्तमान कृदन्त) (सभी कालों में)

ससा	णच्चन्ता/णच्चमाणा	थक्कइ/आदि	=बहिन नाचती हुई थकती है। (वर्तमानकाल)
ससा	णच्चन्ता/णच्चमाणा	थक्कउ/आदि	=बहिन नाचती हुई थके। (विधि एवं आज्ञा)
ससा	णच्चन्ता/णच्चमाणा	(i) थक्कीअ	=बहिन नाचती हुई थकी। (भूतकाल)
		(ii) थक्किआ/थक्किदा	=बहिन नाचती हुई थकी। (भूतकालिक कृदन्त)[3]
ससा	णच्चन्ता/णच्चमाणा	थक्किहिइ/आदि	=बहिन नाचती हुई थकेगी। (भविष्यत्काल)

(ii) वाक्यों में प्रयोग

नोट—सर्वप्रथम वर्तमान कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना चाहिए। 'आ' प्रत्यय जोड़ें—णच्चन्ता, सयन्ता, णच्चमाणा, सयमाणा, अब इनके रूप 'कहा' की तरह चलेंगे। (स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ई' प्रत्यय भी जोड़ा जा सकता है—णच्चन्ती, सयन्ती, णच्चमाणी, सयमाणी, तब इनके रूप **लच्छी** की तरह चलेंगे)।

विशेष्य : स्त्रीलिंग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

(वर्तमान कृदन्त) (सभी कालों में)

ससा ससाओ ससाउ	णच्चन्ता/णच्चमाणा णच्चन्ताओ/णच्चमाणाओ णच्चन्ताउ/णच्चमाणाउ	थक्कन्ति/आदि	=बहिनें नाचती हुई थकती हैं। (वर्तमानकाल)
ससा ससाओ ससाउ	णच्चन्ता/णच्चमाणा णच्चन्ताओ/णच्चमाणाओ णच्चन्ताउ/णच्चमाणाउ	थक्कन्तु/आदि	=बहिनें नाचती हुई थकें। (विधि एवं आज्ञा)

ससा ससाओ ससाउ	णच्चन्ता/णच्चमाणा णच्चन्ताओ/णच्चमाणाओ णच्चन्ताउ/णच्चमाणाउ	(i) थक्कीअ (ii) थक्किआ/थक्किआओ/ थक्किआउ	=बहिनें नाचती हुई थकीं। (भूतकाल) =बहिनें नाचती हुई थकीं। (भूतकालिक कृदन्त)[3]
ससा ससाओ ससाउ	णच्चन्ता/णच्चमाणा णच्चन्ताओ/णच्चमाणाओ णच्चन्ताउ/णच्चमाणाउ	थक्किहिन्ति/आदि	=बहिनें नाचती हुई थकेंगी। (भविष्यत्काल)

1. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

2. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

3. भूतकाल के भाव को प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग किया जाता है।

———

पाठ 44

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए (भूतकाल के लिए भूतकालिक क्रिया और भूतकालिक कृदन्त दोनों का प्रयोग कीजिए)—

(क) (1) पुत्र शरमाता हुआ बैठता है। (2) कुत्ता भोंकता हुआ भागता है। (3) दादा दुःखी होता हुआ सोया। (4) मित्र प्रयत्न करता हुआ प्रसन्न हुआ। (5) बालक डरता हुआ रोता है। (6) वस्त्र जलता हुआ नष्ट हो जायेगा। (7) राक्षस काँपते हुए बैठते हैं। (8) समुद्र फैलते हुए सूखेंगे। (9) पोते लड़ते हुए काँपे। (10) ऊँट नाचते हुए थकते हैं। (11) पुत्र गिड़गिड़ाता हुआ बैठा। (12) मनुष्य हँसता हुआ जीवे। (13) पिता खुश होता हुआ प्रयास करे। (14) राक्षस छटपटाता हुआ मरा। (15) पानी टपकता हुआ सूखा।

(ख) (1) लकड़ी जलती हुई नष्ट होती है। (2) नागरिक प्रयास करता हुआ जिया। (3) वैराग्य बढ़ता हुआ शोभता है। (4) विमान उड़ता हुआ गिरा। (5) राज्य लड़ते हुए नष्ट होते हैं। (6) सदाचार बढ़ता हुआ खिलता है। (7) शासन भूल करता हुआ डरता है। (8) सत्य सिद्ध होता हुआ शोभेगा। (9) कर्म गलते हुए छूटते हैं। (10) गठरियाँ लुढ़कती हुई पड़ीं।

(ग) (1) पुत्री प्रसन्न होती हुई उठी। (2) श्रद्धा बढ़ती हुई शोभती है। (3) पत्नी अफसोस करती हुई सोती है। (4) माता उत्साहित होती हुई बैठती है। (5) नर्मदा फैलती हुई सूखी। (6) झोंपड़ियाँ जलती हुई नष्ट हुईं। (7) प्रतिष्ठा बढ़ती हुई शोभती है। (8) महिलाएँ अफसोस करती हुई घूमती हैं। (9) वाणी प्रकट होती हुई सिद्ध हुई। (10) घास जलता हुआ नष्ट हुआ

जल=जलना

———

पाठ 45

भूतकालिक कृदन्त (भाववाच्य में प्रयोग)

संज्ञाएँ		सर्वनाम
अकारान्त पुल्लिग	नरिंद	अम्ह→अहं/हं/अम्मि (पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
अकारान्त नपुंसकलिंग	कमल	तुम्ह→तुमं/तुं/तुह (पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
आकारान्त स्त्रीलिंग	ससा	त→सो (पुरुष) (पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, प्रथमा एकवचन)
		ता→सा (स्त्री) (पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, प्रथमा एकवचन)

क्रियाएँ

हस=हँसना, जग्ग=जागना

विअस=खिलना, वड्ढ=बढ़ना

(i) तृतीया एकवचन	नपुंसकलिंग एकवचन	
नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=राजा के द्वारा हँसा गया।
कमलेण/कमलेणं	विअसिअं/विअसिदं/विअसियं/विअसितं	=कमल के द्वारा खिला गया।
ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिअं/जग्गिदं/जग्गियं/जग्गितं	=बहिन के द्वारा जागा गया।
मइ/मए/मे/ममए	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=मेरे द्वारा हँसा गया।
तइ/तए/ /तुमे/तुमए	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=तुम्हारे द्वारा हँसा गया।
तेण/तेणं	हसिअं/हसिद/हसियं/हसितं	=उसके द्वारा हँसा गया।
ताए/तीए	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=उस (स्त्री) के द्वारा हँसा गया।

(ii) तृतीया बहुवचन	नपुंसकलिंग एकवचन	
नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=राजाओं द्वारा हँसा गया।
कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ	विअसिअं/विअसिदं/विअसियं/विअसितं	=कमलों द्वारा खिला गया।
ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ	जग्गिअं/जग्गिदं/जग्गियं/जग्गितं	=बहिनों द्वारा जागा गया।
अम्हेहि/अम्हाहिं	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=हमारे द्वारा हँसा गया।
तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=तुम्हारे द्वारा हँसा गया।
तेहि/तेहिं	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=उनके द्वारा हँसा गया।
ताहि/ताहि/तीहिं	हसिअं/हसिदं/हसियं/हसितं	=उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा गया।

---

1. (क) नरिंदेण/नरिंदेणं (अकारान्त पुल्लिग—तृतीया **एकवचन**)

कमलेण/कमलेणं (अकारान्त नपुंसकलिंग—तृतीया **एकवचन**)

ससाए/ससाइ/ससाअ (आकारान्त स्त्रीलिंग—तृतीया **एकवचन**)

मइ/मए/मे/ममए [उत्तम पुरुष सर्वनाम—तृतीया **एकवचन** (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)]

तइ/तए/ /तुमे/तुमए [मध्यम पुरुष सर्वनाम—तृतीया **एकवचन** (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)]

तेण/तेणं [अन्य पुरुष सर्वनाम—तृतीया **एकवचन** (पुल्लिग)]

ताए/तीए [अन्य पुरुष सर्वनाम—तृतीया **एकवचन** (स्त्रीलिंग)]

तृतीया एकवचन बनाने के लिए अकारान्त पुल्लिग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों में '**ण**' और '**णं**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं, **ण** और **णं** जोड़ने पर अन्त्य '**अ**' का '**ए**' हो जाता है—नरिंदेण, नरिंदेणं, कमलेण, कमलेणं। आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के एकवचन में '**ए**', '**इ**' और '**अ**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं—ससाए, ससाइ, ससाअ। अन्य पुरुष सर्वनाम के लिए भी यही नियम समझ लेना चाहिए। बाकी उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनाम को इसी प्रकार याद कर लेना चाहिए।

(ख) नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ (अकारान्त पुल्लिग—तृतीया **बहुवचन**)
कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ (अकारान्त नपुंसकलिग—तृतीया **बहुवचन**)
ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ (आकारान्त स्त्रीलिंग—तृतीया **बहुवचन**)
अम्हेहि/अम्हाहि [उत्तम पुरुष सर्वनाम - तृतीया **बहुवचन** (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)]
तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं [मध्यम पुरुष सर्वनाम—तृतीया **बहुवचन** (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)]
तेहिं/तेहि [अन्य पुरुष सर्वनाम—तृतीया **बहुवचन** (पुल्लिग)]
ताहिं/ताहि/तीहिं [अन्य पुरुष सर्वनाम—तृतीया **बहुवचन** (स्त्रीलिंग)]

तृतीया बहुवचन बनाने के लिए अकारान्त पुल्लिग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दो में तथा आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में **हि, हिं, हिँ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं, इनके जोड़ने पर **अकारान्त** शब्दों का अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है—नरिंदेहि, नरिंदेहिं, नरिंदेहिँ तथा आकारान्त में कोई परिवर्तन नहीं होता—ससाहि, ससाहिं, ससाहिँ ।

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के सर्वनामों के **तृतीया बहुवचन** को उपर्युक्त प्रकार से याद कर लेना चाहिए ।

(ग) **अर्द्धमागधी** में उत्तम पुरुष तृतीया बहुवचन के लिए **अम्हेहिं** काम में आता है (पिशल पृष्ठ, 614) ।

2. यदि क्रिया अकर्मक होती है तो भूतकालिक कृदन्त भाववाच्य में भी प्रयुक्त होता है । भूतकालिक कृदन्त से भाववाच्य बनाने के लिए कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त में सदैव 'नपुंसकलिंग एकवचन' ही रहेगा ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं तथा सभी वाक्य भाववाच्य के हैं ।

पाठ 46

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(1) पानी द्वारा झरा गया। (2) बादलों द्वारा गरजा गया। (3) मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया। (4) अपयश द्वारा फैला गया। (5) समुद्रों द्वारा सूखा गया। (6) अग्नि द्वारा जला गया। (7) मृत्यु द्वारा नष्ट हुआ गया। (8) हमारे द्वारा काँपा गया। (9) तुम्हारे द्वारा घूमा गया। (10) उसके द्वारा खेला गया। (11) विमान द्वारा उड़ा गया। (12) गठरी द्वारा लुढ़का गया। (13) लकड़ियों द्वारा जला गया। (14) सूर्य द्वारा उगा गया। (15) मनुष्य द्वारा जन्म लिया गया। (16) कुत्तों द्वारा भोंका गया। (17) कुओं द्वारा सूखा गया। (18) राक्षस द्वारा मरा गया। (19) रत्नों द्वारा शोभा गया। (20) सिंहों द्वारा गरजा गया। (21) परीक्षा द्वारा हुआ गया। (22) कन्याओं द्वारा छिपा गया। (23) महिलाओं द्वारा शान्त हुआ गया। (24) बेटी द्वारा खाँसा गया। (25) प्रतिष्ठा द्वारा कम हुआ गया। (26) बुढ़ापे द्वारा बढ़ा गया। (27) सुख द्वारा गला गया। (28) धान द्वारा पैदा हुआ गया। (29) भूख द्वारा शान्त हुआ गया। (30) राज्यों द्वारा लड़ा गया। (31) उनके द्वारा थका गया। (32) तुम्हारे द्वारा डरा गया। (33) उन (स्त्रियों) द्वारा खेला गया। (34) तुम दोनों के द्वारा नहाया गया। (35) उस (स्त्री) के द्वारा खुश हुआ गया।

पाठ 47

क्रियाएँ और उनका भाववाच्य में प्रयोग

संज्ञाएँ		सर्वनाम
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद**	**अम्ह→अहं/हं/अम्मि** (पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
अकारान्त नपुंसकलिंग	**कमल**	**तुम्ह→तुमं/तुं/तुह** (पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
आकारान्त स्त्रीलिंग	**ससा**	**त→सो** (पुरुष), **ता→सा** (स्त्री) (पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, प्रथमा एकवचन)

क्रियाएँ

हस=हँसना, **जग्ग**=जागना
वड्ढ=बढ़ना, **विअस**=खिलना

उपर्युक्त क्रियाएँ अकर्मक हैं। अकर्मक क्रियाएँ कर्तृवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होती हैं। अकर्मक क्रियाओं का कर्तृवाच्य में प्रयोग बताया जा चुका है। अकर्मक क्रिया से भाववाच्य बनाने के लिए '**इज्ज**', '**ईअ/ईय**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) हो जाता है और क्रिया में भाववाच्य के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् '**अन्य पुरुष एकवचन**' (**अ.पु.ए.**) के प्रत्यय (**इ/ए/दि/दे**) लगा दिए जाते हैं। भाववाच्य वर्तमानकाल, भूतकाल तथा विधि एवं आज्ञा में बनाया जाता है। भविष्यत्काल भाववाच्य में क्रिया का भविष्यत्काल कर्तृवाच्य का रूप ही रहता है, उसमें 'इज्ज' आदि प्रत्यय नहीं लगते। भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग भाववाच्य में किया जा सकता है।

भाववाच्य के प्रत्यय	हस	वर्तमानकाल (अ.पु.ए.)	भूतकाल (अ.पु.ए.)	विधि एवं आज्ञा (अ.पु.ए.)
इज्ज	हसिज्ज	हसिज्जइ, हसिज्जदि आदि	हसिज्जईअ (हसिज्जीअ)	हसिज्जउ, हसिज्जदु
ईअ/ईय	हसीअ/हसीय	हसीअइ/हसीअदि	हसीअईअ (हसीईअ)	हसीअउ/हसीअदु

तृतीया एकवचन (संज्ञा) **वर्तमानकाल**

नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=राजा के द्वारा हँसा जाता है।
कमलेण/कमलेणं	विअसिज्जइ/आदि विअसीअइ/आदि	=कमल द्वारा खिला जाता है।
ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिज्जइ/आदि जग्गीअइ/आदि	=बहिन के द्वारा जागा जाता है।

तृतीया एकवचन (सर्वनाम)

मइ/मए/मे/ममए	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=मेरे द्वारा हँसा जाता है।
तइ/तए/ /तुमे/तुमए	हसिज्जइ/आदि हसीअइ आदि	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाता है।
तेण/तेणं	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=उस (पुरुष)के द्वारा हँसा जाता है।
ताए/तीए	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाता है।

तृतीया एकवचन (संज्ञा) **विधि एवं आज्ञा**

नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=राजा के द्वारा हँसा जाए।
कमलेण/कमलेणं	विअसिज्जउ/विअसिज्जदु विअसीअउ/विअसीअदु	=कमल द्वारा खिला जाए।

ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिज्जउ/जग्गिज्जदु जग्गीअउ/जग्गीअदु	=बहिन द्वारा जागा जाए।

तृतीया एकवचन (सर्वनाम)

मइ/मए/मे/ममए	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=मेरे द्वारा हँसा जाए।
तइ/तए/ /तुमे/तुमए	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाए।
तेण/तेणं	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=उस (पुरुष) के द्वारा हँसा जाए।
ताए/तीए	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाए।

तृतीया एकवचन (संज्ञा) **भूतकाल**

नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिज्जईअ (हसिज्जीअ) हसीअईअ (हसीईअ)	=राजा के द्वारा हँसा गया।
कमलेण/कमलेणं	विअसिज्जईअ (विअसिज्जीअ) विअसीअईअ (विअसीईअ)	=कमल द्वारा खिला गया।
ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिज्जीअ जग्गीअईअ	=बहिन द्वारा जागा गया।

तृतीया एकवचन (सर्वनाम)

मइ/मए/मे/ममए	हसिज्जीअ/हसीअईअ	=मेरे द्वारा हँसा गया।

तइ/तए/ :/तुमे/तुमए	हसिज्जीअ/हसीअईअ	=तुम्हारे द्वारा हँसा गया ।
तेण/तेणं	हसिज्जीअ/हसीअईअ	=उस (पुरुष) के द्वारा हँसा गया ।
ताए/तीए	हसिज्जीअ/हसीअईअ	=उस (स्त्री) के द्वारा हँसा गया ।

नोट—(i) भाववाच्य में भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग किया जाता है । [इसके लिए देखें पाठ–45 (ii)] ।

(ii) ठा आदि क्रियाओं के रूप होंगे—ठाइज्जसी/ठाईअसी, ठाइज्जही/ठाईअही, ठाइज्जहीअ/ठाईअहीअ ।

तृतीया एकवचन (संज्ञा) **भविष्यत्काल**

नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिहिइ/आदि	=राजा के द्वारा हँसा जायेगा ।

नोट—इसी प्रकार अन्य वाक्य बना लेने चाहिए । **हसिहिइ** कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है । भविष्यत्काल के भाववाच्य में यही रूप काम में आता है । इसमें 'इज्ज' आदि प्रत्यय नहीं जुड़ते ।

तृतीया बहुवचन (संज्ञा) **वर्तमानकाल**

नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=राजाओं के द्वारा हँसा जाता है ।
कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ	विअसिज्जइ/आदि विअसीअइ/आदि	=कमलों द्वारा खिला जाता है ।
ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ	जग्गिज्जइ/आदि जग्गीअइ/आदि	=बहिनों द्वारा जागा जाता है ।

तृतीया बहुवचन (सर्वनाम)

अम्हेहि/अम्हाहि	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=हमारे द्वारा हँसा जाता हैं ।

तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाता है।
तेहिं/तेहि	हसिज्जइ/आदि हसिअइ/आदि	=उन (पुरुषों) के द्वारा हँसा जाता है।
ताहिं/ताहि/तीहिं	हसिज्जइ/आदि हसीअइ/आदि	=उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाता है।

तृतीया बहुवचन (संज्ञा) **विधि एवं आज्ञा**

नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=राजाओं के द्वारा हँसा जाए।
कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ	विअसिज्जउ/विअसिज्जदु विअसीअउ/विअसीअदु	=कमलों द्वारा खिला जाए।
ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ	जग्गिज्जउ/जग्गिज्जदु जग्गीअउ/जग्गीअदु	=बहिनों द्वारा जागा जाए।

तृतीया बहुवचन (सर्वनाम)

अम्हेहि/अम्हाहि	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=हमारे द्वारा हँसा जाए।
तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाए।
तेहिं/तेहि	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=उन (पुरुषों) के द्वारा हँसा जाए।

ताहिं/ताहि/तीहिं	हसिज्जउ/हसिज्जदु हसीअउ/हसीअदु	=उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाए ।

तृतीया-बहुवचन (संज्ञा) **भूतकाल**

नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिज्जईअ (हसिज्जीअ) हसीअईअ (हसीईअ)	=राजाओं द्वारा हँसा गया ।

इसी प्रकार अन्य वाक्य बनेंगे ।

तृतीया बहुवचन (सर्वनाम)

अम्हेहि/अम्हाहि	हसिज्जईअ (हसिज्जीअ) हसीअईअ (हसीईअ)	=हमारे द्वारा हँसा गया ।

इसी प्रकार अन्य वाक्य बनेंगे ।

नोट—(i) भाववाच्य में भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग किया जाता है । [इसके लिए देखें पाठ-45 (ii) ।]

(ii) **'ठा'** आदि क्रियाओं के रूप होंगे—ठाइज्जसी/ठाईअसी, ठाइज्जही/ठाईअही, ठाइज्जहीअ/ठाईअहीअ ।

तृतीया बहुवचन (संज्ञा) **भविष्यत्काल**

नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिहिइ/आदि	=राजाओं के द्वारा हँसा जायेगा ।

इसी प्रकार अन्य वाक्य बनेंगे ।

तृतीया बहुवचन (सर्वनाम)

अम्हेहि/अम्हाहि	हसिहिइ/आदि	=हमारे द्वारा हँसा जायेगा ।

इसी प्रकार अन्य वाक्य बनेंगे ।

नोट—भविष्यत्काल के भाववाच्य में ये ही रूप काम में आते हैं। इनमें इज्ज/ईअ आदि प्रत्यय नहीं लगते।

---

1. पाठ–45 का पाद टिप्पण 1 (क) देखें।

2. पाठ–45 का पाद टिप्पण 1 (ख) देखें।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं तथा वाक्य भाववाच्य के हैं।

पाठ 48

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(1) विमान द्वारा उड़ा जाता है। (2) पानी द्वारा भरा जाता है। (3) मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। (4) समुद्रों द्वारा सूखा जाता है। (5) लकड़ी द्वारा जला जाता है। (6) हमारे द्वारा काँपा जाता है। (7) उनके द्वारा खेला जाता है। (8) गठरी द्वारा लुढ़का जाता है। (9) सिंहों द्वारा गरजा जाता है। (10) कन्याओं द्वारा छिपा जाता है।

(11) उनके द्वारा खेला जाए। (12) मनुष्यों द्वारा जन्म लिया जाए। (13) महिलाओं द्वारा शान्त हुआ जाए। (14) राज्यों द्वारा लड़ा जाए। (15) पुत्रियों द्वारा थका जाए। (16) माता द्वारा खुश हुआ जाए। (17) शिक्षा द्वारा फैला जाए। (18) श्रद्धा द्वारा बढ़ा जाए। (19) परीक्षा द्वारा हुआ जाए। (20) उन (स्त्रियों) के द्वारा शरमाया जाए।

(21) विमान द्वारा उड़ा जायेगा। (22) राज्यों के द्वारा लड़ा जायेगा। (23) उनके द्वारा उछला जायेगा। (24) कुत्तों द्वारा भोंका जायेगा। (25) बीजों द्वारा उगा जायेगा।

(26) राज्य द्वारा लड़ा गया। (27) मनुष्यों द्वारा भागा गया। (28) माता द्वारा प्रसन्न हुआ गया। (29) उनके द्वारा खाँसा गया। (30) कुत्ते द्वारा भोंका गया।

पाठ 49

विधि कृदन्त (भाववाच्य में प्रयोग)

प्राकृत में 'हँसा जाना चाहिए', 'जागा जाना चाहिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। क्रिया में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर विधि कृदन्त बनाये जाते हैं। विधि कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग करने के लिए कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त में सदैव **नपुंसकलिंग एकवचन** ही रहेगा। विधि कृदन्त का यह रूप **'कमल'** (नपुंसकलिंग) शब्द की तरह चलेगा। विधि कृदन्त कर्तृवाच्य में प्रयुक्त नहीं होता है।

संज्ञाएँ		सर्वनाम	
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद**	**अम्ह→अहं/हं/अम्मि**	(पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन)
अकारान्त नपुंसकलिंग	**कमल**	**तुम्ह→तुमं/तुं/तुह**	(पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, एकवचन)
आकारान्त स्त्रीलिंग	**ससा**	**त→सो**(पुरुष) **ता→सा**(स्त्री)	(पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन)

क्रियाएँ

हस=हँसना, **जग्ग**=जागना, **विअस**=खिलना

विधि कृदन्त के प्रत्यय[1]	हस	जग्ग	विअस
अव्व/यव्व	हसिअव्व/हसियव्व हसेअव्व/हसेयव्व	जग्गिअव्व/जग्गियव्व जग्गेअव्व/जग्गेयव्व	विअसिअव्व/वियसियव्व विअसेअव्व/विअसेयव्व
तव्व	हसितव्व/हसेतव्व	जग्गितव्व/जग्गेतव्व	विअसितव्व/विअसेतव्व
दव्व	हसिदव्व/हसेदव्व	जग्गिदव्व/जग्गेदव्व	विअसिदव्व/विअसेदव्व
णीय	हसणीय	जग्गणीय	विअसणीय

(अकारान्त क्रियाओं में लगता है)

1. पिशल, प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृष्ठ 811, 812।

(i) तृतीया एकवचन (संज्ञा) — नपुंसकलिंग एकवचन

नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलेण/कमलेणं	विअसिअव्वं/विअसियव्वं/विअसितव्वं/ विअसिदव्वं/विअसणीयं विअसेअव्वं/विअसेयव्वं/वियसेतव्वं विअसेदव्वं	=कमल द्वारा खिला जाना चाहिए।
ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिअव्वं/जग्गियव्वं/जग्गितव्वं/ जग्गिदव्वं/जग्गणीयं जग्गेअव्वं/जग्गेयव्वं/जग्गेतव्वं जग्गेदव्वं	=बहिन द्वारा जागा जाना चाहिए।

तृतीया एकवचन (सर्वनाम)

मइ/मए/मे/ममए	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तइ/तए/ /तुमे/तुमए	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तेण/तेणं	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=उस (पुरुष) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

ताए/तीए	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

(ii) **तृतीया बहुवचन (संज्ञा)** **नपुंसकलिंग एकवचन**

नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=राजाओं द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ	विअसिअव्वं/विअसियव्वं/विअसितव्वं/ विअसिदव्वं/विअसणीयं विअसेअव्वं/विअसेयव्वं/विअसेतव्वं विअसेदव्वं	=कमलों द्वारा खिला जाना चाहिए।
ससाए/ससाइ/ससाअ	जग्गिअव्वं/जग्गियव्वं/जग्गितव्वं/ जग्गिदव्वं/जग्गणीयं जग्गेअव्वं/जग्गेयव्वं/जग्गेतव्वं/ जग्गेदव्वं	=बहिनों द्वारा जागा जाना चाहिए।

तृतीया बहुवचन (सर्वनाम) **नपुंसकलिंग एकवचन**

अम्हेहि/अम्हाहि	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=हमारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।

तेहिं/तेहि	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=उन (पुरुषों) के द्वारा हँसा जाना चाहिए ।
ताहिं/ताहि/तीहिं	हसिअव्वं/हसियव्वं/हसितव्वं/ हसिदव्वं/हसणीयं हसेअव्वं/हसेयव्वं/हसेतव्वं/ हसेदव्वं	=उन(स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाना चाहिए ।

---

1. पाठ–45 का पादटिप्पण 1(क) देखें ।

2. पाठ–45 का पादटिप्पण 1(ख) देखें ।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएं अकर्मक हैं तथा वाक्य भाववाच्य में हैं ।

4. अव्व/यव्व/तव्व/दव्व प्रत्यय लगने के पश्चात् **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है । आकारान्त आदि क्रियाओं में भी ये ही प्रत्यय जोड़े जाते हैं—ठायव्व, ठादव्व, ठातव्व, होयव्व, होदव्व, नेयव्व, नेदव्व आदि ।

5. **अर्द्धमागधी** में विधि कृदन्त के लिए **णिज्ज** प्रत्यय भी अकारान्त क्रियाओं में जोड़ा जाता है—हसणिज्ज, जग्गणिज्ज आदि । (घाटगे, पृष्ठ 144; पिशल, पृष्ठ 812) ।

———

पाठ 50

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(1) राज्य द्वारा लड़ा जाना चाहिए। (2) श्रद्धा द्वारा बढ़ा जाना चाहिए। (3) उनके द्वारा खेला जाना चाहिए। (4) माता द्वारा खुश हुआ जाना चाहिए। (5) मनुष्यों द्वारा जन्म लिया जाना चाहिए। (6) उन (स्त्रियों) द्वारा शरमाया जाना चाहिए। (7) कुत्ते द्वारा भोंका जाना चाहिए। (8) स्त्रियों द्वारा नाचा जाना चाहिए। (9) कन्याओं द्वारा छिपा जाना चाहिए। (10) मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। (11) लकड़ी द्वारा जला जाना चाहिए। (12) सूर्य द्वारा उगा जाना चाहिए।(13) सिंह द्वारा गरजा जाना चाहिए।(14) उसके द्वारा खेला जाना चाहिए। (15) मेरे द्वारा कूदा जाना चाहिए। (16) तुम दोनों के द्वारा उत्साहित हुआ जाना चाहिए। (17) हमारे द्वारा डरा जाना चाहिए। (18) राक्षस द्वारा मरा जाना चाहिए। (19) बीजों द्वारा उगा जाना चाहिए। (20) विमान द्वारा उड़ा जाना चाहिए।

पाठ 51

संज्ञा शब्द द्वितीया एकवचन

	संज्ञाएं		द्वितीया एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद**	=राजा	नरिंदं
	करह	=ऊँट	करहं
	परमेसर	=परमेश्वर	परमेसरं
प्रकारान्त नपुंसकलिंग	**भोयण**	=भोजन	भोयणं
	तिण	=घास	तिणं
	रज्ज	=राज्य	रज्जं
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया**	=माता	मायं
	कहा	=कथा	कहं
	सिक्ख	=शिक्षा	सिक्खं

क्रियाएँ

रक्ख=रक्षा करना, **पाल**=पालना **सुण**=सुनना

चर=चरना, **पणम**=प्रणाम करना, **जाण**=जानना, समझना

खा=खाना

(i) **अकारान्त पुल्लिंग** **वर्तमानकाल**
(द्वितीया एकवचन)

नरिंदो परमेसरं पणमइ/पणमदि/आदि =राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है।

रज्जं नरिंदं रक्खइ/रक्खदि/आदि =राजा राज्य की रक्षा करता है।

माया नरिंदं पणमइ/पणमदि/आदि =माता राजा को प्रणाम करती है।

(ii) **अकारान्त नपुंसकलिंग** **वर्तमानकाल**

(द्वितीया एकवचन)

करहो	तिणं	चरइ/चरदि/आदि	=ऊँट घास चरता है।
नरिंदो	रज्जं	रक्खइ/रक्खदि/आदि	=राजा राज्य की रक्षा करता है।
माया	भोयणं	खाइ/खादि/आदि	=माता भोजन खाती है।

(iii) **आकारान्त स्त्रीलिंग** **वर्तमानकाल**

(द्वितीया एकवचन)

नरिंदो	मायं	पणमइ/पणमदि/आदि	=राजा माता को प्रणाम करता है।
रज्ज	सिक्खं	जाणइ/जाणदि/आदि	=राज्य शिक्षा को समझता है।
माया	कहं	सुणइ/सुणदि/आदि	=माता कथा सुनती है।

(iv) **पुरुषवाचक सर्वनाम**

(द्वितीया एकवचन)

अहं/हं/अम्मि	तुमं/तुं	पणमामि/आदि	=मैं तुमको प्रणाम करता हूँ।
तुमं/तुं/तुह	ममं/मं/मि	पालसि/आदि	=तुम मुझको पालते हो।
सो	तं	जाणइ/जाणदि/आदि	=वह उस (पुरुष) को जानता है।
सा	तं	जाणइ/जाणदि/आदि	=वह उस (स्त्री) को जानती है।
सो	तं	रक्खइ/रक्खदि/आदि	=वह उस (राज्य) की रक्षा करता है।

---

1. (i) अकारान्त पुल्लिग-नपुंसकलिंग शब्दों से **द्वितीया एकवचन** बनाने के लिए '·' (अनुस्वार) जोड़ा जाता है। जैसे—नरिंद→नरिंदं, रज्ज→रज्जं।

(ii) आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों से **द्वितीया एकवचन** बनाने के लिए भी '·' (अनुस्वार) जोड़ा जाता है, किन्तु अनुस्वार (·) जोड़ने पर **आ→अ** हो जाता है, अर्थात् दीर्घ शब्द ह्रस्व हो जाता है। जैसे—माया→मायं, कहा→कहं।

(iii) उत्तम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया एकवचन—**ममं/मं/मि**

मध्यम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया एकवचन—**तुमं/तुं**

अन्य पुरुष (पुल्लिग, स्त्री., नपुं.) सर्वनाम का द्वितीया एकवचन—**तं**

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं। सकर्मक क्रिया वह होती है जिसमें कर्ता की क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है। जैसे—'माता कथा सुनती है', इसमें कर्ता 'माता' की क्रिया 'सुनना' है। इसका प्रभाव 'कथा' पर पड़ता है, क्योंकि 'कथा' सुनी जाती है। अतः 'सुनना' क्रिया का कर्म 'कथा' है।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इसमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन होते हैं। संज्ञा वाक्यों में कर्ता अन्य पुरुष एकवचन में है, अतः क्रियाएँ भी अन्य पुरुष एकवचन की ही लगी हैं। सर्वनाम वाक्यों में क्रिया उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष बहुवचन के अनुरूप लगी है।

4. ऊपर वर्तमानकाल के वाक्य दिए गए हैं। द्वितीया एकवचन का प्रयोग करते हुए भविष्यत्काल, भूतकाल तथा विधि एवं आज्ञा के वाक्य भी बना लेने चाहिए। कर्ता एकवचन के स्थान पर **कर्ता बहुवचन का प्रयोग** करके भी **सभी कालों** में वाक्य बना लेने चाहिए।

———

पाठ 52

संज्ञा शब्द द्वितीया बहुवचन

	सज्ञाएँ	**द्वितीया बहुवचन**
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** =राजा	नरिंदा/नरिंदे
	करह =ऊँट	करहा/करहे
	परमेसर=परमेश्वर	परमेसरा/परमेसरे
अकारान्त नपुंसकलिंग	**भोयण** =भोजन	भोयणाइं/भोयणाइँ/भोयणाणि
	तिण =घास	तिणाइं/तिणाइँ/तिणाणि
	रज्ज =राज्य	रज्जाइं/रज्जाइँ/रज्जाणि
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** =माता	माया/मायाउ/मायाओ
	कहा =कथा	कहा/कहाउ/कहाओ
	सिक्खा =शिक्षा	सिक्खा/सिक्खाउ/सिक्खाओ

क्रियाएँ

रक्ख=रक्षा करना, **पाल**=पालना **सुण**=सुनना
चर=चरना, **पणम**=प्रणाम करना, **जाण**=जानना, समझना
खा=खाना

(i) **अकारान्त पुल्लिग वर्तमानकाल**
(द्वितीया बहुवचन)

नरिंदो परमेसरा/परमेसरे पणमइ/पणमदि/आदि=राजा परमेश्वरों(सिद्धों) को प्रणाम करता है।

रज्जं नरिंदा/नरिंदे रक्खइ/रक्खदि/आदि =राज्य राजाओं की रक्षा करता है।

माया नरिंदा/नरिंदे पणमइ/पणमदि/आदि=माता राजाओं को प्रणाम करती है।

(ii) **अकारान्त नपुंसकलिंग वर्तमानकाल**
(द्वितीया बहुवचन)

करहो तिणाइं/तिणाइँ/तिणाणि चरइ/चरदि/आदि =ऊँट (विभिन्न प्रकार के) घास चरता है।

नरिंदो	रज्जाइं/रज्जाइँ/रज्जाणि	रक्खइ/रक्खदि/आदि	=राजा राज्यों की रक्षा करता है।
माया	भोयणाइं/भोयणाइँ/भोयणाणि	खाइ/खादि/आदि	=माता (विभिन्न प्रकार) के भोजन खाती है।

(iii) **आकारान्त स्त्रीलिंग** (द्वितीया बहुवचन) **वर्तमानकाल**

नरिंदो	माया/मायाउ/आयाओ	पणमइ/पणमदि/आदि	=राजा माताओं को प्रणाम करता है।
रज्जं	सिक्ख/सिक्खाउ/सिक्खाओ	जाणइ/जाणदि/आदि	=राज्य शिक्षाओं को समझता हैं।
माया	कहा/कहाउ/कहाओ	सुणइ/सुणदि/आदि	=माता कथाओं को सुनती है।

(iv) **पुरुष वाचक सर्वनाम** (द्वितीया बहुवचन) **वर्तमानकाल**

अहं/हं/अम्मि	तुम्हे/तुज्झं/तुब्भे/भे	पणमामि/आदि	=मैं तुम (सब को) प्रणाम करता हूँ/करती हूँ।
तुमं/तुं/तुह	अम्हे/अम्ह/णे	पालसि/आदि	=तुम हम (तब को) पालते हो/पालती हो।
सो	ते ता	जाणइ/आदि	=वह उन (पुरुषों) को जानता है।
सा	ता/ताउ/ताओ	जाणइ/आदि	=वह उन (स्त्रियों) को जानती है।
सा	ताइं/ताइ/ताणि	रक्खइ/आदि	=वह उन (राज्यों) की रक्षा करती है।

---

1. (i) अकारान्त पुल्लिग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **'o'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, **'o'** प्रत्यय जोड़ने पर **अ** का **आ** और **ए** हो जाता है।
नरिंद→नरिंदा, नरिंदे।

(ii) अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **इं, इँ** और **णि** प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा इनके जोड़ने पर **अ** का **आ** हो जाता है।
रज्ज→रज्जाइं, रज्जाइ, रज्जाणि।

(iii) आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **o, उ, ओ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे—माया, मायाउ, मायाओ।

(iv) उत्तम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया बहुवचन—**अम्हे/अम्ह/णे**

मध्यम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया बहुवचन—**तुम्हे/तुज्झे/तुब्भे/भे**

अन्य पुरुष सर्वनाम का द्वितीया बहुवचन—(पुल्लिग)—**ते/ता**

(नपुंसकलिग) - **ताइं/ताइँ/ताणि**

(स्त्रीलिग)—**ता/ताउ, ताओ**

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं ।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

4. ऊपर वर्तमानकाल के वाक्य दिए गए हैं । **द्वितीया बहुवचन** का प्रयोग करते हुए भूतकाल, भविष्यत्काल तथा विधि एवं आज्ञा के वाक्य बना लेने चाहिए । कर्ता **एकवचन के स्थान** पर कर्ता बहुवचन का प्रयोग करके भी सभी कालों में वाक्य बना लेने चाहिए ।

———

पाठ 53

1. निम्नलिखित सकर्मक क्रियाओं को कर्तृवाच्य में प्रयोग कीजिए। यह प्रयोग वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्काल तथा विधि एवं आज्ञा में हो।

अच्च	=पूजा करना,	**गरह**	=निन्दा करना
रोक्क	=रोकना,	**गवेस**	=खोज करना
उग्घाड	=खोलना, प्रकट करना,	**चक्ख**	=चखना
उवयर	=उपकार करना,	**चिण**	=इकट्ठा करना
उप्पाड	=उपाड़ना, उन्मूलन करना,	**चोप्पड**	=स्निग्ध करना
कट्ट	=काटना,	**छड्ड**	=छोड़ना
कलंक	=कलंकित करना,	**छल**	=ठगना
कोक्क	=बुलाना,	**छुव**	=स्पर्श करना
खण	=खोदना,	**देक्ख**	=देखना
छोड	=छोड़ना,	**धोअ**	=धोना
छोल्ल	=छीलना,	**पीस**	=पीसना
जिम	=जीमना,	**पुक्कर**	=पुकारना
ढक्क	=ढकना,	**फाड**	=फाड़ना
तोड	=तोड़ना,	**कुट्ट**	=कूटना

2. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) पिता पुत्र की निन्दा करता है। (2) दादा पोते को बुलाता है। (3) परमेश्वर संसार को देखता है। (4) देवर वस्त्र धोता है। (5) राजा गर्व को छोड़े। (6) मित्र उसको पुकारे। (7) राम परमेश्वर की पूजा करे। (8) कुत्ता राक्षस को रोकता है। (9) राजा रत्नों की खोज करता है। (10) मनुष्य व्रतों को छोड़ते हैं। (11) वह बालक को ठगता है। (12) तुम सिंह को देखते हो। (13) मैं उसको स्पर्श करता हूँ। (14) वे उनको कलंकित करते हैं। (15) वह वस्त्रों को फाड़ता है। (16) दुःख सुख को रोकता है। (17) मित्र सिंहों को देखता है। (18) मामा शास्त्रों को स्पर्श करता है। (19) हनुमान उसका उपकार करता है। (20) हम सूर्य को ढकते हैं।

(ख) (1) वह खेत खोदेगा। (2) तुम भोजन जीमोगे। (3) वह लकड़ी छीले। (4) वह व्यसन छोड़े। (5) तुम दूध चखो। (6) वे गठरी काटेंगे। (7) हम धान कूटेंगे। (8) वे जंगल काटते हैं। (9) वह बीजों को पीसता है।

(ग) (1) राम सीता को बुलाता है। (2) मैं कन्या को पुकारता हूँ। (3) महिला गड्ढा खोदती है। (4) बहिन पुत्रियों को देखती है। (5) कन्या छोटे घड़े को उघाड़ती है। (6) पत्नी गड्ढे को ढकती है। (7) हम गंगा की पूजा करते हैं। (8) भूख प्यास को रोकती है। (9) तृष्णा निद्रा को काटती है। (10) वह मदिरा छोड़े।

(घ) (1) उसने खेत खोदा। (2) तुमने कन्या को पुकारा। (3) उसने वस्त्र धोया। (4) उन्होंने गठरी काटी। (5) हमने धान कूटा।

पाठ 54

क्रियाएँ और उनका कर्मवाच्य में प्रयोग

क्रियाएँ

कोवक=बुलाना,	**सुण**=सुनना,	**देक्ख**=देखना
पणम=प्रणाम करना,	**रक्ख**=रक्षा करना,	**पाल**=पालना

उपर्युक्त क्रियाएँ सकर्मक हैं। सकर्मक क्रियाएँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में प्रयुक्त होती हैं। सकर्मक क्रिया से कर्मवाच्य बनाने के लिए वे ही प्रत्यय जोड़े जाते हैं जो भाववाच्य बनाने के लिए जोड़े गए थे (पाठ-47, इज्ज, ईअ/ईय)। कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) हो जाता है, कर्म में द्वितीया (एकवचन अथवा बहुवचन) के स्थान पर प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा क्रिया में कर्मवाच्य के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के अनुसार पुरुष और वचन के प्रत्यय काल के अनुरूप जोड़ दिए जाते हैं। कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से वर्तमानकाल, भूतकाल तथा विधि एवं आज्ञा में बनाया जाता है। भविष्यत्काल के कर्मवाच्य में क्रिया का भविष्यत्काल कर्तृवाच्य का रूप ही रहता है, उसमें **इज्ज, ईअ/ईय** प्रत्यय नहीं लगाए जाते हैं। भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग कर्मवाच्य में किया जाता है। आगे कर्मवाच्य बनाने के लिए केवल तृतीया एकवचन के प्रयोग दिए गए हैं। तृतीया बहुवचन के प्रयोग भी कर लेने चाहिए। पिछले अध्यायों में अकारान्त पुल्लिग व नपुंसकलिग तथा आकारान्त स्त्रीलिग के प्रथमा, द्वितीया एवं तृतीया में रूप समझाये जा चुके हैं। यहाँ इकारान्त व उकारान्त पुल्लिग के रूप प्रथमा एकवचन व तृतीया एकवचन में दिए गए हैं।

संज्ञा शब्द

	संज्ञाएँ	प्रथमा एकवचन	तृतीया एकवचन
इकारान्त पुल्लिग	**हरि**=हरि	हरी	हरिणा
	सामि=मालिक	सामी	सामिणा
	कइ=कवि	कई	कइणा
उकारान्त पुल्लिग	**साहु**=साधु	साहू	साहुणा
	जंतु=प्राणी	जंतू	जंतुणा
	सत्तु=शत्रु	सत्तू	सत्तुणा

कर्तृवाच्य
वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-प्रथमा	कर्म-द्वितीया	क्रिया-कर्ता के अनुसार	
नरिंदो	ममं/मं/मि	कोक्कइ/आदि	=राजा मुझको बुलाता है।
नरिंदो	तुमं/तुं	कोक्कइ/आदि	=राजा तुमको बुलाता है।
नरिंदो	तं	कोक्कइ/आदि	=राजा उस (पुरुष) को बुलाता है।
नरिंदो	तं	कोक्कइ/आदि	=राजा उस (स्त्री) को बुलाता है।
नरिंदो	तं	रक्खइ/आदि	=राजा उस (राज्य) की रक्षा करता है।
नरिंदो	कहं	सुणइ/आदि	=राजा कथा सुनता है।
अहं/हं/अम्मि	तुमं/तुं	देक्खमि/आदि	=मैं तुमको देखता हूँ।
तुमं/तुं/तुह	तं	देक्खसि/आदि	=तुम उसको देखते हो।
सो	ममं/मं/मि	देक्खइ/आदि	=वह मुझको देखता है।
सा	ममं/मं/मि	देक्खइ/आदि	=वह मुझको देखती है।
माया	ममं/मं/मि	पालइ/आदि	=माता मुझको पालती है।
माया	तुमं/तुं	पालइ/आदि	=माता तुमको पालती है।

कर्मवाच्य
वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-तृतीया	कर्म-प्रथमा	क्रिया-परिवर्तित कर्म के अनुसार	
नरिंदेण/नरिंदेणं	अहं/हं/अम्मि	कोक्किज्जमि/कोक्कीअमि/ आदि	=राजा के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ।
नरिंदेण/नरिंदेणं	तुमं/तुं/तुह	कोक्किज्जसि/कोक्कीअसि/ आदि	=राजा के द्वारा तुम बुलाये जाते हो।
नरिंदेण/नरिंदेणं	सो	कोक्किज्जइ/कोक्कीअइ/ आदि	=राजा के द्वारा वह बुलाया जाता है।
नरिंदेण/नरिंदेणं	सा	कोक्किज्जइ/कोक्कीअइ/ आदि	=राजा के द्वारा वह बुलाई जाती है।
नरिंदेण/नरिंदेणं	तं	रक्खिज्जइ/रक्खीअइ/ आदि	=राजा के द्वारा वह (राज्य) रक्षा किया जाता है।
नरिंदेण/नरिंदेणं	कहा	सुणिज्जइ/सुणीअइ/आदि	=राजा के द्वारा कथा सुनी जाती है।
मइ/मए/मे/ममए	तुमं/तुं/तुह	देक्खिज्जसि/देक्खीअसि/ आदि	=मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
तइ/तए/ /तुमे/तुमए	सो/सा	देक्खिज्जइ/देक्खीअइ/ आदि	=तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है/देखी जाती है।
तेण/तेणं	अहं/हं/अम्मि	देक्खिज्जमि/देक्खीअमि/ आदि	=उस (पुरुष) के द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
ताए/तीए	अहं/हं/अम्मि	देक्खिज्जमि/देक्खीअमि/ आदि	=उस (स्त्री) के द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
मायाए/मायाइ/मायाअ	अहं/हं/अम्मि	पालिज्जमि/पालीअमि/ आदि	=माता के द्वारा मैं पाला जाता हूँ।
मायाए/मायाइ/मायाअ	तुमं/तुं/तुह	पालिज्जसि/पालीअसि/ आदि	=माता के द्वारा तुम पाले जाते हो।

कर्तृवाच्य
वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-प्रथमा	कर्म-द्वितीया	क्रिया-कर्ता के अनुसार	
माया	तं	पालइ/आदि	=माता उसको पालती है।
हरी	ममं/मं/मि	पणमइ/आदि	=हरि मुझको प्रणाम करता है।
हरी	तुमं/तुं	पणमइ/आदि	=हरि तुमको प्रणाम करता है।
हरी	तं	पणमइ/आदि	=हरि उसको प्रणाम करता है।
साहू	ममं/मं/मि	कोक्कइ/आदि	=साधु मुझको बुलाता है।
साहू	तुमं/तुं	कोक्कइ/आदि	=साधु तुमको बुलाता है।
साहू	तं	कोक्कइ/आदि	=साधु उसको बुलाता है।
साहू	कहं	सुणइ/आदि	=साधु कथा सुनता है।

वर्तमानकाल बहुवचन

नरिंदो	अम्हे/अम्ह/णे	कोक्कइ/आदि	=राजा हमको बुलाता है।
नरिंदो	तुम्हे/तुज्झे/तुब्भे/भे	कोक्कइ/आदि	=राजा तुम (सब) को बुलाता है।
नरिंदो	ते/ता	कोक्कइ/आदि	=राजा उनको बुलाता है।
नरिंदो	ता/ताओ/ताउ	कोक्कइ/आदि	=राजा उन (स्त्रियों) को बुलाता है।

कर्मवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-तृतीया	कर्म-प्रथमा	क्रिया-परिवर्तित कर्म के अनुसार
मायाए/मायाइ/मायाअ	सो/सा	पालिज्जइ/पालीअइ/आदि = माता के द्वारा वह पाला जाता है/पाली जाती है।
हरिणा	अहं/हं/अम्मि	पणमिज्जमि/पणमीअमि/आदि = हरि के द्वारा मैं प्रणाम किया जाता हूँ।
हरिणा	तुमं/तुं/तुह	पणमिज्जसि/पणमीअसि/आदि = हरि के द्वारा तुम प्रणाम किये जाते हो।
हरिणा	सो/सा	पणमिज्जइ/पणमीअइ/आदि = हरि के द्वारा वह प्रणाम किया जाता है/की जाती है।
साहुणा	अहं/हं/अम्मि	कोक्किज्जमि/कोक्कीअमि/आदि = साधु के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ।
साहुणा	तुमं/तुं/तुह	कोक्किज्जसि/कोक्कीअसि/आदि = साधु के द्वारा तुम बुलाये जाते हो।
साहुणा	सो/सा	कोक्किज्जइ/कोक्कीअइ/आदि = साधु के द्वारा वह बुलाया जाता है/बुलाई जाती है।
साहुणा	कहा	सुणिज्जइ/सुणीअइ/आदि = साधु के द्वारा कथा सुनी जाती है।

वर्तमानकाल बहुवचन

नरिंदेण	अम्हे/वयं	कोक्किज्जमो/कोक्कीअमो/आदि	= राजा के द्वारा हम बुलाये जाते हैं।
नरिंदेण	तुम्हे/तुज्झे/तुब्भे	कोक्किज्जह/कोक्कीअह/आदि	= राजा के द्वारा तुम (सब) बुलाये जाते हो।
नरिंदेण	ते	कोक्किज्जन्ति/कोक्कीअन्ति/आदि	= राजा के द्वारा वे बुलाए जाते हैं।
नरिंदेण	ता/ताओ/ताउ	कोक्किज्जन्ति/कोक्कीअन्ति/आदि	= राजा के द्वारा वे बुलाई जाती हैं।

नोट— (i) इसी प्रकार कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया बहुवचन को दूसरे वाक्यों में प्रयोग कर लेना चाहिए।

(ii) भूतकाल/विधि एवं आज्ञा में कर्मवाच्य बनाने के लिए क्रिया में कर्मवाच्य का प्रत्यय लगाने के पश्चात् भूतकाल/विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाये जाते हैं (तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में)।

---

1. उपर्युक्त वाक्यों में इकारान्त और उकारान्त पुल्लिग शब्दों का भी प्रथमा एकवचन और तृतीया एकवचन में प्रयोग किया गया है।

   (i) इकारान्त पुल्लिग शब्दों से प्रथमा एकवचन बनाने के लिए **'0'** प्रत्यय जोड़ने पर **दीर्घ (0→दीर्घ, इ→ई)** हो जाता है, जैसे हरि→हरी। तृतीया एकवचन बनाने के लिए **'णा'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, हरि→हरिणा।

   (ii) उकारान्त पुल्लिग शब्दों से प्रथमा एकवचन बनाने के लिए **'0'** प्रत्यय जोड़ने पर दीर्घ **(0→दीर्घ, उ→ऊ)** हो जाता है, जैसे साहु→साहू। तृतीया एकवचन बनाने के लिए **'णा'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, साहु→साहुणा।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

3. इकारान्त और उकारान्त शब्दों के प्रथमा बहुवचन व तृतीया बहुवचन के रूप इस प्रकार होंगे—

   प्रथमा बहुवचन —**हरि**→हरी/हरउ/हरओ/हरिणो (0→ई, अउ, अओ, णो)

   साहु→साहू/साहउ/साहओ/साहवो/साहुणो (0→ऊ, अउ, अओ, अवो, णो)

   तृतीया बहुवचन—**हरि**→हरीहि/हरीहिं/हरीहिँ (हि/हिं/हिँ प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् इ→ई)

   साहु→साहूहि/साहूहिं/साहूहिँ (हि/हिं/हिँ प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् उ→ऊ)

पाठ 55

1. इकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

सामि	=मालिक,	कइ	=कवि
करि	=हाथी,	मुणि	=मुनि
जोगि	=योगी,	पइ	=पति
ससि	=चन्द्रमा,	हत्थि	=हाथी
पाणि	=प्राणी,	रवि	=सूर्य
मंति	=मंत्री,	केसरि	=सिंह
गिरि	=पर्वत,	रिसि	=मुनि
जइ	=यति,	तवस्सि	=साधु/मुनि/तपस्वी
नरवइ	=राजा,	सेणावइ	=सेनापति
अरि	=शत्रु,	विहि	=विधि

2. उकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

जंतु	=प्राणी,	बंधु	=भाई
मच्चु	=मृत्यु,	बिंदु	=बूंद
रिउ	=दुश्मन,	सत्तु	=शत्रु
गुरु	=गुरु,	सूणु	=पुत्र
धणु	=धनुष,	तरु	=पेड़
तेउ	=तेज,	करेणु	=हाथी
सिसु	=बालक/पुत्र,	पहु	=प्रभु
मेरु	=पर्वत विशेष,	फरसु	=कुल्हाड़ी
वाउ	=वायु,	साहु	=साधु
रहु	=रघु	सेउ	=पुल

3. क्रियाएँ

बोल्ल	=बोलना,	वक्खाण	=व्याख्यान करना
पढ	=पढ़ना,	सुमर	=स्मरण करना
भण	=कहना,	रंग	=रंगना

कह	=कहना,	चूर	=टुकड़ा-टुकड़ा करना
मुण	=जानना,	चोराव	=चुराना
नम	=नमस्कार करना,	ओणंद	=अभिनन्दन करना
जेम	=जीमना,	ले	=लेना/ग्रहण करना
खा	=खाना,	वह	=धारण करना
पिब	=पीना,	विण्णा	=जानना
इच्छ	=इच्छा करना,	मइल	=मैला करना
धार	=धारण करना,	दा	=देना
पेच्छ	=देखना,	सिंच	=सींचना
पेस	=भेजना,	बंध	=बांधना
लिह	=लिखना,	थुण	=स्तुति करना
हण	=मारना,	चिंत	=चिंता करना
पीड	=पीड़ा देना,	मग्ग	=माँगना
कर	=करना,	जण	=उत्पन्न करना
चव	=बोलना,	हिंस	=हिंसा करना
णिसुण	=सुनना,	अस	=खाना
चुअ	=त्याग करना,	मार	=मारना
वण्ण	=वर्णन करना,	गा	=गाना
सेव	=सेवा करना,	डंस	=डसना
वद्धाव	=बधाई देना		

———

पाठ 56

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) स्वामी के द्वारा भोजन खाया जाता है। (2) कवि के द्वारा व्रत पाला जाता है। (3) हाथी के द्वारा जल पिया जाता है। (4) दुश्मन के द्वारा तुम ठगे जाते हो। (5) प्रभु के द्वारा हम देखे जाते हैं। (6) मुनि के द्वारा तुम (सब) भेजे जाते हो। (7) माता के द्वारा वह स्तुति किया जाता है। (8) गुरु के द्वारा मैं स्मरण किया जाता हूँ। (9) मित्र के द्वारा हम बधाई दिए जाते हैं। (10) उसके द्वारा धन माँगा जाता है।

(ख) (1) भाई के द्वारा मैं पुकारा जाऊँ। (2) उसके द्वारा लकड़ी रंगी जाए। (3) कवि के द्वारा गीत गाया जाए। (4) मेरे द्वारा पत्र लिखा जाए। (5) पिता के द्वारा हम भेजे जाएं। (6) बहिन के द्वारा तुम नमस्कार किए जावो। (7) साधु तुम सब की सेवा करे। (8) मेरे द्वारा वे देखे जाएं। (9) तुम्हारे द्वारा वह स्तुति किया जाए। (10) तुम्हारे द्वारा मैं बाँधा जाऊँ।

(ग) (1) शत्रुओं के द्वारा मैं मारा जाता हूँ। (2) हमारे द्वारा दुःख जाना जाए। (3) महिलाओं द्वारा परमेश्वर की स्तुति की जाए। (4) शिशु द्वारा भोजन खाया जाएगा। (5) कवियों द्वारा गीत गाया जाए। (6) योगियों द्वारा शास्त्र सुने जाएँगे। (7) साधु द्वारा तुम बुलाए जाओगे। (8) तपस्वी द्वारा हम स्मरण किए जाएँगे। (9) उसके द्वारा व्रत धारे जाएँगे। (10) मन्त्री उसको नमस्कार करे।

(घ) (1) शत्रु के द्वारा वह मारा गया। (2) हमारे द्वारा दुःख जाना गया। (3) शिशुओं द्वारा भोजन खाया गया। (4) मुनि के द्वारा तुम भेजे गये। (5) महिला द्वारा परमेश्वर की स्तुति की गई।

———

पाठ 57

भूतकालिक कृदन्त (कर्मवाच्य में प्रयोग)

प्राकृत में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त बना लिया जाता है (देखें पाठ-42)। भूतकालिक कृदन्त **विशेषण** का भी कार्य करते हैं। जब सकर्मक क्रियाओं में इस कृदन्त के प्रत्यय लगाये जाते हैं तो इसका प्रयोग **कर्मवाच्य** में ही किया जाता है। कर्मवाच्य बनाने के लिए कर्ता तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) में रखा जाता है। कर्म जो द्वितीया (एकवचन अथवा बहुवचन) में होता है, उसको प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) में परिवर्तित किया जाता है तथा भूतकालिक कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के अनुसार चलते हैं। पुल्लिग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के अनुसार इनके रूप चलेंगे। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए कृदन्त में **'आ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है तो वह आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द बन जाता है।

क्रियाएँ

कोक्क=बुलाना,	**सुण**=सुनना,	**देक्ख**=देखना
पणम=प्रणाम करना,	**रक्ख**=रक्षा करना,	**पाल**=पालना
अच्च=पूजा करना,	**इच्छ**=इच्छा करना	

(i) **पुल्लिग**

नरिंदेण/नरिंदेणं	कई	कोक्किओ/कोक्किदो/ कोक्कितो	=राजा के द्वारा कवि बुलाया गया।
नरिंदेण/नरिंदेणं	कई/कइउ/ कइओ/कइणो	कोक्किआ/कोक्किदा/ कोक्किता	=राजा के द्वारा कवि बुलाए गए।
नरिंदेहि/नरिंदेहिं/ नरिंदेहिँ	कई/कइउ/ कइओ/कइणो	कोक्किआ/कोक्किदा/ कोक्किता	=राजाओं के द्वारा कवि बुलाए गए।
हरिणा	दिवायरो	अच्चिओ/अच्चिदो/ अच्चितो	=हरि के द्वारा सूर्य पूजा गया।

मायाए/मायाअ/मायाइ	साहू	देक्खिओ/देक्खिदो/ देक्खितो	=माता के द्वारा साधु देखा गया ।
साहूहि/साहूहिं/साहूहिँ	वयो	पालिओ/पालिदो/ पालितो	=साधुओं के द्वारा व्रत पाला गया ।

(ii) **नपुंसकलिंग**

नरिंदेण/नरिंदेणं	धणं	इच्छिअं/इच्छिदं/इच्छितं	=राजा के द्वारा धन चाहा गया ।
जोगीहि/जोगीहिं/ जोगीहिँ	णाणं	पणमिअं/पणमिदं/ पणमितं	=योगियों द्वारा ज्ञान प्रणाम किया गया ।
रज्जेण/रज्जेणं	सासणं	रक्खिअं/रक्खिदं/ रक्खितं	=राज्य के द्वारा शासन रक्षा किया गया ।
सूणूहि/सूणूहिं/सूणूहिँ	सोक्खाइं/सोक्खाइँ/ सोक्खाणि	इच्छिआइं/इच्छिआइँ/ इच्छिआणि	=पुत्रों द्वारा सुख चाहे गये ।

(iii) **स्त्रीलिंग**

नरिंदेण/नरिंदेणं	पसंसा	सुणिआ/सुणिदा/सुणिता	=राजा के द्वारा प्रशसा सुनी गई ।
सेणावइणा	सरिआ	देक्खिआ/देक्खिदा/ देक्खिता	=सेनापति के द्वारा नदी देखी गई ।
बंधुणा	गंगा	पणमिआ/पणमिदा/ पणमिता	=भाई के द्वारा गंगा प्रणाम की गई ।
मायाए/मायाइ/मायाअ	कहा/कहाउ/ कहाओ	सुणिआ/सुणिआउ/ सुणिआओ/आदि	=माता के द्वारा कथाएँ सुनी गई ।

---

1. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्मवाच्य में हैं । इनमें कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होती है ।

2. भूतकालिक कृदन्त को स्त्रीलिंग में प्रयोग करने से पहले उसका स्त्रीलिंग बनाना चाहिए। 'आ' प्रत्यय जोड़ने से भूतकालिक कृदन्त शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं। जैसे—सुणिअ→सुणिआ, देक्खिअ→देक्खिआ आदि।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

4. (i) इकारान्त पुल्लिग प्रथमा बहुवचन—**कइ**→कई/कइउ/कइओ/कइणो।
(ii) उकारान्त पुल्लिग प्रथमा बहुवचन—**साहु**→साहू/साहउ/साहओ/साहुणो।
(iii) इकारान्त पुल्लिग तृतीया बहुवचन—**जोगि**→जोगीहि/जोगीहि/जोगीहिँ।
(iv) उकारान्त पुल्लिग तृतीया बहुवचन—**सूणु**→सूणूहि/सूणूहि/सूणूहिँ।

———

पाठ 58

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) मेरे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा गया। (2) उसके द्वारा मित्र बुलाया गया। (3) दादा के द्वारा पुत्र भेजा गया। (4) कन्या के द्वारा गर्व धारण किया गया। (5) हमारे द्वारा पानी पिया गया। (6) उनके द्वारा कूए खोदे गए। (7) राम के द्वारा राक्षस मारे गए। (8) बालक द्वारा वस्त्र फाड़े गए। (9) शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया। (10) गुरु द्वारा मुनि की स्तुति की गई।

(ख) (1) नागरिक द्वारा भोजन खाया गया। (2) भाइयों द्वारा दूध पिया गया। (3) प्राणियों द्वारा कर्म बाँधे गए। (4) कवि द्वारा गाने गाये गये। (5) मेरे द्वारा विमान देखे गये। (6) उसके द्वारा वैराग्य चाहा गया। (7) मेरे द्वारा लकड़ियाँ जलाई गईं। (8) तुम्हारे द्वारा व्यसनों का वर्णन किया गया। (9) भाई द्वारा कागज लिखे गये। (10) स्वामी द्वारा धागा काटा गया।

(ग) (1) उसके द्वारा आज्ञा पाली गई। (2) राम के द्वारा कथा सुनी गई। (3) यति के द्वारा शिक्षा धारी गई। (4) पुत्री के द्वारा लक्ष्मी चाही गई। (5) उसके द्वारा दया उत्पन्न की गई। (6) स्वामी द्वारा प्रतिष्ठा सुनी गई। (7) योगी द्वारा श्रद्धा की गई। (8) मन्त्री द्वारा झोंपड़ी देखी गई। (9) ऋषियों द्वारा प्रज्ञा जानी गई। (10) यतियों द्वारा दया की गई।

———

पाठ 59

(1) इकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)

दहि	=दही,	वारि	=जल
अच्छि	=आँख,	सालि	=चावल
अट्ठि	=हड्डी,	सप्पि	=घी

(2) उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)

महु	=मधु,	जाणु	=घुटना
अंसु	=आँसू,	आउ	=आयु
वत्थु	=पदार्थ,	दारु	=लकड़ी

(3) इकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

भत्ति	=भक्ति,	उप्पत्ति	=जन्म
मणि	=रत्न,	गइ	=गति
तत्ति	=तृप्ति/संतोष,	रिद्धि	=वैभव
रत्ति	=रात,	जुवइ	=युवती
धिइ	=धैर्य,	सत्ति	=बल
थुइ	=स्तुति,	आगिइ	=आकार
लद्धि	=प्राप्ति,	जाइ	=जन्म/जाति
ओहि/अवहि	=समय की सीमा,	मइ	=मति

(4) ईकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

परमेसरी	=ऐश्वर्य-सम्पन्न स्त्री,	णई	=नदी
सामिणी	=मालिकिन,	णागरी	=नगर में रहनेवाली
बहिणी	=बहिन,	पुत्ती	=पुत्री
पिआमही	=दादी,	णारी	=नारी
समणी	=श्रमणी,	इत्थी	=स्त्री
साडी	=साड़ी/वस्त्र/कपड़ा	लच्छी	=लक्ष्मी
धत्ती	=दाई,	पुढवी	=पृथ्वी

(5) उकारान्त, ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

धेणु	=गाय,	कण्डू	=खाज
चचु	=चोंच,	खज्जू	=खुजली
रज्जु	=रस्सी,	जंबू	=जामुन का पेड़
हणु	=ठोढी,	सस्सू	=सास
कडच्छु	=कर्छी, चमची,	बहू	=बहू
तणु	=शरीर,	चमू	=सैन्य

(6) ईकारान्त एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

गामणी	=गाँव का मुखिया,	सयंभू	=स्वयंभू
खलपू	=खलियान को साफ करनेवाला		

पाठ 60

क्रियाएँ

गच्छ	=जाना,	वच्च	=जाना
या	=जाना,	आगच्छ	=आना
धाव	=दौड़ना,	लिह	=चाटना
झा	=ध्यान करना,	गाअ	=गाना
खम	=क्षमा करना,	गण	=गिनना
धिक्कार	=धिक्कारना,	खिव	=फेंकना
रय	=बनाना,	खंड	=टुकड़ा करना
गुंथ	=गूंथना/गठना,	कीण	=खरीदना
दह	=जलाना,	लभ	=प्राप्त करना
सिक्ख	=सीखना,	वंद	=प्रणाम करना
बुज्झ	=समझना,	खिस	=निन्दा करना
जिघ	=सूंघना,	जोअ	=प्रकाशित करना
चक्ख	=चखना,	माण	=सम्मान करना
पाव	=पाना,	रक्ख	=रक्षण करना/पालन करना
णिरक्ख	=देखना,	मुण	=जानना
भुंज	=खाना,	चुअ	=त्याग करना

———

पाठ 61

इकारान्त पुल्लिग — **सामि**=स्वामी

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सामी	सामी/सामउ/सामओ/सामिणो
तृतीया	सामिणा	सामीहि/सामीहिं/सामीहिँ

ईकारान्त पुल्लिग — **गामणी**=गाँव का मुखिया

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी	गामणी/गामणउ/गामणओ/गामणिणो
तृतीया	गामणिणा	गामणीहि/गामणीहिं/गामणीहिँ

उकारान्त पुल्लिग — **पहु**=प्रभु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	पहू	पहू/पहउ/पहओ/पहवो/पहुणो
तृतीया	पहुणा	पहूहि/पहूहिं/पहूहिँ

ऊकारान्त पुल्लिग — **सयंभू**=स्वयंभू

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू	सयंभू/सयंभउ/सयंभओ/सयंभवो/सयंभुणो
तृतीया	सयंभुणा	सयंभूहि/सयंभूहिं/सयंभूहिँ

इकारान्त नपुंसकलिंग — **वारि**=जल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारिं	वारीइं/वारीइँ/वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहि/वारीहिं/वारीहिँ

उकारान्त नपुंसकलिंग — **वत्थु**=पदार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वत्थुं	वत्थूइं/वत्थूइँ/वत्थूणि
तृतीया	वत्थुणा	वत्थूहि/वत्थूहिं/वत्थूहिँ

इकारान्त स्त्रीलिंग — जुवइ=युवती

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जुवई	जुवई/जुवईउ/जुवईओ
तृतीया	जुवईअ/जुवईए/जुवईइ/जुवईआ	जुवईहि/जुवईहिं/जुवईहिँ

ईकारान्त स्त्रीलिंग — लच्छी=लक्ष्मी

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लच्छी/लच्छीआ	लच्छी/लच्छीउ/लच्छीओ/लच्छीआ
तृतीया	लच्छीअ/लच्छीए/लच्छीइ/ लच्छीआ	लच्छीहि/लच्छीहिं/लच्छीहिँ

उकारान्त स्त्रीलिंग — तणु=शरीर

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तणू	तणू/तणूउ/तणूओ
तृतीया	तणूअ/तणूए/तणूआ/तणूइ	तणूहि/तणूहिं/तणूहिँ

ऊकारान्त स्त्रीलिंग — चमू=सेना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	चमू	चमू/चमूउ/चमूओ
तृतीया	चमूअ/चमूए/चमूइ/चमूआ	चमूहि/चमूहिं/चमूहिँ

नोट—पिछले पाठों में अकारान्त पुल्लिग, अकारान्त नपुंसकलिंग तथा आकारान्त स्त्रीलिंग समझाए गए हैं।

अकारान्त पुल्लिग — नरिंद=राजा

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	नरिंदो	नरिंदा	(पाठ 31)
तृतीया	नरिंदेण/नरिंदेणं	नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ	(पाठ 45)

अकारान्त नपुंसकलिंग — कमल=कमल का फूल

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	कमलं	कमलाइं/कमलाईं/कमलाणि	(पाठ 35, 36)
तृतीया	कमलेण/कमलेणं	कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ	(पाठ 45)

आकारान्त स्त्रीलिंग **ससा**=बहिन

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	ससा	ससा/ससाओ/ससाउ	(पाठ 39, 40)
तृतीया	ससाए/ससाइ/ससाअ	ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ	(पाठ 45)

पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष **अम्ह**=मैं

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	अहं/हं/अम्मि	अम्हे/वयं	(पाठ 1, 5)
तृतीया	मइ/मए/मे/ममए	अम्हेहि/अम्हाहि	(पाठ 45)

मध्यम पुरुष **तुम्ह**=तुम

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	तुमं/तुं/तुह	तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे	(पाठ 2, 6)
तृतीया	तइ/तए/ /तुमे/तुमए	तुब्भेहिं/तुम्हेहिं/तुज्झेहिं	(पाठ 45)

अन्य पुरुष **त**=वह (पुरुष), **ता**=वह (स्त्री)

	एकवचन	बहुवचन	
प्रथमा	सो	ते	(पाठ 3,7)
	सा	ता/ताओ/ताउ	
तृतीया	तेण/तेणं	तेहिं/तेहि	(पाठ 45)
	ताए/तीए	ताहिं/ताहि/तीहिं	

पाठ 62

विधि कृदन्त (कर्मवाच्य में प्रयोग)

प्राकृत में 'प्राप्त किया जाना चाहिए', 'रक्षा किया जाना चाहिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। क्रिया में प्रत्यय [पाठ 49 में दिए गए हैं—अव्व/यव्व, तव्व, दव्व, णीय (जो अकारान्त क्रियाओं में लगता है)।] लगाकर विधि कृदन्त बनाये जाते हैं। विधि कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग करने के लिए कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन), कर्म में प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के लिंग और वचन के अनुसार चलेंगे। पुल्लिग में **'देव'** के अनुसार, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के अनुसार तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के अनुसार रूप चलेंगे। सकर्मक क्रियाओं से निर्मित विधि कृदन्त ही कर्मवाच्य में प्रयुक्त किए जाते हैं।

क्रियाएँ

कीण=खरीदना,	**रक्ख**=रक्षा करना,	लभ=प्राप्त करना
झाअ=ध्यान करना,	**खम**=क्षमा करना,	**पिअ (पिब)**=पीना
गण=गिनना,	**पेच्छ**=देखना,	**धार**=धारण करना
पेस=भेजना,	**बंध**=बाँधना	

(i) पुल्लिग

सामिणा	हत्थी	कीणिअव्वो/कीणिदव्वो/ कीणितव्वो/कीणणीयो/ कीणेअव्वो/कीणेदव्वो/ कीणेतव्वो	= स्वामी द्वारा हाथी खरीदा जाना चाहिए।
मुणीहि/ मुणीहिं/ मुणीहिँ	पाणी/पाणउ/ पाणओ/पाणिणो	रक्खिअव्वा/रक्खिदव्वा/ रक्खितव्वा/रक्खणीयो/ रक्खेअव्वा/आदि	= मुनियों द्वारा प्राणी रक्षा किए जाने चाहिए।
साहुणा	तेउ	लभिअव्वो/लभिदव्वो/ लभितव्वो/लभणीयो/ लभेअव्वो/आदि	= साधु द्वारा तेज प्राप्त किया जाना चाहिए।

साहूहि/ साहूहिं/ साहूहिँ	तेउ	लभिअव्वो/लभिदव्वो/ लभितव्वो/लभणीयो/ लभेअव्वो/आदि	= साधुओं द्वारा तेज प्राप्त किया जाना चाहिए ।
रिसिणा	पहु	झाइअव्वो/झाइदव्वो/ झाइतव्वो/झाअणीयो/ झाएअव्वो/आदि	= ऋषि द्वारा प्रभु ध्याया जाना चाहिए ।
मइ/ मए/ मे/ ममए	सत्तू/सत्तउ/ सत्तओ/ सत्तवो/सत्तुणो	खमिअव्वा/खमिदव्वा/ खमणीया/खमेअव्वा/ आदि	= मेरे द्वारा साधु क्षमा किए जाने चाहिए ।

(ii) **नपुंसकलिंग**

सामिणा	वारि	पिबिअव्वं/पिबिदव्वं/ पिबितव्वं/पिबणीयं/ पिबेअव्वं/आदि	= स्वामी द्वारा जल पिया जाना चाहिए ।
मइ/ मए/ मे/ ममए	अच्छीइं/ अच्छीइँ/ अच्छीणि	गणिअव्वाइं/गणिअव्वाइँ/ गणिअव्वाणि / गणिदव्वाइं/गणिदव्वाइँ/ गणिदव्वाणि /आदि	= मेरे द्वारा आँखें गिनी जानी चाहिए ।
साहूहि/ साहूहिं/ साहूहिँ	वत्थूं	पेच्छिअव्वं/पेच्छिदव्वं/ पेच्छितव्वं/पेच्छणीयं/ पेच्छेअव्वं/आदि	= साधुओं द्वारा वस्तु देखी जानी चाहिए ।

साहुणा	वत्थूइं/ वत्थूइँ/ वत्थूणि	पेच्छिअव्वाइं/पेच्छिअव्वाइँ/ पेच्छिअव्वाणि/ पेच्छितव्वाइं/पेच्छितव्वाइँ/ पेच्छितव्वाणि/आदि	= साधु द्वारा वस्तुएं देखी जानी चाहिए ।

(iii) **स्त्रीलिंग**

पुत्तीहि/ पुत्तीहिं/ पुत्तीहिँ	लच्छी/ लच्छीउ/ लच्छीओ/ लच्छीआ	लभिअव्वा/ लभिअव्वाओ/ लभिअव्वाउ/आदि	= पुत्रियों द्वारा लक्ष्मियाँ प्राप्त की जानी चाहिए ।
पुत्तीए/ पुत्तीइ/ पुत्तीअ/ पुत्तीआ	साडी/साडीआ	कीणिअव्वा/ कीणिदव्वा/ कीणितव्वा/आदि	= पुत्री द्वारा साड़ी खरीदी जानी चाहिए ।
जुवईए/ जुवईइ/ जुवईअ/ जुवईआ	धिई	धारिअव्वा/ धारिदव्वा/ धारितव्वा/आदि	= युवती द्वारा धैर्य धारण किया जाना चाहिए ।
जुवईहि/ जुवईहिं/ जुवईहिँ	मणी/मणउ/मणओ	पेसिअव्वा/पेसिअव्वाओ/ पेसिअव्वाउ/आदि	= युवतियों द्वारा रत्न भेजे जाने चाहिए ।
चमूए/ चमूइ/ चमूअ/ चमूआ	तणू	बंधिअव्वा/बंधिदव्वा/ बंधितव्वा/बंधणीया/ बंधेअव्वा/आदि	= सेना द्वारा शरीर बाँधा जाना चाहिए ।

चमूहि/ चमूहि/ चमूहिँ	तणू/तणूउ/तणूओ	बंधिअव्वा/बंधिअव्वाउ/ बंधिअव्वाओ/आदि	= सेनाओं द्वारा शरीर बांधे जाने चाहिए।

1. उपर्युक्त सभी क्रियाएं सकर्मक हैं।

2. विधि कृदन्त का प्रयोग भाववाच्य और कर्मवाच्य में होता है। इसका कर्तृवाच्य में प्रयोग नहीं होता हैं। भाववाच्य के प्रयोग बताए जा चुके हैं (पाठ 49)। उपर्युक्त प्रयोग कर्मवाच्य के हैं।

3. अकर्मक क्रियाओं से भाववाच्य बनाये जाते हैं (पाठ 49) और सकर्मक क्रियाओं से कर्मवाच्य बनाये जाते हैं।

पाठ 63

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए। (2) रघु के द्वारा साधु बुलाए जाने चाहिए। (3) कवियों के द्वारा गीत गाये जाने चाहिए। (4) हाथी द्वारा सिंह मारा जाना चाहिए। (5) ऋषि द्वारा सूर्य की वन्दना की जानी चाहिये।

(ख) (1) मेरे द्वारा दही खाया जाना चाहिए। (2) हमारे द्वारा जल पिया जाना चाहिए। (3) उनके द्वारा हड्डियाँ देखी जानी चाहिए। (4) तुम्हारे द्वारा पदार्थ वर्णन किए जाने चाहिए। (5) उसके द्वारा आयु देखी जानी चाहिए।

(ग) (1) तुम्हारे द्वारा वैभव प्राप्त किया जाना चाहिए। (2) उसके द्वारा तृप्ति माँगी जानी चाहिए। (3) पृथ्वी द्वारा रत्न धारण किए जाने चाहिए। (4) युवती द्वारा भक्ति की जानी चाहिए। (5) मौसी द्वारा साड़ियाँ खरीदी जानी चाहिए। (6) तुम्हारे द्वारा रस्सी गूँथी जानी चाहिए। (7) उसके द्वारा गाएँ पाली जानी चाहिए। (8) हमारे द्वारा जामुन का पेड़ सींचा जाना चाहिए। (9) सासुओं द्वारा बहुएँ क्षमा की जानी चाहिए। (10) तुम्हारे द्वारा घास जलाई जानी चाहिए।

———

पाठ 64

वर्तमान कृदन्त
हेत्वर्थक कृदन्त
संबंधक भूत कृदन्त
(पूर्वकालिक क्रिया)
} **द्वितीया-सहित**

प्राकृत में (i) भोजन खाता हुआ, गाँव जाता हुआ आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया-सहित वर्तमान कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। (ii) 'भोजन खाने के लिए', 'गांव जाने के लिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया-सहित हेत्वर्थक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। (iii) 'भोजन करके', 'गाँव जाकर' आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया सहित संबंधक भूत कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। ये तीनों कृदन्त क्रियाओं से बनाए जाते हैं। वर्तमान कृदन्त शब्द विशेषण का कार्य करते हैं तथा अन्तिम दोनों (हे.कृ. और सं.कृ.) अव्यय का काम करते हैं। इतना होने पर भी अपने मूल स्वरूप **'क्रिया'** को नहीं छोड़ते हैं। अत: सकर्मक क्रियाओं से बनने पर कर्म को साथ लिए रहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। अत: इनके साथ कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इनके प्रत्ययों के लिए देखें पाठ 28, 29, 43।

इ, ईकारान्त पुल्लिग — **जइ**=यति, **गामणी**=गाँव का मुखिया

	एकवचन	**बहुवचन**
द्वितीया	जइं	जई/जइणो
द्वितीया	गामणिं	गामणी/गामणिणो

उ, ऊकारान्त पुल्लिग — **तरु**=पेड़, **खलपू**=खलियान को साफ करनेवाला

	एकवचन	**बहुवचन**
द्वितीया	तरुं	तरू/तरुणो
द्वितीया	खलपुं	खलपू/खलपुणो

इ, उकारान्त नपुंसकलिंग — **वारि**=जल, **वत्थु**=वस्तु

	एकवचन	**बहुवचन**
द्वितीया	वारिं	वारीइं/वारीइँ/वारीणि
द्वितीया	वत्थुं	वत्थूइं/वत्थूइँ/वत्थूणि

इ, ईकारान्त स्त्रीलिंग तत्ति=तृप्ति, लच्छी=लक्ष्मी

	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	तत्तिं	तत्ती तत्तीउ/तत्तीओ
द्वितीया	लच्छिं	लच्छी/लच्छीउ/लच्छीओ/लच्छीआ

उ, ऊकारान्त स्त्रीलिंग तणु=शरीर, चमू=सेना

	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	तणुं	तणू/तणूउ/तणूओ
द्वितीया	चमुं	चमू/चमूउ/चमूओ

वाक्यों में प्रयोग

पुल्लिग

अहं/हं/अम्मि	जइ	कोक्कन्तो/ कोक्कमाणो	हरिसामि/ आदि	=मैं यति को बुलाता हुआ प्रसन्न होता हूँ।
सो	गामणिं	पणमन्तो/ पणममाणो	अच्छइ/ आदि	=वह गाँव के मुखिया को प्रणाम करता हुआ बैठता है।
सा	तरुं	सिंचन्ता/ सिंचमाणा	थक्कइ/आदि	=वह पेड़ को सींचती हुई थकती है।
सो	खलपुं	कोक्किऊण/ आदि	हरिसइ/आदि	=वह खलियान को साफ करने-वाले को बुलाकर प्रसन्न होता है।

नपुंसकलिंग

तुमं/तुं/तुह	वारि	पिबिउं/पिबिदुं	उट्ठसि/आदि	=तुम जल पीने के लिए उठते हो।
सो	वत्थुं	किणिउं/ किणिदुं	उज्जमइ/आदि	=वह वस्तु खरीदने के लिए प्रयत्न करता है।

स्त्रीलिंग

अहं/हं/अम्मि	लच्छिं	चुइऊण/आदि	उल्लसामि/ आदि	=मैं लक्ष्मी को त्यागकर खुश होता हूँ।
ते	तणुं	रक्खिउं/ रक्खिदुं	उज्जमन्ति/ आदि	=वे शरीर को रक्षा करने के लिए प्रयत्न करते हैं।

अम्हे/वयं	चमुं	दक्खिऊण/आदि डरमो/आदि =हम सेना को देखकर डरते हैं ।
तुमं/तुं/तुह	तप्ति	लभिऊण/आदि णच्चहि/आदि=तुम तृप्ति प्राप्त करके नाचते हो ।

नोट—इसी प्रकार द्वितीया बहुवचन का प्रयोग करके वाक्य बना लेने चाहिए ।

---

1. अकारान्त पुल्लिग-नपुंसकलिंग व आकारान्त स्त्रीलिंग पिछले पाठों में समझाया जा चुका है ।

अकारान्त पुल्लिग — **नरिंद**=राजा

	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	नरिंदं	नरिंदा

अकारान्त नपुंसकलिंग — **रज्ज**=राज्य

	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	रज्जं	रज्जाइं/रज्जाइँ/रज्जाणि

आकारान्त स्त्रीलिंग — **कहा**=कथा

	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	कहं	कहा/कहाउ/कहाओ

पुरुषवाचक सर्वनाम
(द्वितीया)

अम्ह=मैं, **त**=वह (पुरुष)

तुम्ह=तुम, **ता**=वह (स्त्री)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ममं/मं/मि	अम्हे/अम्ह/णे
मध्यम पुरुष	तुमं/तुं	तुम्हे/तुज्झे/तुब्भे/भे

अन्य पुरुष	तं	ते/ता (पुल्लिग)
	तं	ताइं/ताइँ/तारिण (नपुंसकलिग)
	तं	ता/ताउ/ताओ (स्त्रीलिग)

2. द्वितीया एकवचन बनाने के लिए संज्ञा शब्दों में अनुस्वार (ं) जोड़ा जाता है। अनुस्वार जोड़ने पर अन्त्य दीर्घ स्वर→ह्रस्व हो जाता है—गामणी→गामणि आदि।

3. द्वितीया बहुवचन के प्रत्ययों को प्रत्यय चार्ट से समझा जा सकता है।

———

पाठ 65

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है। (2) कवि गुरु को प्रणाम करता हुआ बैठता है। (3) भाई उसको धिक्कारते हुए शरमाता है। (4) सिंह हाथी को मारते हुए डरता है। (5) वह मुनियो को सुनते हुए शोभता है। (6) वह दही खाते हुए सोता है। (7) तुम जल पीते हुए नाचते हो। (8) हम आँख देखते हुए मुड़ते हैं। (9) वह गाँव के मुखिया की सेवा करते हुए थकता है। (10) वह मधु को चखता हुआ खुश होता है।

(ख) (1) वह भक्ति करने के लिए उठता है। (2) तुम तृप्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हो। (3) वह पुत्री को कहने के लिए उत्साहित होता है। (4) हम रस्सी बाँधने के लिए प्रयत्न करते हैं। (5) वे गायों को देखने के लिए उठते हैं।

(ग) (1) स्वामी रघु को नमन करके प्रसन्न होता है। (2) कवि गुरु को प्रणाम करके बैठता है। (3) वह भक्ति करके जीता है। (4) तुम तृप्ति प्राप्त करके खुश होते हो। (5) वे गायों को देखकर उठते हैं।

———

पाठ 66

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद**=राजा	नरिंदस्स/नरिंदाय
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** =राज्य	रज्जस्स/रज्जाय
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** =माता	मायाअ/मायाइ/मायाए
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** =युवती	जुवईअ/जुवईआ/जुवईइ/जुवईए
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** =पुत्री	पुत्तीअ/पुत्तीआ/पुत्तीइ/पुत्तीए
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** =गाय	धेणूअ/धेणूआ/धेणूइ/धेणूए
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** =जामुन का पेड़	जंबूअ/जंबूआ/जंबूइ/जंबूए

सर्वनाम	मम/महं/मज्झ	=मेरा/मेरे लिए
	तुज्झ/तुम्हं/तुह	=तेरा/तेरे लिए
	तास/तस्स/से	=उसका/उसके लिए (पु. व नपुं.)
	तिस्सा/तास/से/ताअ/ताइ/ताए	=उसका/उसके लिए (स्त्रीलिंग)

अकर्मक क्रियाएँ

हस =हँसना,
जग्ग =जागना,
वड्ढ =बढ़ना,
णिज्झर=झरना,

सकर्मक क्रियाएँ

रक्ख =रक्षा करना
इच्छ =चाहना
गच्छ =जाना
कोक्क=बुलाना

षष्ठी एकवचन

नरिंदस्स/नरिंदाय पुत्तो हसइ/आदि =राजा का पुत्र हँसता है।

रज्जस्स/रज्जाय सासणं तं रक्खइ/आदि =राज्य का शासन उसकी रक्षा करता है।

मायाअ मायाइ मायाए	ससा	जग्गइ/आदि	=माता की बहन जागती है।
जुवईअ जुवईआ जुवईइ जुवईए	माया	जग्गइ/आदि	=युवती की माता जागती है।
पुत्तीअ पुत्तीआ पुत्तीइ पुत्तीए	धणं	वड्ढइ/आदि	=पुत्री का धन बढ़ता है।
धेणूअ धेणूआ धेणूइ धेणूए	खीरं	णिज्झरइ/आदि	=गाय का दूध झरता है।
जंबूअ जंबूआ जंबूइ जंबूए	आऊ	वड्ढइ/आदि	=जामुन के पेड़ की आयु बढ़ती है।
मम महं मज्झ	पुत्तो सोक्खं	इच्छइ/आदि	=मेरा पुत्र सुख चाहता है।
तुम्हं तुह तुज्झ	पोत्तो घरं	गच्छइ/आदि	=तुम्हारा पोता घर जाता है।

तास तस्स से	पुत्तो अम्ह कोक्कइ/आदि	=उस (पुरुष) का पुत्र मुझको बुलाता है ।
तिस्सा तास से ताअ ताइ ताए	पुत्तो तुमं कोक्कइ/आदि	=उस (स्त्री) का पुत्र तुमको बुलाता है ।

चतुर्थी एकवचन

सो	नरिंदस्य नरिंदाय	गंथं	कीणइ/आदि	=वह राजा के लिए ग्रन्थ खरीदता है ।
तुमं	परिक्खाअ परिक्खाइ परिक्खाए	गंथं	पठसि/आदि	=तुम परीक्षा के लिए पुस्तक पढ़ते हो ।

नोट : इसी प्रकार चतुर्थी के अन्य वाक्य बना लेने चाहिए ।

पाठ 67

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति एकवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी एकवचन
इकारान्त पुल्लिग	सामि=स्वामी	सामिणो/सामिस्स
ईकारान्त पुल्लिग	गामणी=गाँव का मुखिया	गामणिणो/गामणिस्स
उकारान्त पुल्लिग	साहु=साधु	साहुणो साहुस्स
ऊकारान्त पुल्लिग	सयंभू=स्वयंभू	सयंभुणो/सयंभुस्स
इकारान्त नपुंसकलिंग	वारि=जल	वारिणो/वारिस्स
उकारान्त नपुंसकलिंग	वत्थु=पदार्थ	वत्थुणो/वत्थुस्स

अकर्मक क्रियाएँ

गल=गलना, फुर=प्रकट होना

चुअ=टपकना, जग्ग=जागना

सकर्मक क्रियाएँ

कर=करना

पढ=पढ़ना

षष्ठी एकवचन

सामिणो/सामिस्स	गव्वो गलइ/आदि	=स्वामी का गर्व गलता है।
गमणिणो/गमणिस्स	पुत्तो गंथं पढइ/आदि	=गाँव के मुखिया का पुत्र ग्रन्थ पढ़ता है।
साहुणो/साहुस्स	तेऊ फुरइ/आदि	=साधु का तेज प्रकट होता है।
सयंभुणो/सयंभुस्स	पुत्तो जग्गइ/आदि	=स्वयंभू का पुत्र जागता है।
वारिणो/वारिस्स	बिन्दू चुअइ/आदि	=जल की बूंद टपकती है।
सो वत्थुणो/वत्थुस्स	णाणं करइ/आदि	=वह पदार्थ का ज्ञान करता है।

चतुर्थी एकवचन

अहं सामिणो/सामिस्स जागरमि =मैं स्वामी के लिए जागता हूँ ।

तुमं साहुणो/साहुस्स भोयणं इच्छसि =तुम साधु के लिए भोजन चाहते हो ।

सो गामणिणो/गामणिस्स गामं गच्छइ/आदि=वह गाँव के मुखिया के लिए गाँव जाता है ।

नोट : इसी प्रकार दूसरे वाक्य बना लेने चाहिए ।

पाठ 68

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	नरिंद=राजा	नरिंदाण/नरिंदाणं
अकारान्त नपुंसकलिंग	रज्ज =राज्य	रज्जाण/रज्जाणं
आकारान्त स्त्रीलिंग	माया =माता	मायाण/मायाणं
इकारान्त स्त्रीलिंग	जुवइ =युवती	जुवईण/जुवईणं
ईकारान्त स्त्रीलिंग	पुत्ती =पुत्री	पुत्तीण/पुत्तीणं
उकारान्त स्त्रीलिंग	धेणु =गाय	धेणूण/धेणूणं
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	जंबू =जामुन का पेड़	जंबूण/जंबूणं

सर्वनाम	अम्हाण/अम्हाणं/ममाण/ममाणं/ मज्झाण/मज्झाणं	=हमारे लिए/हमारा
	तुमाण/तुहाण/तुम्हाणं/तुज्झाण/तुज्झाणं	=तुम सबके लिए/तुम सबका
	तेसिं/ताण/ताणं	=उन (पुरुषों) के लिए/उनका
	तेसिं/ताण/ताणं	=उन (स्त्रियों) के लिए/उनका

अकर्मक क्रियाएँ

हस=हँसना,

जग्ग=जागना,

वड्ढ=बढ़ना,

णिज्झर=झरना,

सकर्मक क्रियाएँ

रक्ख=रक्षा करना

इच्छ=चाहना

गच्छ=जाना

कोक्क=बुलाना

षष्ठी बहुवचन

नरिंदाण/नरिंदाणं पुत्ता हसन्ति/आदि =राजाओं के पुत्र हँसते है।

रज्जाण/रज्जाणं	सासणा तं रक्खन्ति/आदि	=राज्यों के शासन उसकी रक्षा करते हैं।
मायाण/मायाणं	ससा जग्गइ/आदि	=माताओं की बहिन जागती है।
जुवईण/जुवईणं	माया जग्गइ/आदि	=युवतियों की माता जागती है।
पुत्तीण/पुत्तीणं	धणं वड्ढइ/आदि	=पुत्रियों का धन बढ़ता है।
धेणूण/धेणूणं	खीरं णिज्झरइ/आदि	=गायों का दूध झरता है।
जंबूण/जंबूणं	आउं वड्ढइ/आदि	=जामुनों के पेड़ की आयु बढ़ती है।

अम्हाणं
अम्हाण
ममाण
ममाणं
मज्झाण
मज्झाणं
} पुत्तो सोक्खं इच्छइ/आदि =हमारा पुत्र सुख चाहता है।

तुज्झाण
तुज्झाणं
तुम्हाणं
तुमाण
तुहाण
} पोत्तो घरं गच्छइ/आदि =तुम दोनों का पोता घर जाता है।

तेसिं
ताण
ताणं
} पुत्ता ममं कोक्कन्ति/आदि =उन (पुरुषों) के पुत्र मुझे बुलाते हैं।

तेसिं
ताण
ताणं
} पुत्ता तुमं कोक्कन्ति/आदि =उन (स्त्रियों) के पुत्र तुमको बुलाते हैं।

चतुर्थी बहुवचन

सो नरिंदाण/नरिंदाणं गंथं कीणइ/आदि =वह राजाओं के लिए ग्रन्थ खरीदता है।

तुमं परिक्खाण/परिक्खाणं गंथं पढसि/आदि =तुम परीक्षाओ के लिए ग्रन्थ पढ़ते हो।

तुमं अम्हाण णच्चहि/आदि =तुम हमारे लिए नाचते हो।

नोट—इसी प्रकार चतुर्थी के अन्य वाक्य बना लेने चाहिए।

———

पाठ 69

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति बहुवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन
इकारान्त पुल्लिग	**सामि**=स्वामी	सामीण/सामीणं
ईकारान्त पुल्लिग	**गामणी**=गाँव का मुखिया	गामणीण/गामणीणं
उकारान्त पुल्लिग	**साहु**=साधु	साहूण/साहूणं
ऊकारान्त पुल्लिग	**सयंभू**=स्वयंभू	सयंभूण/सयंभूणं
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि**=जल	वारीण/वारीणं
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु**=पदार्थ	वत्थूण/वत्थूणं

अकर्मक क्रियाएँ

गल =गलना,
चुअ =टपकना,
फुर =प्रकट होना,
जग्ग =जागना

सकर्मक क्रियाएँ

कर =करना,
पढ =पढ़ना,
इच्छ =इच्छा करना

चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

सामीण/सामीणं गव्वो गलइ/आदि =स्वामियों का गर्व गलता है।

साहूण/साहूणं तेऊ फुरइ/आदि =साधुओं का तेज प्रकट होता है।

सो वत्थूण/वत्थूणं णाणं करइ/आदि =वह पदार्थों का ज्ञान करता है।

अहं सामीण/सामीणं जागरमि/आदि =मैं स्वामियों के लिए जागता हूँ।

तुमं साहूण/साहूणं भोयणं इच्छसि/आदि =तुम साधुओं के लिए भोजन चाहते हो।

पाठ 70

1. निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क) (1) राजा का पुत्र राम को प्रणाम करता है/करे/करेगा ।
(2) मामा की बहिन गर्व करती है/करे/करेगी ।
(3) राज्य का शासन उसकी रक्षा करता है/करे/करेगा ।
(4) राम का सुख मेरा सुख है/हो/होगा ।
(5) सीता की माता कथा सुनती है/सुने/सुनेगी ।
(6) मैं गंगा की कथा सुनता हूँ/सुनूँ/सुनूंगा ।
(7) मेरा पुत्र सुख चाहता है/चाहे/चाहेगा ।
(8) उसका पुत्र घर जाता है/जावे/जायेगा ।
(9) वह नर्मदा का पानी पीता है/पीवे/पीयेगा ।
(10) उसकी माता तुमको पालती है/पाले/पालेगी ।

(ख) (1) राजा का पुत्र राम के लिए गठरी माँगता है/माँगे/माँगेगा ।
(2) वह उसकी पुस्तक परीक्षा के लिए पढ़ता है/पढ़े/पढ़ेगा ।
(3) मेरा पुत्र सुख के लिए हँसता है/हँसे/हँसेगा ।
(4) वह शरीर के लिए नर्मदा का पानी पीता है/पीवे/पीयेगा ।
(5) राम का सुख सबके लिए सुख है/हो/होगा ।

(ग) (1) स्वामियों के भाई उसको नमस्कार करते हैं ।
(2) कवियों के गुरु हमको देखते हैं ।
(3) राजाओं के दुश्मन युद्ध का विचार करते हैं ।
(4) हमारे गुरु भोजन जीमते हैं ।
(5) मेरी मौसियां साड़ी खरीदती हैं ।

— — —

पाठ 71

संज्ञा शब्द पंचमी एकवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद** =राजा	नरिंदत्तो/नरिंदाओ/ नरिंदाउ/नरिंदाहि/ नरिंदाहिन्तो/नरिंदा
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** =राज्य	रज्जत्तो/रज्जाओ/ रज्जाउ/रज्जाहि/ रज्जाहिन्तो/रज्जा
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** =माता	मायाअ/मायाइ/ मायाए/मायाहिन्तो/ मायत्तो/मायाउ/ मायाओ
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** =युवती	जुवईअ/जुवईआ/ जुवईइ/जुवईए/ जुवइत्तो/जुवईओ/ जुवईउ/जुवईहिन्तो
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** =पुत्री	पुत्तीअ/पुत्तीआ/ पुत्तीइ/पुत्तीए/ पुत्तित्तो/पुत्तीओ/ पुत्तीहिन्तो/पुत्तीउ
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** =गाय	धेणूअ/धेणूआ/ धेणूइ/धेणूए/ धेणुत्तो/धेणूओ/ धेणूउ/धेणूहिन्तो

ऊकारान्त स्त्रीलिंग	जंबू	=जामुन का पेड़	जंबूअ/जंबूआ/ जंबूइ/जंबूए/ जंबूत्तो/जंबूओ जंबूउ/जंबूहिन्तो

सर्वनाम

मइत्तो/ममाओ/मज्झाओ/ममाहिन्तो=मेरे से
तुम्हाहिन्तो/तुवत्तो/तुहाओ/तुमाओ =तेरे से
ताओ/ताउ/ताहिन्तो =उससे (पु.)
ताअ/ताइ/ताए/ततो =उससे (स्त्री.)

अकर्मक क्रियाएँ

डर=डरना, **पड**=गिरना
उपज्ज=पैदा होना, **णीसर**=निकलना

सकर्मक क्रियाएँ

धाव=दौड़ना
आगच्छ=आना

पंचमी एकवचन

सो — नरिंदत्तो/नरिंदाओ/ नरिंदाउ/नरिंदाहि/ नरिंदाहिन्तो/नरिंदा } डरइ/आदि=वह राजा से डरता है।

पुत्तो — मायाअ/मायाइ/मायाए/ मायाहिन्तो/मायत्तो/मायाउ/ मायाओ } डरइ/आदि=पुत्र माता से डरता है।

माया — पुत्तीअ/पुत्तीआ/पुत्तीइ/ पुत्तीए/पुत्तित्तो/पुत्तीओ/ पुत्तीहिन्तो/पुत्तीउ } गंथं पढइ/आदि=माता पुत्री से ग्रन्थ पढ़ती है।

अभ्यास

(1) बालक सर्प से डरता है। (2) खेत से अन्न उत्पन्न होता है। (3) वह गाय से डरता है। (4) जामुन के पेड़ से पत्ता गिरता है। (5) खेत से कुत्ता दौड़ता है। (6) मनुष्य हिंसा

से डरे। (7) मकान की छत से बालक गिरता है। (8) पवत से गंगा निकलती है। (9) वह मुझसे डरता है। (10) वह तुझसे पुस्तक पढ़ता है। (11) बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। (12) पुत्र पिता से छिपता है।

---

1. निम्नलिखित में पंचमी विभक्ति होती है—

   (i) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाए उसमें, जैसे– **पेड़ से** पत्ता गिरता है।

   (ii) जिससे छिपना चाहता है उसमें, जैसे—**पिता से** छिपता है।

   (iii) भय के कारण में पंचमी होती है, जैसे **सर्प से** डरता है।

   (iv) जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाए, जैसे—**मैं तुझसे** पुस्तक पढ़ता हूँ।

   (v) जिससे उत्पन्न होता है उसमें पंचमी होती है, जैसे—**बीज से** वृक्ष उत्पन्न होता है।

———

पाठ 72

संज्ञा शब्द पंचमी एकवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी एकवचन
इकारान्त पुल्लिग	सामि=स्वामी	सामिणो/सामित्तो/ सामीओ/सामीउ/ सामीहिन्तो
उकारान्त पुल्लिग	साहु =साधु	साहुणो/साहुत्तो/ साहूओ/साहूउ/ साहूहिन्तो
इकारान्त नपुंसकलिंग	वारि=जल	वारिणो/वारित्तो/ वारीओ/वारीउ/ वारीहिन्ता
उकारान्त नपुंसकलिंग	वत्थु =पदार्थ	वत्थुणो/वत्थुत्तो/ वत्थूओ/वत्थूउ/ वत्थूहिन्तो

सो — सामिणो/सामित्तो/ सामीओ/सामीउ/ सामीहिन्तो } डरइ/आदि =वह स्वामी से डरता है।

सो — साहुणो/साहुत्तो/ साहूओ/साहूउ/ साहूहिन्तो } पढइ/आदि =वह साधु से पढ़ता है।

वारिणो/वारित्तो/ वारीओ/वारीउ/ वारीहिन्तो } पत्त उप्पज्जइ/आदि =जल से पत्ता उत्पन्न होता है।

———

पाठ 73

संज्ञा शब्द पंचमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** =राजा	नरिंदत्तो/नरिंदाओ/ नरिंदाउ/नरिंदाहि/ नरिंदाहिन्तो/नरिंदासुन्तो/ नरिंदेहि/नरिंदेहिन्तो/ नरिंदेसुन्तो
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** =स्वामी	सामित्तो/सामीओ/ सामीउ/सामीहिन्तो/ सामीसुन्तो
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** =साधु	साहुत्तो/साहूओ/साहूउ/ साहूहिन्तो/साहूसुन्तो
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** =राज्य	रज्जत्तो/रज्जाओ/ रज्जाउ/रज्जाहि/ रज्जाहिन्तो/रज्जासुन्तो/ रज्जेहि/रज्जेहिन्तो/ रज्जेसुन्तो
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** =जल	वारित्तो/वारीओ/वारीउ/ वारीहिन्तो/वारीसुन्तो
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** =पदार्थ	वत्थुत्तो/वत्थूओ/ वत्थूउ/वत्थूहिन्तो/ वत्थूसुन्तो

सो { नरिंदत्तो/नरिंदाओ/ नरिंदाउ/नरिंदाहि/ नरिंदाहिन्तो/नरिंदासुन्तो/ नरिंदेहि/नरिंदेहिन्तो/ नरिंदेसुन्तो } डरइ/आदि =वह राजाओं से डरता है।

तुमं	सामित्तो/सामीओ/ सामीउ/सामीहिन्तो/ सामीसुन्तो	डरह/आदि	=तुम स्वामियों से डरो।
अहं	साहुत्तो/साहूओ/ साहूउ/साहूहिन्तो/ साहूसुन्तो	पढमि	=मैं साधुओं से पढ़ता हूँ।

नोट—इसी प्रकार अन्य वाक्य बना लेने चाहिए।

———

पाठ 74

संज्ञा शब्द पंचमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी बहुवचन
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** =माता	मायत्तो/मायाओ/ मायाउ/मायाहिन्तो/ मायासुन्तो
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** =युवती	जुवईत्तो/जुवईओ/जुवईउ/ जुवईहिन्तो/जुवईसुन्तो
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** =पुत्री	पुत्तित्तो/पुत्तीओ/पुत्तीउ/ पुत्तीहिन्तो/पुत्तीसुन्तो
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** =गाय	धेणुत्तो/धेणूओ/ धेणूउ/धेणूहिन्तो/ धेणूसुन्तो
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** =जामुन का पेड़	जंबुत्तो/जंबूओ/ जंबूउ/जंबूहिन्तो/ जंबूसुन्तो

सर्वनाम

ममाहिन्तो/ममासुन्तो/अम्हाओ/ अम्हेहि/ममेहिन्तो } =हम (सब) से

तुब्भासुन्तो/तुम्हाहिन्तो/तुम्हासुन्तो/ तुज्झाओ/तुब्भेहिन्तो } =तुम (सब) से

ताहिन्तो/तासुन्तो/तेहिन्तो =उनसे (पुल्लिग, नपुंसकलिंग)

तीओ/तीहिन्तो/तीसुन्तो =उनसे (स्त्रीलिंग)

वयं	मायत्तो/मायाओ/ मायाउ/मायाहिन्तो/ मायासुन्तो	डरमो/आदि	=हम सब माताओं से डरते हैं ।
ते	जुवइत्तो/जुवईओ/ जुवईउ/जुवईहिन्तो/ जुवईसुन्तो	लुक्कन्ति/आदि	=वे सब युवतियों से छिपते हैं ।

———

पाठ 75

संज्ञा शब्द सप्तमी एकवचन

	संज्ञाएँ	सप्तमी एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद** =राजा	नरिंदे/नरिंदम्मि
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** =राज्य	रज्जे/रज्जम्मि
इकारान्त पुल्लिंग	**सामि** =स्वामी	सामिम्मि
ईकारान्त पुल्लिंग	**गामणी**=गाँव का मुखिया	गामणिम्मि
उकारान्त पुल्लिंग	**साहु** =साधु	साहुम्मि
ऊकारान्त पुल्लिंग	**सयंभू** =स्वयंभू	सयंभुम्मि
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** =जल	वारिम्मि
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** =पदार्थ	वत्थुम्मि
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** =माता	मायाअ/मायाइ/मायाए
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** =युवती	जुवईअ/जुवईआ/ जुवईइ/जुवईए
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** =पुत्री	पुत्तीअ/पुत्तीआ/ पुत्तीइ/पुत्तीए
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** =गाय	धेणूअ/धेणूआ/ धेणूइ/धेणूए
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** =जामुन का पेड़	जंबूअ/जंबूआ/ जंबूइ/जंबूए

सर्वनाम	अम्हम्मि/मे/महम्मि	=मुझ में/मुझ पर
	तुमए/तुहम्मि/तुमम्मि	=तुम में/तुम पर
	तम्मि/तस्सि/तहि	=उनमें/उन पर (पु. व नपुं.)
	ताअ/ताइ/ताए	=उनमें/उन पर (स्त्रीलिंग)

अभ्यास

(1) वह घर में नाचता है। (2) आकाश में बादल गरजते हैं। (3) वह परीक्षा में मूर्च्छित होता है। (4) नर्मदा में पानी सूखता है। (5) सीता घर में कथा सुनती है। (6) वह पोटली पर बैठता है। (7) बुढापे में वाणी थकती है। (8) राम के राज्य में लक्ष्मी बढ़ती है। (9) उसकी माता घर में पुत्र को पालती है। (10) तुम हँसकर घर में नाचते हो।

———

पाठ 76

संज्ञा शब्द सप्तमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	सप्तमी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिंग	नरिंद =राजा	नरिंदेसु/नरिंदेसुं
अकारान्त नपुंसकलिंग	रज्ज =राज्य	रज्जेसु/रज्जेसुं
इकारान्त पुल्लिंग	सामि =स्वामी	सामीसु/सामीसुं
ईकारान्त पुल्लिंग	गामणी=गाँव का मुखिया	गामणीसु/गामणीसुं
उकारान्त पुल्लिंग	साहु =साधु	साहूसु/साहूसुं
ऊकारान्त पुल्लिंग	सयंभू =स्वयंभू	सयंभूसु/सयंभूसुं
इकारान्त नपुंसकलिंग	वारि =जल	वारीसु/वारीसुं
उकारान्त नपुंसकलिंग	वत्थु =पदार्थ	वत्थूसु/वत्थूसुं
आकारान्त स्त्रीलिंग	माया =माता	मायासु मायासुं
इकारान्त स्त्रीलिंग	जुवइ =युवती	जुवईसु/जुवईसुं
ईकारान्त स्त्रीलिंग	पुत्ती =पुत्री	पुत्तीसु/पुत्तीसुं
उकारान्त स्त्रीलिंग	धेणु =गाय	धेणूसु/धेणूसुं
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	जंबू =जामुन का पेड़	जंबूसु/जंबूसुं

सर्वनाम	अम्हेसु/ममेसु/मज्झेसु	=हमारे में
	तुसु/तुमेसु/तुम्हेसु	=तुम्हारे में
	तेसु/तेसुं	=उनमें (पु. व नपुं.)
	तीसु/तीसुं	=उनमें (स्त्रीलिंग)

———

पाठ 77

संज्ञा शब्द सम्बोधन एकवचन व बहुवचन

संज्ञाएँ	सम्बोधन	
	एकवचन	बहुवचन
देव	देवो, देवा, देव	देवा
हरि	हरी, हरि	हरी, हरओ, हरिणो, हरउ
गामणी	गामणि	गामणी, गामणओ, गामणिणो, गामणउ
साहु	साहू, साहु	साहू, साहओ, साहुणो, साहउ, साहवो
सयंभू	सयंभु	सयंभू, सयंभओ, सयंभुणो, सयंभउ, सयंभवो
माला	माले, माला	माला, मालाउ, मालाओ
मइ	मई, मइ	मई, मईउ, मईओ
लच्छी	लच्छि	लच्छी, लच्छीआ, लच्छीओ, लच्छीउ
धेणु	धेणू, धेणु	धेणू, धेणूउ, धेणूओ
बहू	बहु	बहू, बहूउ, बहूओ
कमल	कमल	कमलाइं, कमलाईं, कमलाणि
वारि	वारि	वारीइं, वारीईं वारीणि
महु	महु	महूइं, महूईं, महूणि

अभ्यास

1. हे स्वामी ! आप हमारी रक्षा करें। 2. हे राजा ! आपके राज्य में सुख नहीं है।

3. हे मित्र ! तुम मेरे घर पर आओ ।
4. हे माता ! तुम बालकों को पालो ।
5. हे सीता ! जंगल में बहुत दुःख हैं ।
6. हे पुत्र ! सत्य बोलो ।
7. हे युवती ! तुम हँसो ।
8. बालको ! तुम सब पुस्तकें पढ़ो ।
9. मित्रो ! आप सब राज्य से डरो ।
10. साधुओ ! संयम पालो ।

---

1. सम्बोधन में किसी को पुकारना या बुलाना प्रकट होता है । इसके लिए चिह्न हैं— अरे ! ओह ! आदि ।

पाठ 78

प्रेरणार्थक रूप

(क) सामान्य क्रियाओं के प्रेरणार्थक प्रत्यय — अ, ए, आव, आवे

क्रियाएँ	प्रत्यय			
	अ	ए	आव	आवे
हस=हँसना	हस+अ=हास (हँसाना) (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)	हस+ए=हासे (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)	हस+आव =हसाव	हस+आवे =हसावे
बिह=डरना	बिह+अ=बेह (डराना) (उपान्त्य 'इ' का 'ए' हो जाता है)	बिह+ए=बेहे (उपान्त्य 'इ' का 'ए' हो जाता है)	बिह+आव =बेहाव (उपान्त्य 'इ' का 'ए' हो जाता है)	बिह+आवे =बेहावे (उपान्त्य 'इ' का 'ए' हो जाता है)
दुह=दुहना	दुह+अ=दोह (दुहाना) (उपान्त्य 'उ' का 'ओ' हो जाता है)	दुह+ए=दोहे (उपान्त्य 'उ' का 'ओ' हो जाता है)	दुह+आव =दोहाव (उपान्त्य 'उ' का 'ओ' हो जाता है)	दुह+आवे =दोहावे (उपान्त्य 'उ' का 'ओ' हो जाता है)
रूस=रूसना	रूस+अ=रूस (रूसाना) (दीर्घ 'ऊ' में कोई परिवर्तन नहीं होता है)	रूस+ए=रूसे	रूस+आव =रूसाव	रूस+आवे =रूसावे
जीव=जीना	जीव+अ=जीव (जीवाना) (दीर्घ 'ई' में कोई परिवर्तन नहीं होता है)	जीव+ए=जीवे	जीव+आव =जीवाव	जीव+आवे =जीवावे

ठा=ठहरना	ठा+अ=ठाअ (ठहराना)	ठा+ए=ठाए	ठा+आव =ठाव	ठा+आवे =ठावे
णच्च=नाचना	णच्च+अ= णाच्च→णच्च (नचाना) (उपान्त्य 'अ' का 'आ' होता है पर सयुक्ताक्षर आगे होने पर 'अ' ही रहता है)	णच्च+ए=णच्चे	णच्च+आव =णच्चाव	णच्च+आवे =णच्चावे

नोट–1. क्रियाओं में प्रेरणार्थक के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कालों के प्रत्यय जोड़ने से विभिन्न कालों के प्रेरणार्थक रूप बन जाते हैं। जैसे—हासइ=हँसाता है, हासहि=हँसाते हो, हासमि=हँसाता हूँ।

2 उपधा में गुरु या दीर्घ स्वर हो तो इन प्रत्ययों के अतिरिक्त 'अवि' प्रत्यय भी लगता है। जैसे—रूसविइ। (वेचरदास दोशी, प्राकृत मार्गोपदेशिका, पृष्ठ 320)।

3. आर्ष प्राकृत में कहीं-कहीं प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। 'अवे' प्रत्यय परे होने पर धातु के उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है।
जैसे—कर+अवे=कारवे।

(ख) कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रेरणार्थक प्रत्यय — आवि, ०

क्रियाएँ	प्रत्यय	
	आवि	०
हस=हँसना	हस+आवि =हसावि	हस+० =हास (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)
कर=करना	कर+आवि =करावि	कर+० =कार
दुह=दुहना	दुह+आवि =दुहावि	दुह+० =दुह
रूस=रूसना	रूस+आवि =रूसावि	रूस+० =रूस
ठा=ठहरना	ठा+आवि =ठाआवि	ठा+० =ठा

नोट—क्रियाओं में प्रेरणार्थक के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कर्मवाच्य-भाववाच्य के प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

करावि + इज्ज/ईअ	= कराविज्ज/करावीअ
रूसावि + इज्ज/ईअ	= रूसाविज्ज/रूसावीअ
कार + इज्ज/ईअ	= कारिज्ज/कारीअ
रूस + इज्ज/ईअ	= रूसिज्ज/रूसीअ
ठा + इज्ज/ईअ	= ठाइज्ज/ठाईअ

इसके पश्चात् कालबोधक प्रत्यय लगाए जाते हैं। जैसे—कराविज्जइ, करावीअइ, कराविज्जहि, करावीअहि, कराविज्जमि, करावीअमि आदि।

(ग) कृदन्तों के प्रेरणार्थक प्रत्यय — आवि, 0

क्रियाएँ	प्रत्यय	
	आवि	0
हस = हँसना	हस + आवि = हसावि	हस + 0 = हास
कर = करना	कर + आवि = करावि	कर + 0 = कार

प्रेरणार्थक भूतकालिक कृदन्त

हसावि + अ	= हसाविअ	= हँसाया गया
हसावि + त	= हसावित	= हँसाया गया
हसावि + द	= हसाविद	= हँसाया गया
हास + अ	= हासिअ	= हँसाया गया
हास + त	= हासित	= हँसाया गया
हास + द	= हासिद	= हँसाया गया

प्रेरणार्थक वर्तमान कृदन्त

करावि + अ + न्त	= करावंतो, करावेंतो	= कराता हुआ
करावि + अ + माण	= करावमाणो, करावेमाणो	= कराता हुआ
कार + न्त	= कारंतो, कारेंतो	= कराता हुआ
कार + माण	= कारमाणो, कारेमाणो	= कराता हुआ

प्रेरणार्थक विधि कृदन्त

करावि + अव्व	=करावियव्व	=कराया जाना चाहिए
करावि + तव्व	=करावितव्व	=कराया जाना चाहिए
करावि + दव्व	=करावियव्व	=कराया जाना चाहिए
करावि + अणिज्ज	=करावणिज्ज	=कराया जाना चाहिए
करावि + अणीय	=करावणीय	=कराया जाना चाहिए

प्रेरणार्थक सम्बन्धक भूत कृदन्त

हसावि + तुं/उं	=हसावितुं/हसावेतुं/हसावियुं/हसावेउं	=हँसाकर
हसावि + तूण/तूणं	=हसावितूण/हसावितूणं	=हँसाकर
हसावि + उआण/तुआण	=हसावियुआण/हसावितुआण	=हँसाकर
हसावि + अ	=हसावियअ/हसावेअ	=हँसाकर
हसावि + इत्ता	=हसावित्ता	=हँसाकर
हसावि + इत्ताण	=हसावित्ताण	=हँसाकर
हसावि + ऊण/ऊणं	=हसावियूण/हसावियूणं	=हँसाकर
कार + तुं/उं	=कारितुं/कारेतुं/कारियुं/कारेउं	=कराकर
कार + तूण/तूणं	=कारितूण/कारेतूण/कारितूणं/कारेतूणं	=कराकर
कार + उआण/उआणं	=कारियुआण/कारेउआण/ कारियुआणं/कारेउआणं	=कराकर
कार + तुआण/तुआणं	=कारितुआण/कारेतुआण/ कारितुआणं/कारेतुआणं	=कराकर
कार + अ	=कारिअ/कारेअ	=कराकर
कार + इत्ता	=कारित्ता	=कराकर
कार + इत्ताण	=कारित्ताण	=कराकर
कार + ऊण/ऊणं	=कारियूण/कारेऊण/कारियूणं/कारेऊणं	=कराकर

प्रेरणार्थक हेत्वर्थक कृदन्त

हसावि + तुं	=हसावितुं	=हँसाने के लिए
हसावि + उं	=हसावियुं	=हँसाने के लिए

हसावि+दुं	=हसाविदुं	=हँसाने के लिए
हसावि+त्तए	=हसावित्तए	=हँसाने के लिए
कार+तुं	=कारितुं/कारेतुं	=कराने के लिए
कार+उं	=कारिउं/कारेउं	=कराने के लिए
कार+दुं	=कारिदुं/कारेदुं	=कराने के लिए
कार+त्तए	=कारित्तए	=कराने के लिए

पाठ 79

स्वार्थिक प्रत्यय

संज्ञाओं में स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ने पर उनके मूल अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

स्वार्थिक प्रत्यय—अ, इल्ल, उल्ल

जैसे—

हिअय + अ = हिअयअ
चद + अ = चंदअ
पल्लव + इल्ल = पल्लविल्ल
पिअ + उल्ल = पिउल्ल

पाठ 80

विभिन्न सर्वनामों का प्रयोग

ज (पु., नपुं.)	=जो,	**एत** (पु, नपुं.)	=यह
जा (स्त्री.)	=जो	**एता** (स्त्री)	=यह
क (पु, नपुं.)	=कौन,	**इम** (पु., नपुं.)	=यह
का (स्त्री)	=कौन,	**इमा** (स्त्री.)	=यह

उपर्युक्त सर्वनामों के रूप शब्द-रूपों में देखकर निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

(क)—

(1) जो मनुष्य थकता हे, वह सोता है। (2) जो गुस्सा करता है, वह छिपता है। (3) जिसके द्वारा सोया जाता है, उसके द्वारा हँसा जाता है। (4) जिसका शरीर थका हुआ है, उसका बुढ़ापा बढ़ा हुआ है। (5) मैं जिसको बुलाता हूँ, वह तुम हो। (6) जिस लकड़ी पर तुम बैठे हो, वह मेरी है। (7) तुम जिससे डरते हो, उससे मैं डरता हूँ।

(ख)—

(1) यह मनुष्य हँसता है। (2) ये मनुष्य हँसते हैं। (3) वह यह ग्रन्थ पढ़ता है। (4) वे ये ग्रन्थ पढ़ते हैं। (5) इस मनुष्य के द्वारा हँसा जाता है। (6) इन मनुष्यों के द्वारा ग्रन्थ पढ़े जाते हैं। (7) मै इसके लिए जीता हूँ। (8) वह इसके लिए जीती है। (9) मैं यह व्रत पालता हूँ। (10) इस मनुष्य में ज्ञान है।

(ग)—

(1) तुम क्या करते हो? (2) तुम किन कार्यों को करते हो। (3) वह किससे पानी पीता है। (4) वह किसका पुत्र है? (5) वह किससे डरता है? (6) तुम किसके लिए जीते हो? (7) किसमें तुम्हारी भक्ति है?

(घ)—

(1) कौन नाचता है। (2) वह कौनसा व्रत पालता है। (3) किसके द्वारा पानी पिया गया? (4) किसके लिए तुम उठते हो? (5) वह किसका पुत्र है? (6) यह किसकी पुस्तक है? (7) किस राज्य की तुम रक्षा करते हो? (8) किस घर में वह रहता है?

— — —

पाठ 81

अव्यय

जाव	=जब तक,	**जइ**	=यदि
ताव	=तब तक,	**जहा**	=जैसे
जत्थ	=जहाँ,	**तहा**	=वैसे
तहिं/तत्थ	=वहाँ,	**तह**	=उस तरह
जहेव	=जिस प्रकार से,	**एवमेव**	=इस तरह
तहेव	=उसी तरह,	**तं**	=इसलिए
केत्थु/कहिं	=कहाँ,	**विणा**	=बिना
एत्थ	=यहाँ,	**पि**	=भी
मा	=नहीं	**ता**	=तो

अभ्यास

(1) जब तक तुम जागते हो, तब तक मैं चित्र देखता हूँ। (2) जहाँ तुम्हारा गांव है, वहाँ मेरा घर है। (3) जिस प्रकार वह सुख चाहता है, उसी प्रकार मैं सुख चाहता हूँ। (4) तुम कहाँ रहते हो ? (5) मैं यहाँ रहता हूँ। (6) तुम नहीं हँसो। (7) राम नहीं उठता है। (8) यदि तुम कहते हो, तो मैं यह काम करता हूँ।

---

1. "ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई विकार/परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एक से, सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगो में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं।" [लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में घटती-बढ़ती न हो, वह अव्यय है।] (अभिनव प्राकृत व्याकरण, पृष्ठ 213)

———

पाठ 82

क्रियारूप

(i) वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मि	मो, मु, म
मध्यम पुरुष	सि, से	ह, इत्था, ध
अन्य पुरुष	इ, ए, दि, दे	न्ति, न्ते, इरे

हस=हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसमि, हसामि. हसेमि	हसमो, हसमु, हसम (अन्य रूपों के लिए देखें पाठ 5)
मध्यम पुरुष	हससि, हससे, हसेसि	हसह, हसित्था, हसध
अन्य पुरुष	हसइ, हसए, हसदि, हसदे	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे

नोट—वर्तमानकाल के लिए पाठ 1 से 8 तक देखें । आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 4 व 8 में देखें ।

(ii) आज्ञा एवं विधि के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	हि, सु, धि, ०, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे	ह, ध
अन्य पुरुष	उ, दु	न्तु

हस=हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसेमो
मध्यम पुरुष	हसहि, हससु, हसधि, हस, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे	हसह, हसेह, हसध, हसेध
अन्य पुरुष	हसउ, हसेउ, हसदु, हसेदु	हसन्तु, हसेन्तु

नोट—आज्ञा एवं विधि के लिए पाठ 9 से 16 तक देखें। आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 12 एवं 16 में देखें।

(iii) भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हि, हा, स्सि, स्सा, स्सं (पूर्ण प्रत्यय)	हि, हा, स्सि, स्सा, हिस्सा, हित्था (पूर्ण प्रत्यय)
मध्यम पुरुष	हि, स्स, स्सि	हि, स्स स्सि
अन्य पुरुष	हि, स्स, स्सि	हि, स्स, स्सि

हस=हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसिहिमि, हसिहामि, हसिस्सिमि, हसिस्सामि, हसेहिमि, हसेहामि, हसेस्सामि, हसिस्सं, हसेस्सं	हसिहिमो, हसिस्सामो, हसिस्सिमो, हसिहामो (अन्य रूपों के लिए देखें पाठ 23)
मध्यम पुरुष	हसिहिसि, हसिहिसे, हसिस्ससि, हसिस्ससे, हसिस्सिसि, हसिस्सिसे	हसिहिह, हसिहिध, हसिहित्था (अन्य रूप पाठ 24 में देखें)
अन्य पुरुष	हसिहिइ, हसिहिए, हसिहिदि, हसिहिदे (अन्य रूप पाठ 21 में देखें)	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे (अन्य रूप पाठ 25 में देखें)

नोट—भविष्यत्काल के लिए पाठ 19 से 26 तक देखें। आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 22 और 26 में देखें।

———

पाठ 83

क्रियारूप

अस=होना

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	अत्थि, म्हि	अत्थि, म्हो, म्ह
मध्यम पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि
अन्य पुरुष	अत्थि	अत्थि

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	आसि	आसि
मध्यम पुरुष	आसि	आसि
अन्य पुरुष	आसि	आसि

पाठ 84

संज्ञा शब्द

अकारान्त पुल्लिग—देव

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवो	देवा
द्वितीया	देवं	देवा, देवे
तृतीया	देवेण, देवेणं	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं
चतुर्थी	देवस्स, देवाय	देवाण, देवाणं
पंचमी	देवत्तो, देवाओ, देवाउ देवाहि, देवाहिन्तो, देवा	देवत्तो, देवाओ, देवाउ देवाहि, देवाहिन्तो, देवासुन्तो देवेहि, देवेहिन्तो, देवेसुन्तो
षष्ठी	देवस्स	देवाण, देवाणं
सप्तमी	देवे, देवम्मि	देवेसु, देवेसुं
सम्बोधन	देवो, देव, देवा	देवा

इकारान्त पुल्लिग—हरि

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरी	हरउ, हरओ, हरिणो, हरी
द्वितीया	हरिं	हरी, हरिणो
तृतीया	हरिणा	हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं
चतुर्थी	हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
पंचमी	हरिणो, हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिन्तो	हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिन्तो, हरीसुन्तो
षष्ठी	हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
सप्तमी	हरिम्मि	हरीसु, हरीसुं
सम्बोधन	हरी, हरि	हरउ, हरओ, हरिणो, हरी

ईकारान्त पुल्लिग—गामणी

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी	गामणउ, गामणओ गामणिणो, गामणी
द्वितीया	गामणि	गामणी, गामणिणो
तृतीया	गामणिणा	गामणीहि, गामणीहिँ, गामणीहिं
चतुर्थी	गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
पंचमी	गामणिणो, गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिन्तो	गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिन्तो, गामणीसुन्तो
षष्ठी	गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
सप्तमी	गामणिम्मि	गामणीसु, गामणीसुं
सम्बोधन	गामणि	गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी

उकारान्त पुल्लिग—साहु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	साहू	साहउ, साहओ, साहवो, साहुणो, साहू
द्वितीया	साहुं	साहू, साहुणो
तृतीया	साहुणा	साहूहि, साहूहिँ, साहूहिं
चतुर्थी	साहुणो, साहुस्स	साहूण, साहूणं
पंचमी	साहुणो, साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो	साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो, साहूसुन्तो
षष्ठी	साहुणो, साहुस्स	साहूण, साहूणं
सप्तमी	साहुम्मि	साहूसु, साहूसुं
सम्बोधन	साहू, साहु	साहउ, साहओ, साहवो, साहुणो, साहु

ऊकारान्त पुल्लिग—सयंभू

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू	सयंभउ, सयंभओ, सयंभवो, सयंभुणो, सयंभू
द्वितीया	सयंभुं	सयंभू, सयंभुणो
तृतीया	सयंभुणा	सयंभूहिं, सयंभूहिँ, सयंभूहि
चतुर्थी	सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभूण, सयंभूणं
पंचमी	सयंभुणो, सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिन्तो	सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिन्तो, सयंभूसुन्तो
षष्ठी	सयंभूणो, सयंभुस्स	सयंभूण, सयंभूणं
सप्तमी	सयंभुम्मि	सयंभूसु, सयंभूसुं
सम्बोधन	सयंभु	सयंभउ, सयंभओ, सयंभवो, सयंभुणो, सयंभू

अकारान्त नपुंसकलिंग—कमल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कमलं	कमलाइँ, कमलाइं कमलाणि
द्वितीया	कमलं	कमलाइँ, कमलाइं, कमलाणि
तृतीया	कमलेण, कमलेणं	कमलेहि, कमलेहिं, कमलेहिँ
चतुर्थी	कमलस्स, कमलाय	कमलाण, कमलाणं
पंचमी	कमलत्तो, कमलाओ, कमलाउ, कमलाहि, कमलाहिन्तो, कमला	कमलत्तो, कमलाओ, कमलाउ, कमलाहि, कमलाहिन्तो, कमलासुन्तो, कमलेहि, कमलेहिन्तो, कमलेसुन्तो
षष्ठी	कमलस्स	कमलाण, कमलाणं
सप्तमी	कमले, कमलम्मि	कमलेसु, कमलेसुं
सम्बोधन	कमल	कमलाइँ, कमलाइं, कमलाणि

इकारान्त नपुंसकलिंग—वारि

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारीइँ, वारीइं, वारीणि
द्वितीया	वारि	वारीइँ, वारीइं, वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहि, वारीहिं, वारीहिँ
चतुर्थी	वारिणो, वारिस्स	वारीण, वारीणं
पंचमी	वारिणो वारित्तो वारीओ वारीउ, वारीहिन्तो	वारित्तो, वारिओ, वारीउ, वारिहिन्तो, वारीसुन्तो
षष्ठी	वारिणो, वारिस्स	वारीण, वारीणं
सप्तमी	वारिम्मि	वारीसु, वारीसुं
सम्बोधन	वारि	वारीइँ, वारीइं, वारीणि

उकारान्त नपुंसकलिंग—महु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
द्वितीया	महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
तृतीया	महुणा	महूहि, महूहिं, महूहिँ
चतुर्थी	महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
पंचमी	महुणो, महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो, महूसुन्तो
षष्ठी	महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
सप्तमी	महुम्मि	महूसु, महूसुं
सम्बोधन	महु	महूइँ, महूइं, महूणि

आकारान्त स्त्रीलिंग—कहा

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कहा	कहाउ, कहाओ, कहा
द्वितीया	कह	कहाउ, कहाओ कहा
तृतीया	कहाअ, कहाइ, कहाए	कहाहि, कहाहिँ, कहाहिं
चतुर्थी	कहाअ, कहाइ कहाए	कहाण, कहाणं
पंचमी	कहाअ, कहाइ, कहाए, कहत्तो, कहाओ, कहाउ, कहाहिन्तो	कहत्तो, कहाओ, कहाउ, कहाहिन्तो, कहासुन्तो
षष्ठी	कहाअ कहाइ, कहाए	कहाण, कहाणं
सप्तमी	कहाअ, कहाइ, कहाए	कहासु, कहासं
सम्बोधन	कहे, कहा	कहाउ, कहाओ, कहा

इकारान्त स्त्रीलिंग—मइ

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मई	मईउ, मईओ, मई
द्वितीया	मइं	मईउ, मईओ, मई
तृतीया	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईहि, मईहिँ, मईहिं
चतुर्थी	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
पंचमी	मईअ, मईआ, मईइ, मईए, मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो	मईत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो, मईसुन्तो
षष्ठी	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
सप्तमी	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईसु, मईसुं
सम्बोधन	मई, मइ	मईउ, मईओ, मई

इकारान्त स्त्रीलिंग लच्छी

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लच्छी, लच्छीआ	लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छीआ, लच्छी
द्वितीया	लच्छि	लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छीआ, लच्छी
तृतीया	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ लच्छीए	लच्छीहि, लच्छीहिँ, लच्छीहिं
चतुर्थी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण, लच्छीणं
पंचमी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए, लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो	लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो, लच्छीसुन्तो
षष्ठी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण, लच्छीणं
सप्तमी	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीसु, लच्छीसुं
सम्बोधन	लच्छि	लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छीआ, लच्छी

उकारान्त स्त्रीलिंग—धेणु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेणू	धेणूउ धेणूओ, धेणू
द्वितीया	धेणुं	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
तृतीया	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिँ, धेणूहिं
चतुर्थी	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पंचमी	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो
षष्ठी	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
सप्तमी	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सम्बोधन	धेणू, धेणु	धेणूउ, धेणूआ, धेण

ऊकारान्त स्त्रीलिंग बहू

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहू	बहूउ बहूओ, बहू
द्वितीया	बहुं	बहूउ, बहूओ, बहू
तृतीया	बहूअ, बहूआ, बहूइ बहूए	बहूहि, बहूहिं, बहूहिं
चतुर्थी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूण, बहूणं
पंचमी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए, बहुत्तो बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो	बहुत्तो, बहूओ, बहूउ बहूहिन्तो, बहूसुन्तो
षष्ठी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूण, बहूणं
सप्तमी	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूसु, बहूसुं
सम्बोधन	बहु	बहूउ, बहूओ, बहू

आत्मन्→आत्म→अप्प या अत्त

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अप्पा	अप्पा, अप्पाणो
द्वितीया	अप्पं	अप्पा, अप्पाणो
तृतीया	अप्पणा, अप्पाणिआ, अप्पणइआ	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिं
चतुर्थी	अप्पणो	अप्पाण, अप्पाणं
पंचमी	अप्पाणो	अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहिं, अप्पाहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेहि, अप्पेहिन्तो, अप्पेसुन्तो
षष्ठी	अप्पणो	अप्पाण, अप्पाणं
सप्तमी	अप्पम्मि, अप्पे	अप्पेसु, अप्पेसुं
सम्बोधन	अप्पा, अप्प	अप्पा, अप्पाणो

नोट—(i) **अप्प** के रूप **देव** की तरह भी चलेंगे ।

(ii) **अप्पाण** या **अत्ताण** के रूप भी **देव** की तरह चलेंगे ।

राजन्→राज→राअ→राय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया	राइणं	राया, रायाणो, राइणो
तृतीया	राइणा, रण्ण	राईहि, राईहिँ, राईहि
चतुर्थी	राइणो, रायणो, रण्णो	राइणं, राईण, राईणं
पंचमी	राइणो, रायणो, रण्णो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईसुन्तो
षष्ठी	राइणो, रायणो, रण्णो	राइणं, राईण, राईणं
सप्तमी	राइम्मि	राईसु, राईसुं
सम्बोधन	राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

नोट—(i) राअ या राय के रूप देव की तरह भी चलेंगे।
(ii) रायाण या रायाण के रूप भी देव की तरह चलेंगे।

सर्वनाम शब्द

पुंल्लिग—सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे, सव्वा
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
चतुर्थी	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
सप्तमी	सव्वहि, सव्वम्मि, सव्वस्सि	सव्वेसु, सव्वेसुं
सम्बोधन	सव्व, सव्वो	सव्वे

नपुंसकलिंग—सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
द्वितीया	सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
चतुर्थी	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो
षष्ठी	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
सप्तमी	सव्वहिं, सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ	सव्वेसु, सव्वेसुं
सम्बोधन	सव्व	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि

स्त्रीलिंग – सव्वा

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
द्वितीया	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
तृतीया	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि, सव्वाहिँ, सव्वाहिं
चतुर्थी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो
षष्ठी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
सप्तमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासुं
सम्बोधन	सव्वे, सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा

पुल्लिग ण, त

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो, ण	ते, णे
द्वितीया	तं, णं	ते, ता, णे, णा
तृतीया	तिणा, तेण, तेणं, णिणा, णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ
चतुर्थी	तास, तस्स, स	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं
पंचमी	तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेसुन्तो, तेहिन्तो
षष्ठी	तास, तस्स, से	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं
सप्तमी	ताहे, ताला, तइआ, तहिं, तम्मि, तस्सि, तत्थ	तेसु, तेसुं

नपुंसकलिंग—त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं, णं	ताइं, ताईं, ताणि, णाइं, णाईं, णाणि
द्वितीया	तं, णं	ताइं, ताईं, ताणि, णाइं, णाईं, णाणि
तृतीया	तिणा, तेण, तेणं, णिणा, णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ
चतुर्थी	तास तस्स, से	तास, तेसिं सिं, ताण, ताणं
पंचमी	तो तम्हा, तत्तो ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेहिन्तो, तेसुन्तो
षष्ठी	तास तस्स, ते	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं
सप्तमी	ताहे, ताला, तइआ, तहिं, तम्मि, तस्सि, तत्थ	तेसु, तेसुं

स्त्रीलिंग—ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा, णा	तीओ, तीआ, तीउ ती, ताओ, ताउ, ता
द्वितीया	तं, णं	तीओ, तीआ, तीउ, ती, ताओ, ता
तृतीया	तीअ, तीआ, तीइ, तीए, ताअ, ताइ, ताए णाअ, णाइ, णाए	तीहि, तीहिं, तीहिँ, ताहि, ताहिं, ताहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ
चतुर्थी	तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ, तीइ, तास, से, ताअ, ताइ, ताए	सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास
पंचमी	तीअ, ताआ, तीइ, तीए, तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तिसुन्तो, तत्तो, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो
षष्ठी	तिस्सा, तीसे, तीअ तीआ, तीइ, तीए, तास, से, ताअ, ताइ, ताए	सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास
सप्तमी	तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, ताइ, ताए	तीसु, तीसुं, तासु, तासुं

पुल्लिंग—ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	जं	जे, जा
तृतीया	जिणा, जेण, जेणं	जेहि, जेहिं जेहिँ
चतुर्थी	जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
पंचमी	जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहि, जेहिन्तो, जेसुन्तो
षष्ठी	जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
सप्तमी	जाहे जाला, जइआ, जहिं, जम्मि, जस्सि, जत्थ	जेसु, जेसुं

नपुंसकलिंग—ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं	जाइं, जाइँ, जाणि
द्वितीया	जं	जाइं, जाइँ, जाणि
तृतीया	जिणा, जेण, जेणं	जेहि, जेहिँ, जेहिं
चतुर्थी	जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
पंचमी	जम्हा जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहि, जेहिन्तो, जेसुन्तो
षष्ठी	जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
सप्तमी	जाहे, जाला, जइआ, जहिं, जम्मि, जस्सि, जत्थ	जेसु, जेसुं

स्त्रीलिंग—जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा	जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ, जाउ, जा
द्वितीया	जं	जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ, जाउ, जा
तृतीया	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जीहि, जीहिं, जीहिँ जाहि, जाहिं, जाहिँ
चतुर्थी	जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जेसिं, जाण, जाणं
पंचमी	जीअ जीआ जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो
षष्ठी	जिस्सा, जीसे, जीअ, जीए, जाअ, जाए	जेसिं, जाण, जाणं
सप्तमी	जीअ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

पुल्लिग—क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के, का
तृतीया	किणा, केण, केणं	केहि, केहिं, केहिँ
चतुर्थी	कास, कस्स	कास, केसिं, काण, काणं
पंचमी	किणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो, केहि, केहिन्तो, केसुन्तो
षष्ठी	कास, कस्स	कास केसिं, काण, काणं
सप्तमी	काहे, काला, कइआ, कहिं, कम्मि, कस्सि, कत्थ	केसु, केसुं

नपुंसकलिंग—क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	किं	काइं, काइँ, काणि
द्वितीया	किं	काइं, काइँ, काणि
तृतीया	किणा, केण, केणं	केहि, केहिं, केहिँ
चतुर्थी	कास, कस्स	कास, केसिं, काण, काणं
पंचमी	किणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो, केहि, केहिन्तो, केसुन्तो
षष्ठी	कास, कस्स	कास, केसिं, काण, काणं
सप्तमी	काहे, काला, कइआ, कहिं, कम्मि, कस्सि, कत्थ	केसु, केसुं

स्त्रीलिंग—का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
द्वितीया	कं	कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
तृतीया	कीअ, कीए, काअ, काए	कीहि, कीहिं, कीहिँ, काहि काहिं, कीहिँ
चतुर्थी	किस्सा, कीसे, कीअ, कास, काए	केसिं, काण, काणं, कास
पंचमी	कीअ, कीए, कित्तो, कीओ, कीहिन्तो, काअ, कत्तो, काओ, काहिन्तो	कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो
षष्ठी	किस्सा, कीसे, कीए, कास, काइ, काए	केसिं, काण, काणं
सप्तमी	कीअ, कीआ, कीइ, काअ, काइ, काए	कीसु, कीसुं, कासु, कासुं

पुल्लिंग—एत, एअ (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसो, एस, इणं, इणमो	एते, एए
द्वितीया	एतं, एअं	एते, एता, एस, एआ
तृतीया	एतेणा, एतेण, एतेणं, एइणा, एएण, एएणं	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ, एएहि, एएहिं, एएहिँ
चतुर्थी	से, एतस्स, एअस्स	सिं, एतेसिं, एताण, एताणं, एएसिं, एआण, एआणं
पंचमी	एत्तो, एत्ताहे, एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ	एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एतासुन्तो, एतेहि, एतेहिन्तो, एतेसुन्तो, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआसुन्तो
षष्ठी	से, एअस्स, एतस्स	सिं, एतेसिं, एताण, एताणं, एएसिं एआण, एआणं
सप्तमी	आयम्मि, इअम्मि, एतम्मि, एतस्सिं, एअम्मि, एअस्सिं, एत्थ	एतेसु, एतेसुं, एएसु, एएसुं

नपुसकलिंग—एत, एअ (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एअं, एस, इणं, इणमो	एआइं, एआईं, एआणि
द्वितीया	एअं	एआइं, एआईं, एआणि
तृतीया	एतेणा, एतेण, एतेणं, एइणा, एएण, एएणं	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ एएहि, एएहिं, एएहिँ
चतुर्थी	से, एतस्स, एअस्स	सिं, एतेसिं, एताण, एताणं, एएसिं, एआण, एआणं
पचमी	एत्तो, एत्ताहे, एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ	एतत्तो, एताओ, एताउ, एतीह, एताहिन्तो, एतासुन्तो, एतेहि एतेहिन्तो, एतेसुन्तो, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआसुन्तो
षष्ठी	से, एअस्स, एतस्स	सिं, एतेसिं, एताण, एताणं, एएसिं, एआण, एआणं
सप्तमी	आयम्मि, इअम्मि, एतम्मि, एतस्सि, एअम्मि, एअस्सि, एत्थ	एतेसु, एतेसुं, एएसु, एएसुं

स्त्रीलिंग—एइ, एआ (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसा, एस, इणं, इणमो, एई, एइआ	एईआ, एई, एआओ, एआ
द्वितीया	एइं, एअं	एईआ, एईओ, एआओ, एआउ
तृतीया	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआए	एईहि, एईहिं, एईहिँ, एआहि, एआहिं, एआहिँ
चतुर्थी	एईअ, एआअ, एईइ, एआए	एईण, एईणं, सिं, एआण, एआणं
पंचमी	एईअ, एईआ, एईइ, एइत्तो, एईहिन्तो, एआअ, एअत्तो, एआहिन्तो	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो
षष्ठी	एईअ, एईआ, एईइ, एआअ, एआए	एईण, सिं, एआण, एआणं
सप्तमी	एईअ, एईआ, एआअ, एआइ	एईसु, एईसुं, एआसु, एआसुं

पुल्लिग—इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयं, इमो	इमे
द्वितीया	इणं, इमं, णं	इमे, इमा, णे, णा
तृतीया	इमिणा, इमेण, इमेणं, णिणा, णेण, णेणं	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ, एहि, एहिं, एहिँ
चतुर्थी	से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पंचमी	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि इमाहिन्तो, इमासुन्तो
षष्ठी	से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
सप्तमी	अस्सिं, इमम्मि, इमस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

नपुंसकलिंग—इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदं इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि
द्वितीया	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि
तृतीया	इमिणा, इमेण इमेणं, णिणा, णेण, णेणं	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ, एहि, एहिं, एहिँ
चतुर्थी	से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पंचमी	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो
षष्ठी	से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
सप्तमी	अस्सिं, इमम्मि, इमस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

स्त्रीलिंग—इमी, इमा (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमी, इमीअ, इमिआ, इमा	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, इमा
द्वितीया	इमि, इमं, इणं, णं	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, णाओ, णाउ
तृतीया	इमीअ इमीआ, इमाअ, इमाए, णाअ, णाये	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ, इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ, णाहि, णाहिं
चतुर्थी	इमीअ, इमीइ, इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पंचमी	इमीअ, इमीआ, इमीए, इमित्तो, इमाओ, इमाअ, इमाइ, इमाउ, इमत्तो इमाहिन्तो	इमित्तो, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो, इमत्तो, इमाओ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो,
षष्ठी	इमीअ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
सप्तमी	इमीअ, इमीआ, इमीए, इमाअ, इमाए	इमीसु, इमीसुं, इमासु, इमासुं

पुल्लिंग—अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू	अमुणो, अमणो, अमओ, अमउ, अमू
द्वितीया	अमुं	अमू, अमुणो
तृतीया	अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
चतुर्थी	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमुणो अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
सप्तमी	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि	अमूसु, अमूसुं

नपुंसकलिंग—अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमुं	अमूइ, अमूइँ, अमूणि
द्वितीया	अमुं	अमूइ, अमूइँ, अमूणि
तृतीया	अमुणा	अमूहि, अमूहि, अमूहिँ
चतुर्थी	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
सप्तमी	आयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि	अमूसु, अमूसुं

स्त्रीलिंग—अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
द्वितीया	अमुं	अमूओ, अमूउ, अमू
तृतीया	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहि, अमूहिँ
चतुर्थी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमूअ, अमूइ, अमूए, अमुत्तो, अमूओ	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
षष्ठी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
सप्तमी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूसु, अमूसुं

अन्न (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अन्नो	अन्ने
द्वितीया	अन्नं	अन्ने, अन्ना
तृतीया	अन्नेण अन्नेणं	अन्नेहि, अन्नेहिं, अन्नेहिँ
चतुर्थी	अन्नाय, अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाण, अन्नाणं
पंचमी	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्ना	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्नेहिन्तो, अन्नासुन्तो, अन्नेसुन्तो
षष्ठी	अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाण, अन्नाणं
सप्तमी	अन्नहिं, अन्नम्मि, अन्नासिं, अन्नत्थ	अन्नेसु, अन्नेसुं
सम्बोधन	अन्न, अन्नो	अन्ने

तीनों लिङ्गों में—अम्ह (मैं)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे
द्वितीया	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृतीया	मि, मे, ममं, ममए ममाइ, मइ, मए, मे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
चतुर्थी व षष्ठी	मे, मइ, मम, मह, मज्झं मज्झ, मम्हं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, ममाणं, महाण, महाणं, मज्झाणं
पंचमी	मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो, ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममा, महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिन्तो, महा, मज्झत्तो, मज्झाओ. मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो, मज्झा	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममासुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो, अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
सप्तमी	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, अम्हस्सि, अम्हत्थ, ममम्मि, ममस्सि, ममत्थ, महम्मि, महस्सि, महत्थ, मज्झम्मि, मज्झस्सि, मज्झत्थ	अम्हेसु, अम्हेसुं, ममेसु, ममेसुं, महेसु, महेसुं, मज्झेसु, मज्झेसुं, ममसु, ममसुं, महसु, महसुं, मज्झसु, मज्झसुं

तीनों लिंगों में— तुम्ह (तुम)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे, तुम्हे, तुज्झे, उम्हे
द्वितीया	तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुवे	वो, तुज्झ, तुज्झे, तुम्हे, तुह्मे, तुय्हे, उय्हे, भे
तृतीया	भे, दि, दे, ते, तइ, , तुमं, तए, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुब्भं, तुम्हं, तुज्झं, तुब्भाण, तुम्हाण, तुज्झाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाणं, तुब्भाणं, तुम्हाणं
पंचमी	तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुव, तुमत्तो, तुहत्तो, तुहाओ, तुहाहि, तुब्भत्तो, तुब्भाहिन्तो, तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ	तुब्भत्तो, तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो, तुम्हेहि, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाहिन्तो, तुज्झासुन्तो, तुय्हत्तो, तुय्हाउ, उय्हत्तो, उय्हासुन्तो, उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो
सप्तमी	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुवस्सि, तुवत्थ, तुमम्मि, तुमस्सि, तुमत्थ, तुहम्मि, तुहस्सि, तुहत्थ, तुब्भम्मि, तुब्भस्सि, तुब्भत्थ, तुज्झम्मि, तुज्झस्सि, तुज्झत्थ	तुसु, तुसुं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भेसु, तुब्भेसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुज्झेसु, तुज्झेसुं, तुमसु, तुमसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्झासु, तुज्झासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं

पुल्लिग—एग, एअ, एक्क (एक)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एगो, एओ, एक्को	एगे, एए, एक्के
द्वितीया	एगं, एअं, एक्कं	एगे, एगा, एए, एआ, एक्के, एक्का
तृतीया	एगेण, एएण, एक्केण, एगेणं, एएणं, एक्केणं	एगेहि, एएहि, एक्केहि, एगेहिं, एएहिं, एक्केहिं, एगेहिँ, एएहिँ, एक्केहिँ
चतुर्थी	एगाय, एआय, एक्काय, एगस्स, एअस्स, एक्कस्स	एगेसिं, एएसिं, एक्केसिं, एगाण, एआण, एक्काण, एगाणं, एआणं, एक्काणं
पंचमी	एगत्तो, एअत्तो, एक्कत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहि, एआहि, एक्काहि, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो, एगा, एआ, एक्का	एगत्तो, एअत्तो, एकत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहि, एआहि, एक्काहि, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो, एगासुन्तो, एआसुन्तो, एक्कासुन्तो
षष्ठी	एगस्स, एअस्स, एकस्स	एगेसिं, एएसिं, एक्केसिं, एगाण, एआण, एक्काण, एगाणं, एआणं, एक्काणं
सप्तमी	एगहि, एअहि, एक्कहि, एगम्मि, एअम्मि, एक्कम्मि, एगस्सि, एअस्सि, एक्कस्सि	एगेसु, एएसु, एक्केसु एगेसुं, एएसुं, एक्केसुं

नपुंसकलिंग—एग, एअ, एक्क (एक)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एगं, एअं, एक्कं	एगाइं, एआइं, एक्काइं, एगाईं, एआईं, एक्काईं, एगाणि, एआणि, एक्काणि
द्वितीया	एगं, एअं, एक्कं	एगाइं, एआइं, एक्काइं, एगाईं, एआईं, एक्काईं, एगाणि, एआणि, एक्काणि
तृतीया	एगेण, एएण, एक्केण, एगेणं, एएणं, एक्केणं	एगेहि, एएहि, एक्केहि, एगेहिं, एएहिं, एक्केहिं, एगेहिँ, एएहिँ, एक्केहिँ
चतुर्थी	एगाय, एआय, एक्काय, एगस्स, एअस्स, एक्कस्स	एगेसिं, एएसिं एक्केसिं, एगाण, एआण, एक्काण, एगाणं, एआणं, एक्काणं
पंचमी	एगत्तो, एअत्तो, एक्कत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहि, एआहि, एक्काहि, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो, एगा, एआ, एक्का	एगत्तो, एअत्तो, एक्कत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहि, एआहि, एक्काहि, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो, एगासुन्तो, एआसुन्तो, एक्कासुन्तो
षष्ठी	एगस्स, एअस्स, एक्कस्स	एगेसिं, एएसिं, एक्केसिं, एगाण, एआण, एक्काण, एगाणं, एआणं, एक्काणं
सप्तमी	एगंहि, एअंहि, एक्कंहि, एगम्मि, एअम्मि, एक्कम्मि, एगस्सि, एअस्सि, एक्कस्सि	एगेसु, एएसु, एक्केसु, एगेसुं, एएसुं, एक्केसुं

स्त्रीलिंग—एगा, एआ, एक्का (एक)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एगा, एआ, एक्क,	एगा, एआ, एक्का, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ
द्वितीया	एगं, एअं, एक्कं	एगा, एआ, एक्का, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ
तृतीया	एगाअ, एआअ, एक्काअ, एगाइ, एआइ, एक्काइ, एगाए, एआए, एक्काए,	एगाहि, एआहि, एक्काहि, एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं, एगाहिँ, एआहिँ, एक्काहिँ
चतुर्थी	एगाअ, एआअ, एक्काअ, एगाइ, एआइ, एक्काइ, एगाए, एआए, एक्काए	एगेसि, एएसि, एक्केसि, एगाण, एआण, एक्काण, एगाणं, एआणं, एक्काणं
पंचमी	एगाअ, एआअ, एक्काअ, एगाइ, एआइ, एक्काइ, एगाए, एआए, एक्काए, एगत्तो, एअत्तो, एक्कत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो	एगत्तो, एअत्तो, एक्कत्तो, एगाओ, एआओ, एक्काओ, एगाउ, एआउ, एक्काउ, एगाहिन्तो, एआहिन्तो, एक्काहिन्तो, एगासुन्तो, एआसुन्तो, एक्कासुन्तो
षष्ठी	एगाअ, एआअ, एक्काअ, एगाइ, एआइ, एक्काइ, एगाए, एआए, एक्काए	एगेसि, एएसि, एक्केसि, एगाण, एआण, एक्काण, एगाण, एआणं, एक्काण
सप्तमी	एगाअ, एआअ, एक्काअ, एगाइ, एआइ, एक्काइ, एगाए, एआए, एक्काए	एगासु, एआसु, एक्कासु, एगासुं, एआसुं, एक्कासुं

पाठ 85

हेमचन्द्र के अनुसार

प्राकृत के

संज्ञा-शब्द-रूपों के

प्रत्यय (विभक्ति चिह्न)

प्रथमा एकवचन

पुंलिंग	देव – अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	अ→ओ	०→ई	०	०→ऊ	०
नपुंसकलिंग	कमल—अ	वारि—इ	—	महु—उ	—
	(–) अ→अं	(–) इ→इं		(–) उ→उं	
स्त्रीलिंग	कहा – आ	मइ—इ	लच्छी – ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	०	०→ई	०	०→ऊ	०
			आ		

प्रथमा बहुवचन

पुल्लिग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	0→आ	0→ई	0	0→ऊ	0
		अउ	अउ	अउ	अउ
		अओ	अओ	अओ	अओ
		णो	णो→इणो	अवो	अवो
					णो→उणो
नपुंसकलिंग	कमल—अ	वारि—इ	—	महु—उ	—
	इँ→आइँ	इँ→ईइँ		इँ→ऊइँ	
	इं→आइं	इं→ईइं		इं→ऊइं	
	णि→आणि	णि→ईणि		णि→ऊणि	
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी—ई	घेणु—उ	बहू—ऊ
	0	0→ई	0	0→ऊ	0
	ओ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	उ	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
			आ		

द्वितीया एकवचन

पुल्लिग	देव—अ (÷) अ→अं	हरि—इ (÷) इ→इं	गामणी—ई (÷) ई→इं	साहु—उ (÷) उ→उं	सयंभू—ऊ (÷) ऊ→उं
नपुंसकलिंग	कमल—अ (÷) अ→अं	वारि—इ (÷) इ→इं	—	महु—उ (÷) उ→उं	—
स्त्रीलिंग	कहा—आ (÷) आ→अं	मइ—इ (÷) इ→इं	लच्छी—ई (÷) ई→इं	धेणु—उ (÷) उ→उं	बहू—ऊ (÷) ऊ→उं

द्वितीया बहुवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	०→आ	०→ई	०	०→ऊ	०
	०→ए	णो	णो→इणो	णो	णो→उणो
नपुंसकलिंग	कमल—अ	वारि—इ	—	महु—उ	—
	इँ→आइँ	इँ→ईइँ		इँ→ऊइँ	
	इं→आइं	इं→ईइं		इं→ऊइं	
	णि→आणि	णि→ईणि		णि→ऊणि	
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	०	०→ईइ	०	०→ऊ	०
	ओ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	उ	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
			आ		

तृतीया एकवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	ण→एण	णा	णा→इणा	णा	णा→उणा
	णं→एणं				
नपुंसकलिंग	कमल—अ	वारि—इ	—	महु—उ	—
	ण→एण	णा		णा	
	णं→एणं				
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	अ	अ→ईअ	अ	अ→ऊअ	अ
	इ	आ→ईआ	इ	आ→ऊआ	इ
	ए	इ→ईइ	ए	इ→ऊइ	ए
		ए→ईए	आ	ए→ऊए	आ

तृतीया बहुवचन

पुल्लिग	**देव—अ**	**हरि—इ**	**गामणी--ई**	**साहु--उ**	**सयंभू--ऊ**
	हि→एहि	हि→ईहि	हि	हि→ऊहि	हि
	हिँ→एहिँ	हिँ→ईहिँ	हिँ	हिँ→ऊहिँ	हिँ
	हिं→एहिं	हिं→ईहिं	हिं	हिं→ऊहिं	हिं
नपुंसकलिंग	**कमल—अ**	**वारि—इ**	—	**महु उ**	—
	हि→एहि	हि→ईहि		हि→ऊहि	
	हिँ→एहिँ	हिँ→ईहिँ		हिँ→ऊहिँ	
	हिं→एहिं	हिं→ईहिं		हिं→ऊहिं	
स्त्रीलिंग	**कहा—आ**	**मइ—इ**	**लच्छी—ई**	**धेणु—उ**	**बहु—ऊ**
	हि	हि→ईहि	हि	हि→ऊहि	हि
	हिँ	हिँ→ईहिँ	हिँ	हिँ→ऊहिँ	हिँ
	हिं	हिं→ईहिं	हिं	हिं→ऊहिं	हिं

चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

पुल्लिग	**देव—अ**	**हरि—इ**	**गामणी—ई**	**साहु—उ**	**सयंभू ऊ**
	स्स	स्स	स्स→इस्स	स्स	स्स→उस्स
	आय	णो	णो→इणो	णो	णो→उणो
नपुंसकलिंग	**कमल—अ**	**वारि—इ**	—	**महु—उ**	—
	स्स	स्स		स्स	
	आय	णो		णो	
स्त्रीलिंग	**कहा—आ**	**मइ—इ**	**लच्छी—ई**	**धेणु—उ**	**बहू - ऊ**
	अ	अ→ईअ	अ	अ→ऊअ	अ
	इ	आ→ईआ	आ	आ→ऊआ	आ
	ए	इ→ईइ	**इ**	इ→ऊइ	इ
		ए→ईए	ए	ए→ऊए	ए

चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू - ऊ
	ण→आण	ण→ईण	ण	ण→ऊण	ण
	णं→आणं	णं→ईणं	णं	णं→ऊणं	णं
नपुंसकलिंग	कमल—अ	वारि—इ	—	महु—उ	—
	ण→आण	ण→ईण		ण→ऊण	
	णं→आणं	णं→ईणं		णं→ऊणं	
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	ण	ण→ईण	ण	ण→ऊण	ण
	णं	णं→ईणं	णं	णं→ऊणं	णं

पंचमी एकवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	त्तो→अत्तो	णो	णो→इणो	णो	णो→उणो
	ओ→आओ	त्तो	त्तो→इत्तो	त्तो	त्तो→उत्तो
	उ→आउ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	हि→आहि	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
	हिंतो→आहिंतो	हिंतो→ईहिंतो	हिन्तो	हिन्तो→ऊहिन्तो	हिन्ता
	o→आ				
नपुंसकलिंग	कमल—अ		वारि—इ		महु—उ
	त्तो		णो		णो
	ओ→आओ		त्तो		त्तो
	उ→आउ		ओ→ईओ		ओ→ऊओ
	हि→आहि		उ→ईउ		उ→ऊउ
	हिन्तो→आहिन्तो		हिन्तो→ईहिन्तो		हिन्तो→ऊहिन्तो
	o→आ				
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी - ई	धेणु—उ	बहू ऊ
	अ	अ→ईअ	अ	अ→ऊअ	अ
	इ	आ→ईआ	आ	आ→ऊआ	आ
	ए	इ→ईइ	इ	इ→ऊइ	इ
	त्तो→अत्तो	ए→ईए	ए	ए→ऊए	ए
	ओ	त्तो→इत्तो	त्तो→इत्तो	त्तो→उत्तो	त्तोउ→त्तो
	उ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	हिन्तो	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
		हिन्तो→ईहिन्तो	हिन्तो	हिन्तो→ऊहिन्तो	हिन्तो

पंचमी बहुवचन

पुल्लिंग	**देव**—अ	**हरि**—इ	**गामणी**—ई	**साहु**—उ	**सयंभू**—ऊ
	त्तो	त्तो	त्तो→इत्तो	त्तो	त्तो→उत्तो
	ओ→आओ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	उ→आउ	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
	हि→आहि, एहि	हिन्तो→ईहिन्तो	हिन्तो	हिन्तो→ऊहिन्तो	हिन्तो
	हिन्तो→आहिन्तो, एहिन्तो	सुन्तो→ईसुन्तो	सुन्तो	सुन्तो→ऊसुन्तो	सुन्तो
	सुन्तो→आसुन्तो, एसुन्तो				
नपुंसकलिंग	**कमल**—अ		**वारि**—इ		**महु**—उ
	त्तो		त्तो		त्तो
	ओ→आओ		ओ→ईओ		ओ→ऊओ
	उ आउ		उ→ईउ		उ→ऊउ
	हि→आहि, एहि		हिन्तो→ईहिन्तो		हिन्तो→ऊहिन्तो
	हिन्तो→आहिन्तो, एहिन्तो		सुन्तो→ईसुन्तो		सुन्तो→ऊसुन्तो
	सुन्तो→आसुन्तो, एसुन्तो				
स्त्रीलिंग	**कहा**—आ	**मइ**—इ	**लच्छी**—ई	**धेणु**—उ	**बहू**—ऊ
	त्तो→अत्तो	त्तो	त्तो→इत्तो	त्तो	त्तो→उत्तो
	ओ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	उ	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
	हिन्तो	हिन्तो→ईहिन्तो	हिन्तो	हिन्तो→ऊहिन्तो	हिन्तो
	सुन्तो	सुन्तो→ईसुन्तो	सुन्तो	सुन्तो→ऊसुन्तो	सुन्ता

सप्तमी एकवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	अ→ए	म्मि	म्मि→इम्मि	म्मि	म्मि→उम्मि
	म्मि	म्हि	म्हि→इम्हि	म्हि	म्हि→उम्हि
	म्हि				
नपुंसकलिंग	कमल—अ		वारि—इ		महु—उ
	अ→ए		म्मि		म्मि
	म्मि		म्हि		
	म्हि				
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मइ—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	अ	अ→ईअ	अ	अ→ऊअ	अ
	इ	आ→ईआ	आ	आ→ऊआ	आ
	ए	इ→ईइ	इ	इ→ऊइ	इ
		ए→ईए	ए	ए→ऊए	ए

सप्तमी बहुवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी—ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	सु→एसु	सु→ईसु	सु	सु→ऊसु	सु
	सुं—एसुं	सुं→ईसुं	सुं	सुं→ऊसुं	सुं
नपुंसकलिंग	कमल—अ		वारि—इ		महु—उ
	सु→एसु		सु→ईसु		सु→ऊसु
	सुं→एसुं		सुं→ईसुं		सुं→ऊसुं
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मई—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहु—ऊ
	सु	सु→ईसु	सु	सु→ऊसु	सु
	सुं	सुं→ईसुं	सुं	सुं→ऊसुं	सुं

सम्बोधन एकवचन

पुंल्लिंग	देव — अ	हरि — इ	गामणी — ई	साहु — उ	सयंभू — ऊ
	0	0	0→इ	0	0→उ
	अ→ओ	0→ई		0→ऊ	
	अ→आ				
नपुंसकलिंग	कमल — अ		वारि — इ		महु — उ
	0		0		0
स्त्रीलिंग	कहा — आ	मइ — इ	लच्छी — ई	धेणु — उ	बहू — ऊ
	0	0	0→इ	0	0→उ
	आ→ए	0→ई		0→ऊ	

सम्बोधन बहुवचन

पुल्लिंग	देव—अ	हरि—इ	गामणी ई	साहु—उ	सयंभू—ऊ
	०→आ	०→ई	०	०→उ	०
		अउ	अउ	अउ	अउ
		अओ	अओ	अओ	अओ
		णो	णो→इणो	अवो	अवो
				णो	णो→उणो
नपुंसकलिंग	कमल—अ		वारि—इ		महु—उ
	ईं→आइं		ईं→ईईं		ईं→ऊईं
	इं→आइं		इं→ईइं		इं→ऊइं
	णि→आणि		णि→ईणि		णि→ऊणि
स्त्रीलिंग	कहा—आ	मई—इ	लच्छी—ई	धेणु—उ	बहू—ऊ
	०	०→ई	०	०→ऊ	०
	ओ	ओ→ईओ	ओ	ओ→ऊओ	ओ
	उ	उ→ईउ	उ	उ→ऊउ	उ
			आ		

परिशिष्ट-1

संज्ञा–कोष

प्राकृत रचना सौरभ में प्रयुक्त संज्ञा शब्द

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ. सं.
1.	अंसु	आँसू	नपुं.	134
2.	अच्छि	आँख	नपुं.	134
3.	अट्ठि	हड्डी	नपुं.	134
4.	अरि	शत्रु	पु.	127
5.	अवयस	अपयश	पु.	61
6.	असण	भोजन	नपुं.	69
7.	आउ	आयु	नपुं.	134
8.	आगम	शास्त्र	पु	61
9.	आगिइ	आकार	स्त्री.	134
10.	आणा	आज्ञा	स्त्री.	77
11.	इच्छा	अभिलाषा	स्त्री.	77
12.	इत्थी	स्त्री	स्त्री.	134
13.	उदग	जल	नपुं.	69
14	उप्पत्ति	जन्म	स्त्री.	134
15.	ओहि/अवहि	समय की सीमा	स्त्री.	134
16.	कइ	कवि	पु.	121
17.	कट्ठ	काठ	नपुं.	69
18.	कडच्छु	कर्छी, चमची	स्त्री.	135
19.	कण्डू	खाज	स्त्री.	135
20.	कण्णा	कन्या	स्त्री.	77
21.	कमल	कमल का फूल	नपुं.	71
22.	कमला	लक्ष्मी	स्त्री.	77
23.	कम्म	कर्म	नपुं.	69
24.	कयंत	मृत्यु	पु.	61
25.	कर	हाथ	पु.	61
26.	करह	ऊँट		61
27.	करि	हाथी	पु.	127
28.	करुणा	दया	स्त्री.	77

क्र सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
29.	करेणु	हाथी	पु.	127
30.	कलासया	छोटा घड़ा	स्त्री.	77
31.	कहा	कथा	स्त्री.	77
32.	कुक्कुर	कुत्ता	पु.	61
33.	कूव	कुआ	पु.	61
34.	केसरि	सिंह	पु.	127
35.	खज्जू	खुजली	स्त्री.	135
36.	खलपू	खलियान को साफ करनेवाला	पु.	135
37.	खीर	दूध	नपुं.	69
38.	खेत्त	खेत	नपुं.	69
39.	गइ	गति	स्त्री.	134
40.	गंगा	गंगा	स्त्री.	77
41.	गंथ	पुस्तक	पु.	61
42.	गड्डा	खड्डा	स्त्री.	77
43.	गव्व	गर्व	पु.	61
44.	गाण	गीत	नपुं.	69
45.	गाम	गाँव	पु.	61
46.	गामणी	गाँव का मुखिया	पु.	135
47.	गिरि	पर्वत	पु.	127
48.	गुरु	गुरु	पु.	127
49.	गुहा	गुफा	स्त्री.	77
50.	घय	घी	नपुं.	69
51.	घर	मकान	पु.	61
52.	चंचु	चोंच	स्त्री.	135
53.	चमू	सैन्य	स्त्री.	135
54.	छिक्क	छींक	नपुं.	69
55.	जइ	यति	पु.	127
56.	जउणा	यमुना	स्त्री.	77
57.	जंतु	प्राणी	पु.	121
58.	जंबू	जामुन का पेड़	स्त्री.	135
59.	जरा	बुढ़ापा	स्त्री.	77

क्र सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
60.	**जाइ**	जन्म/जाति	स्त्री.	135
61.	**जाणु**	घुटना	नपुं.	134
62.	**जाया**	स्त्री	स्त्री.	77
63.	**जीवण**	जीवन	नपुं.	69
64.	**जुवइ**	युवती	स्त्री.	135
65.	**जूअ**	जुआ	नपुं.	69
66.	**जोगि**	योगी	पु.	127
67.	**जोव्वण**	यौवन	नपुं.	69
68.	**झुंपडा**	झोंपड़ी	स्त्री.	77
69.	**णई**	नदी	स्त्री.	34
70.	**णयरजण**	नागरिक	नपुं.	69
71.	**णर**	मनुष्य	पु.	61
72.	**णह**	आकाश	नपुं.	69
73.	**णागरी**	नगर में रहनेवाली	स्त्री.	134
74.	**णाण**	ज्ञान	नपुं.	69
75.	**णिद्दा**	नींद	स्त्री.	77
76.	**णारी**	नारी	स्त्री.	134
77	**तणया**	पुत्री	स्त्री.	77
78.	**तण्हा**	तृष्णा	स्त्री.	77
79.	**तणु**	शरीर	स्त्री.	135
80.	**तत्ति**	तृप्ति/सन्तोष	स्त्री.	134
81.	**तरु**	पेड़	पु.	127
82.	**तवस्सि**	साधु/मुनि/तपस्वी	पु.	127
83.	**तिण**	घास	नपुं.	69
84.	**तिसा**	प्यास	स्त्री.	77
85.	**तेउ**	तेज	पु.	127
86.	**थुइ**	स्तुति	स्त्री.	134
87.	**दहि**	दही	नपुं.	134
88.	**दारु**	लकड़ी	नपुं.	134
89.	**दिअर**	देवर	पु.	61
90.	**दिवायर**	सूर्य	पु.	61
91.	**दुक्ख**	दुःख	पु.	61

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ सख्या
92.	दुह	दुःख	पु.	61
93.	धण	धन	नपुं.	69
94.	धणु	धनुष	पु.	127
95.	धत्ती	दाई	स्त्री.	134
96.	धन्न	धान	नपुं.	69
97.	धिई	धैर्य	स्त्री.	134
98.	धूआ	बेटी	स्त्री.	77
99.	धेणु	गाय	स्त्री.	135
100.	नणन्दा	ननद	स्त्री.	77
101.	नरवइ	राजा	पु.	127
102.	नरिंद	राजा		61
103.	निसा	रात्रि	स्त्री.	77
104.	पइ	पति	पु.	127
105.	पइट्ठा	प्रतिष्ठा	स्त्री.	77
106	पड	वस्त्र	पु.	61
107.	पण्णा	प्रज्ञा	स्त्री.	77
108.	पत्त	कागज	नपुं.	69
109.	परमेसर	परमेश्वर	पु.	61
110.	परमेसरी	ऐश्वर्य सम्पन्न स्त्री	स्त्री.	134
111.	परिक्खा	परीक्षा	स्त्री.	77
112.	पसंसा	प्रशंसा	स्त्री.	77
113.	पहु	प्रभु	पु.	127
114.	पाणि	प्राणी	पु.	127
115.	पिआमह	दादा	पु.	61
116.	पिआमही	दादी	स्त्री.	134
117.	पुढवी	पृथ्वी	स्त्री.	134
118.	पुत्त	पुत्र	पु.	61
119	पुत्ती	पुत्री	स्त्री.	134
120.	पुप्फ	फूल	नपुं.	69
121.	पोट्टल	गठरी	नपुं.	69
122.	पोत्त	पोता	पु.	61

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
123.	**फरसु**	कुल्हाड़ी	पु.	127
124.	**बंधु**	भाई	पु.	127
125.	**बप्प**	पिता	पु.	61
126.	**बहिणी**	बहिन	स्त्री.	134
127.	**बहू**	बहू	स्त्री.	135
128.	**बालअ**	बालक	पु.	61
129.	**बिंदु**	बूँद	पु.	127
130.	**बीअ**	बीज	नपुं.	69
131.	**भत्ति**	भक्ति	स्त्री.	134
132.	**भय**	भय	नपुं.	69
133.	**भव**	संसार	पु.	61
134.	**भुक्खा**	भूख	स्त्री.	77
135.	**भोयण**	भोजन	नपुं.	69
136.	**मइ**	मति	स्त्री.	134
137.	**मइरा**	मदीरा	स्त्री.	77
138.	**मंति**	मंत्री	पु.	127
139.	**मच्चु**	मृत्यु	पु.	127
140.	**मज्ज**	मद्य	नपुं.	69
141.	**मण**	चित्त, मन	नपुं.	69
142.	**मणि**	रत्न	स्त्री.	134
143.	**मरण**	मरण	नपुं.	69
144.	**महिला**	स्त्री	स्त्री.	77
145.	**महु**	मधु	नपुं.	134
146.	**माउल**	मामा	पु.	61
147.	**माया**	माता	स्त्री.	77
148.	**मारुअ**	पवन	पु.	61
149.	**मित्त**	मित्र	पु.	61
150.	**मुणि**	मुनि	पु.	127
151.	**मेरु**	पर्वत विशेष	पु.	127
152.	**मेह**	मेघ	पु.	61
153.	**मेहा**	बुद्धि	स्त्री.	77

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
154.	रक्खस	राक्षस	पु.	61
155.	रज्ज	राज्य	नपुं.	69
156.	रज्जु	रस्सी	स्त्री.	135
157.	रत्त	रक्त	नपुं.	69
158.	रत्ति	रात	स्त्री.	134
159.	रयण	रत्न	पु.	61
160.	रवि	सूर्य	पु.	127
161.	रहु	रघु	पु.	127
162.	रहुणन्दण	राम	पु.	61
163.	राय	नरेश, राजा	पु.	61
164.	रिउ	दुश्मन	पु.	127
165.	रिण	कर्ज	नपुं.	69
166.	रिद्धि	वैभव	स्त्री.	134
167.	रिसि	मुनि	पु.	127
168.	रूव	रूप	नपुं.	69
169.	लक्कुड	लकड़ी	नपुं.	69
170.	लच्छी	लक्ष्मी	स्त्री.	134
171.	लद्धि	प्राप्ति	स्त्री.	134
172.	वण	जंगल	नपुं.	69
173.	वत्थ	वस्त्र	नपुं.	69
174.	वत्थु	पदार्थ	नपुं.	69
175.	वय	व्रत	पु.	61
176.	वसण	व्यसन	नपुं.	69
177.	वाउ	वायु	पु.	127
178.	वायस	कौआ	पु.	61
179.	वाया	वाणी	स्त्री.	77
180.	वारि	जल	नपुं.	134
181.	विमाण	विमान	नपुं.	69
182.	विहि	विधि	पु.	127
183.	वेरग्ग	वैराग्य	नपुं.	69
184.	संझा	सायंकाल	स्त्री.	77
185.	सच्च	सत्य	नपुं.	69
186.	सत्ति	बल	स्त्री.	134

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
187.	**सत्तु**	शत्रु	पु	127
188.	**सद्धा**	श्रद्धा	स्त्री.	77
189.	**सप्प**	सांप	पु.	61
190.	**सप्पि**	घी	नपुं.	134
191.	**समणी**	श्रमणी	स्त्री.	134
192.	**सयंभू**	स्वयंभू	पु.	135
193.	**सरिआ**	नदी	स्त्री.	77
194.	**सलिल**	पानी	पु.	61
195.	**ससा**	बहिन	स्त्री	77
196.	**ससि**	चंद्रमा	पु.	127
197.	**ससुर**	ससुर	पु.	61
198.	**सस्सू**	सास	स्त्री.	135
199.	**साडी**	साड़ी/वस्त्र/कपड़ा	स्त्री.	134
200.	**सामि**	मालिक	पु.	121
201.	**सामिणी**	मालिकिन	स्त्री.	134
202.	**सायर**	समुद्र	पु.	61
203.	**सालि**	चावल	नपुं.	134
204.	**सासण**	शासन	नपुं.	69
205.	**साहु**	साधु	पु	121
206.	**सिक्खा**	शिक्षा	स्त्री	77
207.	**सिर**	मस्तक	नपुं.	69
208.	**सिसु**	बालक/पुत्र	पु.	127
209.	**सीया**	सीता	स्त्री.	77
210.	**सील**	सदाचार	नपुं.	69
211.	**सीह**	सिंह	पु.	61
212.	**सुत्त**	धागा	नपुं.	69
213.	**सुया**	पुत्री	स्त्री	77
214.	**सुह**	सुख	नपुं	69
215.	**सूणु**	पुत्र	पु.	127
216.	**सेउ**	पुल	पु.	127
217.	**सेणावइ**	सेनापति	पु	127
218.	**सोक्ख**	सुख	नपुं.	69

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृष्ठ संख्या
219.	सोहा	शोभा	स्त्री.	77
220.	हणु	ठोढी	स्त्री.	135
221.	हणुवन्त	हनुमान	पु.	61
222.	हत्थि	हाथी	पु.	127
223.	हरि	हरि	पु.	121
224.	हुअवह	अग्नि	पु.	61

पुल्लिग संज्ञा शब्द

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
1.	अरि	शत्रु	127
2.	अवयस	अपयश	61
3.	आगम	शास्त्र	61
4.	कइ	कवि	121
5.	कयंत	मृत्यु	61
6.	कर	हाथ	61
7.	करह	ऊँट	61
8.	करि	हाथी	127
9.	करेणु	हाथी	127
10.	कुक्कुर	कुत्ता	61
11.	कूव	कुआ	61
12.	केसरि	सिंह	127
13.	खलपू	खलियान का साफ करनेवाला	135
14.	गंथ	पुस्तक	61
15.	गव्व	गर्व	61
16.	गाम	गांव	61
17.	गामणी	गांव का मुखिया	135
18.	गिरि	पर्वत	127
19.	गुरु	गुरु	127
20.	घर	मकान	61
21.	जइ	पति	127
22.	जंतु	प्राणी	121
23.	जोगि	योगी	127
24.	णर	मनुष्य	61
25.	तरु	पेड़	127
26.	तवस्सि	साधु/मुनि/तपस्वी	127
27.	तेउ	तेज	127
28.	दिअर	देवर	61
29.	दिवायर	सूर्य	61
30.	दुक्ख	दुःख	61

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
31.	दुह	दुःख	61
32.	धणु	धनुष	127
33.	नरवइ	राजा	127
34.	नरिंद	राजा	61
35.	पइ	पति	127
36.	पड	वस्त्र	61
37.	परमेसर	परमेश्वर	61
38.	पहु	प्रभु	127
39.	पाणि	प्राणी	127
40.	पिअामह	दादा	61
41.	पुत्त	पुत्र	61
42.	पोत्त	पोता	61
43.	फरसु	कुल्हाड़ी	127
44.	बंधु	भाई	127
45.	बप्प	पिता	61
46.	बालअ	बालक	61
47.	बिंदु	बूंद	127
48.	भव	संसार	61
49.	मंति	मन्त्री	127
50.	मच्चु	मृत्यु	127
51.	माउल	मामा	61
52.	मारुअ	पवन	61
53.	मित्त	मित्र	61
54.	मुणि	मुनि	127
55.	मेरु	पर्वत विशेष	127
56.	मेह	मेघ	61
57.	रक्खस	राक्षस	61
58.	रयण	रत्न	61
59.	रवि	सूर्य	127
60.	रहु	रघु	127
61.	रहुणन्दण	राम	61
62.	राय	नरेश; राजा	61

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
63.	रिउ	दुश्मन	127
64.	रिसि	मुनि	127
65.	वय	व्रत	61
66.	वाउ	वायु	127
67.	वायस	कौआ	61
68.	विहि	विधि	127
69.	सत्तु	शत्रु	127
70.	सप्प	साँप	61
71.	सयंभू	स्वयंभू	135
72.	सलिल	पानी	61
73.	ससि	चन्द्रमा	127
74.	ससुर	ससुर	61
75.	सामि	मालिक	121
76.	सायर	समुद्र	61
77.	साहु	साधु	121
78.	सिसु	बालक/पुत्र	127
79.	सीह	सिंह	61
80.	सूणु	पुत्र	127
81.	सेउ	पुल	127
82.	सेणावइ	सेनापति	127
83.	हणुवन्त	हनुमान	61
84.	हत्थि	हाथी	127
85.	हरि	हरि	121
86.	हुअवह	अग्नि	61

नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
1.	अंसु	आँसू	134
2.	अच्छि	आँख	134
3.	अट्ठि	हड्डी	134
4.	असण	भोजन	69
5.	आउ	आयु	134
6.	उदग	जल	69
7.	कट्ठ	काठ	69
8.	कमल	कमल का फूल	71
9.	कम्म	कर्म	69
10.	खीर	दूध	69
11.	खेत्त	खेत	69
12.	गाण	गीत	69
13.	घय	घी	69
14.	छिक्क	छींक	69
15.	जाणु	घुटना	134
16.	जीवण	जीवन	69
17.	जूअ	जुआ	69
18.	जोव्वण	यौवन	69
19.	णयरजण	नागरिक	69
20.	णह	आकाश	69
21.	णाण	ज्ञान	69
22.	तिण	घास	69
23.	दहि	दही	134
24.	दारु	लकड़ी	134
25.	धण	धन	69
26.	धण्ण	धान	69
27.	पत्त	कागज	69
28.	पुप्फ	फूल	69
29.	पोट्टल	गठरी	69
30.	बीअ	बीज	69

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
31.	भय	भय	69
32.	भोयण	भोजन	69
33.	मज्ज	मद्य	69
34.	मण	चित्त, मन	69
35.	मरण	मरण	69
36.	महु	मधु	134
37.	रज्ज	राज्य	69
38.	रत्त	रक्त	69
39.	रिण	कर्ज	69
40.	रूव	रूप	69
41.	लक्कुड	लकड़ी	69
42.	वण	जंगल	69
43.	वत्थ	वस्त्र	69
44.	वत्थु	पदार्थ	134
45.	वसण	व्यसन	69
46.	वारि	जल	134
47.	विमाण	विमान	69
48.	वेरग्ग	वैराग्य	69
49.	सच्च	सत्य	69
50.	सप्पि	घी	134
51.	सालि	चावल	134
52.	सासण	शासन	69
53.	सिर	मस्तक	69
54.	सील	सदाचार	69
55.	सुत्त	धागा	69
56.	सुह	सुख	69
57.	सोक्ख	सुख	69

स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

क्र सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
1.	आगिइ	आकार	134
2.	आणा	आज्ञा	77
3.	इच्छा	अभिलाषा	77
4.	इत्थी	स्त्री	134
5.	उप्पत्ति	जन्म	134
6.	ओहि/अवहि	समय की सीमा	134
7.	कडच्छु	कर्छी, चमची	135
8.	कण्डू	खाज	135
9.	कण्णा	कन्या	77
10.	कमला	लक्ष्मी	77
11.	करुणा	दया	77
12.	कलसिया	छोटा घड़ा	77
13.	कहा	कथा	77
14.	खज्ज	खुजली	135
15.	गइ	गति	134
16.	गंगा	गंगा	77
17.	गड्डा	खड्डा	77
18.	गुहा	गुफा	77
19.	चंचु	चोंच	135
20.	चमू	सैन्य	135
21.	जउणा	यमुना	77
22.	जंबू	जामुन का पेड़	135
23.	जरा	बुढापा	77
24.	जाइ	जन्म/जाति	135
25.	जाया	स्त्री	77
26.	जुवइ	युवती	135
27.	झुंपडा	झोंपड़ी	77
28.	णई	नदी	134
29.	णागरी	नगर में रहनेवाली	134
30.	णिद्दा	नींद	77

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
31.	णारी	नारी	134
32.	तणया	पुत्री	77
33.	तण्हा	तृष्णा	77
34.	तणु	शरीर	135
35.	तत्ति	तृप्ति/सन्तोष	134
36.	तिस्सा	प्यास	77
37.	थुइ	स्तुति	134
38.	धत्ती	दाई	134
39.	धिई	धैर्य	134
40.	धूआ	बेटी	77
41.	धेणु	गाय	135
42.	णणन्दा	ननद	77
43.	निसा	रात्रि	77
44.	पइट्ठा	प्रतिष्ठा	77
45.	पण्णा	प्रज्ञा	77
46.	परमेसरी	ऐश्वर्य-सम्पन्न स्त्री	134
47.	परिक्खा	परीक्षा	77
48.	पसंसा	प्रशंसा	77
49.	पिआमही	दादी	134
50.	पुढवी	पृथ्वी	134
51.	पुत्ती	पुत्री	134
52.	बहिणी	बहिन	134
53.	बहू	बहू	135
54.	भत्ति	भक्ति	134
55.	भुक्खा	भूख	77
56.	मइ	मति	134
57.	मइरा	मदिरा	77
58.	मणि	रत्न	134
59.	महिला	स्त्री	77
60.	माया	माता	77
61.	मेहा	बुद्धि	77
62.	रज्जु	रस्सी	135

क्र.सं.	शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या
63.	रत्ति	रात	134
64.	रिद्धि	वैभव	134
65.	लच्छि	लक्ष्मी	134
66.	लद्धि	प्राप्ति	134
67.	वाया	वाणी	77
68.	संझा	सायंकाल	77
69.	सत्ति	बल	134
70.	सद्धा	श्रद्धा	77
71.	समणी	श्रमणी	134
72.	सरिआ	नदी	77
73.	ससा	बहिन	77
74.	सस्सू	सास	135
75.	साडी	साड़ी/वस्त्र/कपड़ा	144
76.	सामिणी	मालिकिन	134
77.	सिक्खा	शिक्षा	77
78.	सीया	सीता	77
79.	सुया	पुत्री	77
80.	सोहा	शोभा	77
81.	हणु	ठोढी	135

परिशिष्ट 2

क्रिया-कोश

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृष्ठ संख्या
1	अच्च	पूजा करना	सक	119
2.	अच्छ	बैठना	अक	53
3.	अस	खाना	सक	128
4.	आगच्छ	आना	सक	136
5.	इच्छ	इच्छा करना	सक	128
6.	उग	उगना	अक	62
7.	उग्घाड	खोलना, प्रकट करना	सक	119
8.	उच्छल	उछलना	अक	53
9.	उच्छह	उत्साहित होना	अक	70
10.	उज्जम	प्रयास करना	अक	53
11.	उट्ठ	उठना	अक	53
12.	उड्ड	उड़ना	अक	62
13.	उपज्ज	पैदा होना	अक	62
14.	उप्पाड	उपाड़ना, उन्मूलन करना	सक	119
15.	उल्लस	खुश होना	अक	53
16.	उवयर	उपकार करना	सक	119
17.	उवरम	विरत होना	अक	77
18.	उवविस	बैठना	अक	78
19.	उवसम	शान्त होना	अक	78
20.	उस्सस	सांस लेना	अक	78
21.	ओणंद	अभिनन्दन करना	सक	128
22.	कंद	रोना	अक	62
23.	कंप	काँपना	अक	53
24.	कट्ट	काटना	सक	119
25.	कर	करना	सक	128
26.	कलंक	कलंकित करना	सक	119
27.	कलह	कलह/झगड़ा करना	अक	53
28.	कह	कहना	सक	128

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
29.	किलिस	दुःखी होना	अक	78
30.	कीण	खरीदना	सक	136
31.	कील	कीलना	अक	70
32.	कुट्ट	कूटना	सक	119
33.	कुद्द	कूदना	अक	69
34.	कुल्ल	कूदना	अक	53
35.	कोक्क	बुलाना	सक	119
36.	खंज	लंगडाना	अक	78
37.	खंड	टुकड़ा करना	सक	136
38.	खण	खोदना	सक	119
39.	खम	क्षमा करना	सक	136
40.	खय	नष्ट होना	अक	61
41	खा	खाना	सक	113, 128
42.	खास	खाँसना	अक	78
43.	खिस	निन्दा करना	सक	136
44.	खिज्ज	अफसोस करना	अक	70
45.	खिव	फैंकना	सक	136
46	खिस	खिसकना	अक	78
47.	खेड्ड	क्रीड़ा करना	अक	78
48.	खेल	खेलना	अक	53
49.	गच्छ	जाना	सक	136
50.	गज्ज	गरजना	अक	62
51.	गडयड	गिड़गिड़ाना	अक	77
52.	गण	गिनना	सक	136
53.	गरह	निन्दा करना	सक	119
54.	गल	गलना	अक	61
55.	गवेस	खोज करना	सक	119
56.	गा	गाना	सक	128
57.	गाअ	गाना	सक	136
58.	गिज्झ	आसक्त होना	अक	78
59.	गुंज	गूंजना	अक	69
60.	गुंथ	गूँथना/गठना	सक	136

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ. सं.
61.	घुम	भटकना	अक	53
62.	चक्ख	चखना	सक	119, 136
63.	चर	चरना	सक	113
64.	चव	बोलना	सक	128
65.	चिंत	चिंता करना	सक	128
66.	चिट्ठ	बैठना	अक	62
67.	चिण	इकट्ठा करना	सक	119
68.	चिराव	देर करना	अक	70
69.	चुअ	टपकना	अक	69
70.	चुअ	त्याग करना	सक	128, 136
71.	चुक्क	भूल करना	अक	70
72.	चूर	टुकड़ा-टुकड़ा करना	सक	128
73.	चेट्ट	प्रयत्न करना	अक	69
74.	चोप्पड	स्निग्ध करना	सक	119
75.	चोराव	चुराना	सक	128
76.	छज्ज	शोभना	अक	77
77.	छड्ड	छोड़ना	सक	119
78.	छल	ठगना	सक	119
79.	छुट्ट	छूटना	अक	70
80.	छुब्भ	क्षुब्ध होना/ब्याकुल होना	अक	77
81.	छुव	स्पर्श करना	सक	119
82.	छोड	छोड़ना	सक	119
83.	छोल्ल	छीलना	सक	119
84.	जंभा	जंभाई लेना	अक	78
85.	जग्ग	जागना	अक	1
86.	जण	उत्पन्न करना	सक	128
87.	जम्म	जन्म लेना	अक	69
88.	जर	बूढ़ा होना	अक	62
89.	जल	जलना	अक	61
90.	जागर	जागना	अक	70
91.	जाण	जानना	सक	113
92.	जिघ	सूंघना	सक	136

क्र.स.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ. सं.
93.	जिम	जीमना	सक	119
94.	जीव	जीना	अक	1
95.	जुज्झ	लड़ना	अक	53
96.	जेम	जीमना	सक	128
97.	जोअ	प्रकाशित करना	सक	136
98.	जोह	लड़ना	अक	78
99.	झा	ध्यान करना	सक	136
100	ठा	ठहरना	अक	5
101.	डंस	डसना	सक	128
102	डर	डरना	अक	53
103.	डुल	डोलना, हिलना	अक	61
104.	ढक्क	ढकना	सक	119
105	णच्च	नाचना	अक	1
106	णम	नमस्कार करना	सक	128
107.	णस्स	नष्ट होना	अक	62
108.	णिज्झर	झरना	अक	61
109.	णिरक्ख	देखना	सक	136
110.	णिसुण	सुनना	सक	128
111.	ण्हा	नहाना	अक	5
112.	तडफड	छटपटाना	अक	53
113.	तव	तपना	अक	70
114.	तुट्ट	टूटना	अक	62
115.	थक्क	थकना	अक	53
116.	थुण	स्तुति करना	सक	128
117.	दह	जलाना	सक	136
118.	दा	देना	सक	128
119	दुक्ख	दुखना	अक	61
120.	देक्ख	देखना	सक	119
121.	धार	धारण करना	सक	128
122.	धाव	दौड़ना	सक	136
123.	धिक्कार	धिक्कारना	सक	136
124.	धोअ	धोना	सक	119

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ. सं.
125.	पड	पड़ना, गिरना	अक	153
126.	पढ	पढ़ना	सक	127
127.	पणम	प्रणाम करना	सक	113
128.	पला	भाग जाना	अक	62
129.	पसर	फैलना	अक	61
130.	पाल	पालना	सक	113
131.	पाव	पाना	सक	136
132.	पिअ, पिब	पीना	सक	128
133.	पीड	पीड़ा देना	सक	128
134.	पीस	पीसना	सक	119
135.	पुक्कर	पुकारना	सक	119
136.	पेच्छ	देखना	सक	128
137.	पेस	भेजना	सक	128
138.	फाड	फाड़ना	सक	119
139.	फुर	प्रकट होना	अक	70
140.	फुल्ल	खिलना	अक	69
141.	बंध	बांधना	सक	128
142.	बुक्क	भोंकना	अक	62
143.	बुज्झ	समझना	सक	136
144.	बोल्ल	बोलना	सक	127
145.	भण	कहना	सक	127
146.	मइल	मैला करना	सक	128
147.	मग्ग	माँगना	सक	128
148.	मर	मरना	अक	53
149.	माण	सम्मान करना	सक	136
150.	मार	मारना	सक	128
151.	मुच्छ	मूच्छित होना	अक	53
152.	मुण	जानना	सक	128, 136
153.	या	जाना	सक	136
154.	रंग	रंगना	सक	127
155.	रक्ख	रक्षा करना	सक	113
156.	रक्ख	रक्षण करना/पालन करना	सक	136

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ. सं.
157.	रम	रमना	अक	70
158.	रय	बनाना	सक	136
159.	रुव	रोना	अक	53
160.	रूस	रूसना	अक	1
161.	रोक्क	रोकना	सक	119
162.	लज्ज	शरमाना	अक	53
163.	लभ	प्राप्त करना	सक	136
164.	लिह	लिखना	सक	128
165.	लिह	चाटना	सक	136
166.	लुक्क	छिपना	अक	1
167.	लुढ	लुढकना	अक	61
168.	ले	लेना/ग्रहण करना	सक	128
169.	लोट्ट	सोना, लोटना	अक	69
170.	वद	प्रणाम करना	सक	136
171.	वक्खाण	व्याख्यान करना	सक	127
172.	वच्च	जाना	सक	136
173.	वड्ढ	बढ़ना	अक	69
174.	वण्ण	वर्णन करना	सक	128
175.	वद्धाव	बधाई देना	सक	128
176.	वल	मुड़ना	अक	62
177.	वस	बसना	अक	70
178.	वह	धारण करना	सक	128
179.	विअस	खिलना	अक	70
180.	विज्ज	उपस्थित होना	अक	70
181.	विण्णा	जानना	सक	128
182.	सय	सोना	अक	1
183.	सिच	सींचना	सक	128
184.	सिक्ख	सीखना	अक	136
185.	सिज्झ	सिद्ध होना	अक	69
186.	सुक्ख	सूखना	अक	61
187.	सुण	सुनना	सक	113
188.	सुमर	स्मरण करना	सक	127

क्र सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ सं.
189.	सेव	सेवा करना	सक	128
190.	सोह	शोभना	अक	61
191.	हण	मारना	सक	128
192.	हरिस	प्रसन्न होना	अक	62
193.	हव	होना	अक	70
194.	हस	हँसना	अक	1
195.	हो	होना	अक	61
196.	हु	होना	अक	61
197.	हिंस	हिंसा करना	सक	128

सकर्मक क्रियाएँ

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
1.	अच्च	पूजा करना	119
2.	अस	खाना	128
3.	आगच्छ	आना	136
4.	इच्छ	इच्छा करना	128
5.	उग्घाड	खोलना, प्रकट करना	119
6.	उप्पाड	उपाड़ना, उन्मूलन करना	119
7.	उवयर	उपकार करना	119
8.	अोणद	अभिनन्दन करना	128
9.	कट्ट	काटना	119
10.	कर	करना	128
11.	कलंक	कलंकित करना	119
12.	कह	कहना	128
13.	कीण	खरीदना	136
14.	कुट्ट	कूटना	119
15.	कोक्क	बुलाना	119
16.	खंड	टुकड़ा करना	136
17.	खण	खोदना	119
18.	खम	क्षमा करना	136
19.	खा	खाना	113, 128
20.	खिस	निन्दा करना	136
21.	खिव	फैंकना	136
22.	गच्छ	जाना	136
23.	गण	गिनना	136
24.	गरह	निन्दा करना	119
25.	गवेस	खोज करना	119
26.	गा	गाना	128
27.	गाअ	गाना	136
28.	गुंथ	गूंथना/गठना	136
29.	चक्ख	चखना	119, 136
30.	चर	चरना	113

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
31.	चव	बोलना	128
32.	चिंत	चिंता करना	128
33.	चिण	इकट्ठा करना	119
34.	चुअ	त्याग करना	128, 136
35.	चूर	टुकड़ा-टुकड़ा करना	128
36.	चोप्पड	स्निग्ध करना	119
37.	चोराव	चुराना	128
38.	छड्ड	छोड़ना	119
39.	छल	ठगना	119
40.	छुव	स्पर्श करना	119
41.	छोड	छोड़ना	119
42.	छोल्ल	छीलना	119
43.	जण	उत्पन्न करना	128
44.	जाण	जानना	113
45.	जिघ	सूँघना	136
46.	जिम	जीमना	119
47.	जेम	जीमना	128
48.	जोअ	प्रकाशित करना	136
49.	झा	ध्यान करना	136
50.	डंस	डसना	128
51.	ढक्क	ढकना	119
52.	णम	नमस्कार करना	128
53.	णिरक्ख	देखना	136
54.	णिसुण	सुनना	128
55.	थुण	स्तुति करना	128
56.	दह	जलाना	136
57.	दा	देना	128
58.	देक्ख	देखना	119
59.	धार	धारण करना	128
60.	धाव	दौड़ना	136
61.	धिक्कार	धिक्कारना	136
62.	धोअ	धोना	119

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
63.	पढ	पढ़ना	127
64.	पणम	प्रणाम करना	113
65.	पाल	पालना	113
66.	पाव	पाना	136
67.	पिअ, पिब	पीना	128
68.	पीड	पीड़ा देना	128
69.	पीस	पीसना	119
70.	पुक्कर	पुकारना	119
71.	पेच्छ	देखना	128
72.	पेस	भेजना	128
73.	फाड	फाड़ना	119
74.	बंध	बांधना	128
75.	बुज्झ	समझना	136
76.	बोल्ल	बोलना	127
77.	भण	कहना	127
78.	मइल	मैला करना	128
79.	मग्ग	माँगना	128
80.	माण	सम्मान करना	136
81.	मार	मारना	128
82.	मुण	जानना	128, 136
83.	या	जाना	136
84.	रंग	रंगना	127
85.	रक्ख	रक्षा करना	113
86.	रक्ख	रक्षण करना/पालन करना	136
87.	रय	बनाना	136
88.	रोक्क	रोकना	119
89.	लभ	प्राप्त करना	136
90.	लिह	लिखना	128
91.	लिह	चाटना	136
92.	ले	लेना/ग्रहण करना	128
93.	वंद	प्रणाम करना	136
94.	वक्खाण	व्याख्यान करना	127

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
95.	वच्च	जाना	136
96.	वण्ण	वर्णन करना	128
97.	वद्धाव	बधाई देना	128
98.	वह	धारण करना	128
99.	विण्णा	जानना	128
100.	सिंच	सींचना	128
101.	सिक्ख	सीखना	136
102.	सुण	सुनना	113
103.	सुमर	स्मरण करना	127
104.	सेव	सेवा करना	128
105.	हण	मारना	128
106.	हिंस	हिंसा करना	128

अकर्मक क्रियाएँ

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृ.सं.
1.	अच्छ	बैठना	53
2.	उग	उगना	62
3.	उच्छल	उछलना	53
4.	उच्छह	उत्साहित होना	70
5.	उज्जम	प्रयास करना	53
6.	उट्ठ	उठना	53
7.	उड्ड	उड़ना	62
8.	उपज्ज	पैदा होना	62
9.	उल्लस	खुश होना	53
10.	उवरम	विरत होना	53
11.	उवविस	बैठना	78
12.	उवसम	शान्त होना	78
13.	उस्सस	सांस लेना	78
14.	कंद	रोना	62
15.	कंप	कांपना	53
16.	कलह	कलह/झगड़ा करना	53
17.	किलिस	दुःखी होना	78
18.	कील	कीलना	70
19.	कुद्द	कूदना	69
20.	कुल्ल	कूदना	53
21.	खंज	लंगड़ाना	78
22.	खय	नष्ट होना	61
23.	खास	खाँसना	78
24.	खिज्ज	अफसोस करना	70
25.	खिस	खिसकना	78
26.	खेड्ड	क्रीड़ा करना	78
27.	खेल	खेलना	53
28.	गज्ज	गरजना	62
29.	गडयड	गिड़गिड़ाना	77
30.	गल	गलना	61

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
31.	गिज्झ	आसक्त होना	78
32.	गुंज	गूंजना	69
33.	घुम	भटकना	53
34.	चिट्ठ	बैठना	62
35.	चिराव	देर करना	70
36.	चुअ	टपकना	69
37.	चुक्क	भूल करना	70
38.	चेट्ठ	प्रयत्न करना	69
39.	छज्ज	शोभना	77
40.	छुट्ट	छूटना	70
41.	छुब्भ	क्षुब्ध होना/व्याकुल होना	77
42.	जंभा	जंभाई लेना	78
43.	जग्ग	जागना	1
44.	जम्म	जन्म लेना	69
45.	जर	बूढ़ा होना	62
46.	जल	जलना	61
47.	जागर	जागना	70
48.	जीव	जीना	1
49.	जुज्झ	लड़ना	53
50.	जोह	लड़ना	78
51.	ठा	ठहरना	5
52.	डर	डरना	53
53.	डुल	डोलना, हिलना	61
54.	णच्च	नाचना	1
55.	णस्स	नष्ट होना	62
56.	णिज्झर	झरना	61
57.	ण्हा	नहाना	5
58.	तडफड	छटपटाना	53
59.	तव	तपना	70
60.	तुट्ट	टूटना	62
61.	थक्क	थकना	53
62.	दुक्ख	दुखना	61

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	पृष्ठ संख्या
63.	पड	पड़ना, गिरना	53
64.	पला	भाग जाना	62
65.	पसर	फैलना	61
66.	फुर	प्रकट होना	70
67.	फुल्ल	खिलना	69
68.	बुक्क	भोंकना	62
69.	मर	मरना	53
70.	मुच्छ	मूच्छित होना	53
71.	रम	रमना	70
72.	रुव	रोना	53
73.	रूस	रूसना	1
74.	लज्ज	शरमाना	53
75.	लुक्क	छिपना	1
76.	लुढ	लुढकना	61
77.	लोट्ट	सोना, लोटना	69
78.	वड्ढ	बढ़ना	69
79.	वल	मुड़ना	62
80.	वस	बसना	70
81.	विग्रस	खिलना	70
82.	विज्ज	उपस्थित होना	70
83.	सय	सोना	1
84.	सिज्झ	सिद्ध होना	69
85.	सुक्ख	सूखना	61
86.	सोह	शोभना	61
87.	हरिस	प्रसन्न होना	62
88.	हव	होना	70
89.	हस	हँसना	1
90.	हु	होना	61
91.	हो	होना	61

शुद्धि-पत्र

क्र. सं.	पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1.	32	5	तें/ताओ/ताउ	ता/ताओ/ताउ
2.	23 से 49	(पादटिप्पण)	घाटे	घाटगे
3.	37	3	'सि'	'स्सि'
4.	38	18	'सि'	'स्सि'
5.	41	4	इनको जोड़ने के पश्चात्	'हि' 'स्स' जोड़ने के पश्चात्
6.	41	6	हि, स्स, सिस	हि, स्स
7.	41	6	'दि'	'ति'
8.	41	7	सन्दर्भ नहीं दिया	प्राकृत मार्गोपदेशिका दोशी, पृ. 250
9.	44	20	सि	स्सि
10.	46	13	लुक्किहिइत्था	लुक्किहित्था
11.	54	7	धक्कधि	थक्कधि
12.	54	15	तुहुं	तुह
13.	60	12	ओकारान्त	ओकारान्त
14.	61	13	कयंत	कियंत
15.	91	24	विअसताइं	विअसंताइं
16.	110		ससाअ/ससाइ/ससाए	ससाहि/ससाहि/ससाहिँ
17.	130	20 से 24	कइउ/कइओ	कअउ/कअओ
18.	132	5	कइउ/कइओ	कअउ/कअओ
19.	140	21	रक्खणीयो	रक्खणीया
20.	224	29	लिंग नहीं दिया	पु.

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1. हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1–2 : व्याख्याता-श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर–दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर)।

2. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण : डॉ. आर. पिशल (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना)।

3. अभिनव प्राकृत व्याकरण : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री (तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)।

4 प्राकृत मार्गोपदेशिका : पं. बेचरदास जीवराज दोशी (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)।

5. प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी : डॉ. कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)

6. पाइअ-सद्द-महण्णवो : पं. हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी)

7. अपभ्रंश-हिन्दी कोश, भाग 1–2 : डॉ. नरेशकुमार (इण्डो-विजन प्रा. लि., II A, 220, नेहरु नगर, गाजियाबाद)

8. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण सूत्र-विवेचन (जैनविद्या–9, मुनि योगीन्दु विशेषांक) : डॉ. कमलचन्द सोगाणी (जैनविद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, राजस्थान)

9. Apabhramsa of Hemacandra : Dr. Kantilal Baldevram Vyas (Prakrit Text Society, Ahmedabad)

10. Introduction to Ardha-Magadhi : A M. Ghatage (School and college Book stall, Kolhapur)